राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक-पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

२ . . .

ग्रन्थाङ्क २७

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

राजस्थानी साहित्य-संग्रह,

भाग १

खीची गंगेव नींबावतरो दो-पहरो, राजान राउतरो वात-बणाव आदि

. . .

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JAIPUR

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित
कुछ विशिष्ट ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य ग्रन्थ—

१. प्रमाणमञ्जरी—तार्किकचूडामणि-सर्वदेवाचार्य प्रणीत। तीन व्याख्याओं से समलङ्कृत।	मूल्य	६.००
२. यन्त्रराजरचना—जयपुरनरेश महाराज सवाई जयसिंह कारिता।	,,	१.७५
३. महर्षिकुलवैभवम्—विद्यावाचस्पति स्व श्रीमधुसूदन ओझा विरचित।	,,	१०.७५
४. तर्कसंग्रह फक्किका—पं० क्षमाकल्याणकृत।	,,	३.००
५. कारकसंबन्धोद्योत—पं० रभसनन्दिकृत।	,,	१.७५
६. वृत्तिदीपिका—पं० मौनिकृष्णभट्टकृत।	,,	२.००
७. शब्दरत्नप्रदीप—संक्षिप्त संस्कृत शब्दकोश।	,,	२.००
८ कृष्णगीति—कविसोमनाथ-कृत गीतिकाव्य।	,,	१.७५
९ शृङ्गारहारावलि—हर्षकवि विरचित।	,,	२.७५
१० चक्रपाणिविजयमहाकाव्यम्—पं० लक्ष्मीधरभट्ट-रचित।	,,	३.५०
११. राजविनोद महाकाव्य—कवि उदयराजविरचित।	,,	२.२५
१२. नृत्तसंग्रह—नाट्यविषयक पठनीय ग्रन्थ।	,,	१.७५
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)—महाराणा कुम्भकर्ण प्रणीत।	,,	३.७५
१४. उक्तिरत्नाकर—पण्डित साधुसुन्दरगणीकृत।	,,	४.७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि—महामहोपाध्याय प दुर्गाप्रसाद द्विवेदी रचित।	,,	४.२५
१६ कर्णकुतूहलं तथा कृष्णलीलामृत—महाकवि भोलानाथ विरचित।	,,	१.५०

राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ—

१. कान्हडदे प्रबन्ध—कवि पद्मनाभ विरचित	मूल्य	१२.२५
२ क्यामखां रासा—मुस्लिम-कवि जानकृत।	,,	४.७५
३. लावारासा—चारणकविया गोपालदानकृत।	,,	३.७५
४. बांकीदासरी ख्यात—चारणकवि बांकीदासरचित।	,,	५.५०
५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह भाग १. वार्ता संग्रह	,,	२.२५

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग १

खीची गंगेव नींबावतरो दो-पहरो, राजान राउतरो वात-वणाव आदि



सम्पादन-कर्ता

पं० नरोत्तमदासजी स्वामी एम ए

अध्यक्ष

हिन्दी विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर



प्रकाशन कर्ता

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)



[प्रथमावृत्ति, प्रति सं० ७५०]

विक्रमाब्द २०१४ } शकाब्द १८७९ }   मूल्य २.७५   { ख्रिस्ताब्द १९५७

मुद्रक—मूल भाग-हनुमान प्रेस, जयपुर। भूमिका वगैरह आदि—जयपुर प्रिंटर्स जयपुर।

प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

प्राचीन भारतीय साहित्य में पद्य के साथ गद्य का भी यथोचित रूप में प्रयोग किया गया है। वेदों, जैनागमों, संस्कृत नाटकों और कथा-ग्रन्थों आदि में गद्य की छटा विशेष द्रष्टव्य है। संस्कृत-साहित्य में पंचतंत्र, कथासरित्सागर, दशकुमारचरित्, शुकबहुत्तरी सिंहासनबत्तीसी, वैतालपच्चीसी आदि भी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं। राजस्थानी भाषा में भी गद्य-साहित्य का निर्माण विशेष रूप से हुआ है। हजारों की संख्या में ऐतिहासिक ख्यातें, वार्ताएं और वचनिकाएं आदि लिखी गई हैं, जिनमें मुख्यतः राजस्थानी गद्य का व्यवहार किया गया है। साथ ही संस्कृत के गद्य-ग्रन्थों के अनुवाद भी प्रचुर मात्रा में राजस्थानी भाषा में किये गये हैं।

राजस्थानी वार्ताओं में राजस्थानी संस्कृति का बड़ा ही अनूठा चित्रण किया गया है। इन वार्ताओं में राजस्थानी जनता की दिनचर्या, हाट, उपवन, घर-आङ्गण, उत्सव, युद्ध, क्रीडा आदि का विस्तृत और सजीव वर्णन मिलता है। राजस्थान और बाहर के ग्रन्थ-भण्डारों में राजस्थानी वार्ताओं के छोटे-बड़े कई संग्रह मिलते हैं। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के संग्रहालय में भी ऐसी वार्ताओं के कई हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनको यथासमय शीघ्र ही सुसम्पादित रूप में प्रकाशित किया जावेगा।

प्रस्तुत संग्रह में तीन वर्णनात्मक राजस्थानी वार्ताओं को प्रकाशित किया जा रहा है। इन वार्ताओं में आदर्श राजपूतों की दिनचर्या का विस्तृत वर्णन मिलता है जिससे राजस्थानी संस्कृति के कई अंगों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। वार्ताओं का सम्पादन राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा हुआ है और प्रारम्भ में राजस्थान के प्रसिद्ध अन्वेषक श्री अगरचन्दजी नाहटा के दो निबन्ध भी सम्बन्धित विषय पर प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है।

जयपुर,
ता० १० अगस्त, १९५६ ई०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक,
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर

निवेदन

प्रस्तुत ग्रंथ में प्राचीन राजस्थानी साहित्य की तीन महत्वपूर्ण रचनाओं का संग्रह किया गया है। इनमें प्रथम दो अर्थात् खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो और रामदास वैरावतरी आखड़ीरी बात बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचनायें रही हैं और राजस्थानी कहानी संग्रहों में स्थान स्थान पर उनकी प्रतियां मिलती हैं।

'खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो' एक सुंदर गद्य-काव्य है जिसके काव्यमय वर्णनों की छटा निराली है और सहृदय को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। इसमें खीची-वंशीय नींबा के पुत्र गंगेव या गंगा की और उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वर्णन है। दुपहर का वर्णन प्रधान होने से इसका नाम दोपहरो या बे पहरो है। उत्तर मध्यकालीन राजपूत सामंत के जीवन और रहन सहन पर इससे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

दूसरी रचना में मारवाड़ के राव रिड़मल (रणमल) के पुत्र वैरा के पुत्र रामदास राठौड़ का वर्णन है। रामदास अपने समय में नामी वीर हुआ। इस 'बात' में उसके १६ बिरुदों और ८४ आखड़ियों का उल्लेख किया गया है। अन्त में उसके पराक्रम की एक कथा भी दी गई है। 'आखड़ी' का अभिप्राय 'न करने की मानता' (मनौती) से अथवा शपथ या सौगंद से है। रामदास ने इन चौरासी बातों के न करने की मानता ले रखी थी। इन बिरुदों तथा आखड़ियों से राजपूती जीवन के आदर्श का चित्र सामने आ जाता है।

तीसरी रचना 'राजान राउतरो वात-वणाव' में विविध प्रकार के विविध अवसरोपयोगी वर्णनों का विस्तृत संग्रह है। कथावाचक कहने वाले (और लेखक) कथा कहते समय स्थान स्थान पर इन वर्णनों का उपयोग करते आये हैं। जैनों के प्राचीन आगम ग्रंथों में इस प्रकार के सुन्दर वर्णन आये हैं। मैथिल विद्वान् ज्योतिरीश्वर ने पन्द्रहवीं शताब्दी में वर्ण रत्नाकर नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें कथा के विविध प्रसंगों और अवसरों के वर्णन संगृहीत हैं। संस्कृत के कवि शिक्षा नामक ग्रंथ में भी काव्य के विविध प्रसंगों और विषयों के वर्णन में किन किन बातों का वर्णन करना चाहिए यह बताया गया है। राजस्थानी में वाग्विलास नाम से अनेक संग्रह अथवा कथाकाव्य तैयार हुए जिनमें विविध प्रसंगों और विविध अवसरों के वर्णनों को संकलित किया गया। जिन माणिक्य सूरि का पृथ्वीचन्द्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (संवत् १४७० के लगभग) इस प्रकार का सुन्दर कथा-काव्य है जिसके विविध वर्णन बड़े ही भावपूर्ण हैं। 'वात-वणाव' उसी परंपरा की रचना है। रचना प्राचीन नहीं है, पर वर्णन प्राचीन हैं। ऋतु-वर्णन में महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ की क्रिसन रुकमणीरी वेलि का प्रभाव है, वह वेलि के पद्यों का गद्यानुवाद सा ही जान पड़ता है। 'दोपहरो' के वर्णनों के साथ भी उसका पर्याप्त साम्य है।

इस 'वात वणाव' के वर्णन संग्रह में उपर्युक्त अन्य ग्रंथों के वर्णन-संग्रहों से एक विशेषता है। उन ग्रंथों में जहां वर्णनों का केवल संग्रह-मात्र है वहां वात वणाव में उनको एक अखंड कथा के रूप में ग्रथित कर दिया गया है, जिससे यह केवल वर्णनों का संग्रह न रह कर एक सुंदर कथा काव्य बन गया है।

'दोपहरो' का संपादन बहुत वर्ष पूर्व बीकानेर के अनूप-संस्कृत पुस्तकालय के एक कहानी-संग्रह की प्रति के आधार पर किया गया था। बाद में दूसरी प्रतियां भी देखने में आई और उनमें यत्र-तत्र पाठभेद भी दिखाई पड़े पर उन पाठभेदों को संगृहित करने का अवसर नहीं आया। इसी प्रकार 'बात-बणाव' का संपादन अपने संग्रह की प्रति के आधार पर करना आरम्भ किया था पर यह कार्य दो-ही-चार पृष्ठों तक चल सका। मेरे प्रिय शिष्य दीनानाथ खत्री एम० ए० ने जो उन दिनों अनूप संस्कृत पुस्तकालय में राजस्थानी-असिस्टेंट का कार्य कर रहे थे, उसके बाकी अंश की प्रतिलिपि तैयार कर डाली। जब मुनि श्रीजिनविजयजी महाराज बीकानेर पधारे तो उनने इन रचनाओं को देखा और इनको राजस्थान पुरातत्व-मंदिर-ग्रंथमाला में प्रकाशित करने के लिये मांग लिया। 'वैरावत रामदासरी आखडीरी बात' की प्रतिलिपि श्रीअगरचंद नाहटा ने अपने संग्रहालय की एक हस्तलिखित प्रति से तैयार करवायी थी।

'दोपहरो' और 'आखडी' की प्रतियां कई स्थानों पर मिलती हैं तथा 'बात बणाव' की एक अन्य प्रति भी राजस्थान-पुरातत्व-मंदिर के संग्रह में बाद में निकल आई। अच्छा होता कि इन रचनाओं को प्राप्य प्रतियों के आधार पर संपादित करके पाठ भेदों के साथ प्रकाशित किया जाता। पर यह कार्य समय-सापेक्ष था और उधर पुरातत्व मंदिर का आर्थिक वर्ष समाप्त हो रहा था। इसलिये यही उचित समझा गया कि रचनाएं जिस रूप में हैं उसी रूप में अभी छाप दी जायं जिससे राजस्थानी साहित्य के ये विविध रूप एक बार साहित्य-प्रेमियों के सामने आ जाय।

राजस्थानी गद्यकाव्यों और वर्णन-संग्रहों की परंपरा का संक्षिप्त परिचय कराने के लिये राजस्थान के सुप्रसिद्ध शोधकर्ता विद्वान श्रीअगरचंद नाहटा के दो निबंधों को उद्धृत किया जा रहा है। इनको उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं श्रीनाहटाजी का अत्यंत आभारी हूं।

—नरोत्तमदास स्वामी

राजस्थानी गद्यकाव्य की परम्परा

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में कवि की कृति को काव्य माना गया है और कवि को क्रान्तदर्शी, मेधावी और पंडित कहा गया है। पीछे से 'कवि' शब्द छन्दोबद्ध रचना करने वाले विद्वानों के लिए रूढ़ हो गया और छन्दोबद्ध रचना 'काव्य' के नाम से सम्बोधित की जाने लगी। प्राचीन विद्वानों ने 'काव्य' शब्द की व्याख्या भिन्न भिन्न प्रकार से की है। भामह और रुद्रट ने "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्", "शब्दार्थौ काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ मिल कर काव्य होता है, ऐसा कहा है। किसी विद्वान ने अलंकारयुक्त शब्द और अर्थ को ही काव्य माना है। विश्वनाथ कविराज ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" काव्य का लक्षण बताया है अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। मुझे यह व्याख्या बहुत ही उपयुक्त और सुन्दर लगती है। काव्य के दृश्य और श्रव्य, दो प्रधान भेद हैं। नाटकों को दृश्य काव्य कहा जाता है और श्रव्य काव्य के गद्य, पद्य और मिश्र ये तीन भेद किये गये हैं। पद्यकाव्य छन्दोबद्ध होता है और उसके महाकाव्य, खण्डकाव्य और कोषकाव्य ये तीन भेद माने गये हैं। महाकाव्य और खण्डकाव्य तो प्रसिद्ध ही हैं। कोषकाव्य में स्तोत्र और सुभाषित संग्रह को माना गया है। गद्यकाव्य में छन्द का बन्धन नहीं रहता, अन्य सब काव्य गुण पाये जाते हैं। वामन ने गद्य तीन प्रकार का बताया है—वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक। साहित्य दर्पणकार ने मुक्तक नामक चौथा भेद भी माना है। जिस गद्य में किसी छन्द के पाद के भाग आय मिलते हैं उसे वृत्तगन्धि, लम्बे लम्बे समास वाले गद्य को उत्कलिकाप्राय, छोटे-छोटे समस्तपदयुक्त गद्य को चूर्णक और समस्त पदों के अभाव वाले गद्य को मुक्तक के नाम से सम्बोधित किया गया है।

गद्यकाव्य के कथा और आख्यायिका, दो भेद भी हैं। कादम्बरी को कथा व हर्षचरित्र को आख्यायिका के नाम से सम्बोधित किया गया है। मिश्र काव्य में गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। इसके चम्पू, विरुद और करम्भक ये तीन भेद हैं। वर्णनात्मक मिश्रकाव्य को चम्पू, गद्य और पद्य में की गयी राजस्तुति को विरुद एवं अनेक भाषा युक्त मिश्र काव्य को करम्भक की संज्ञा दी गयी है। गद्य की अपेक्षा पद्य सरलता से कण्ठस्थ हो सकता है और अधिक समय तक स्मरण रह सकता है, अतः इसकी उपयोगिता व स्थायित्व अधिक है। इस सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारतीय विद्वानों ने शब्दकोष, वैद्यक, ज्योतिष आदि विषयों के उपयोगी ग्रन्थ पद्यबद्ध ही अधिक बनाये हैं। पद्य में कल्पना की उड़ान, लयसरसता, मनोहरता व श्रवणसुखदता होने से ग्रन्थकारों का ध्यान उस ओर अधिक जाना स्वाभाविक था। इसी आकर्षण के फलस्वरूप भारतीय साहित्य पद्य रूप में अधिक मिलता है। मुद्रण-युग के प्रसार के साथ-साथ गद्य-साहित्य निरन्तर अभिवृद्धि को प्राप्त हुआ है। पूर्व लोक भाषाओं में गद्य रचनाएं बहुत ही थोड़ी मिलती हैं। हिन्दी भाषा में तो प्राचीन गद्य राजस्थानी और गुजराती भाषा की अपेक्षा भी अल्प है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है रसात्मक काव्यगुणोपेत विशिष्ट शब्दसंचयमय, पर छन्दों के बन्धन से रहित रचना गद्यकाव्य के नाम से अभिहित है। साधारण गद्य को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। गद्य होते हुए भी जिसके पढने और सुनने में पद्य का-सा आनन्द या रस मिले वही गद्यकाव्य है।

भारतीय साहित्य में गद्यकाव्य का विकास पद्यकाव्य के साथ-साथ ही हुआ प्रतीत होता है, अत उसकी प्राचीनता पद्य की अपेक्षा कम नहीं है। वेदों में कहीं-कहीं वाक्य बड़े ही सुन्दर और पद्य का-सा आनन्द देने वाले मिलते हैं। जैनागमों और महाभारत के समय में तो गद्य को व्यवस्थित रूप मिल चुका विदित होता है। भास और कालिदास आदि के नाटकों में गद्यकाव्य की सुन्दर झलक पायी जाती है। प्राकृत भाषा के कई प्राचीन जैनग्रन्थों में कहीं-कहीं गद्य-लेखन में शब्द-योजना की सुन्दर छटा देखते बनती है। ईस्वी पूर्व दूसरी से छठी शताब्दी तक के शिला-लेखों के गद्य में भी काव्य का-सा आनन्द मिलता है, जिसे गद्यकाव्य का पूर्वरूप कहा जा सकता है।

गद्यकाव्य की संज्ञा दी जा सके ऐसे ग्रन्थों में दण्डी कवि का दशकुमारचरित सर्वप्रथम है, जिसका समय ईसा की छठी शताब्दी के लगभग का है। इस चरित की भाषा सरल एव ललित है। इसके पीछे सुबन्धु की वासवदत्ता की कथा आती है। कवि के कथनानुसार उसके प्रति अक्षर में श्लेष है। तत्परवर्ती गद्यकाव्य बाणभट्ट की कादम्बरी और हर्ष चरित्र है। कादम्बरी विश्व-साहित्य में उल्लेखनीय गद्यकाव्य है। इसकी कथा छोटी-सी है, पर वर्णन के विस्तार से वह बहुत विस्तृत हो गयी है अर्थात् उसमें कथा गौण और वर्णन प्रधान है। ऐसा ही अन्य गद्यकाव्य, जिसे इसी के टक्कर का कह सकते हैं, जैन कवि धनपाल की तिलकमजरी की कथा है। धनपाल महाराजा भोज के सभा-पडित थे। पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजयजी ने इस तिलकमजरी के सम्बन्ध में लिखा है—"समस्त संस्कृत साहित्य के अनन्त ग्रन्थ-सग्रह में बाण की कादम्बरी के सिवाय इस कथा की तुलना में खडा हो सके, ऐसा कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। बाण पुरोगामी है, उसकी कादम्बरी की प्रेरणा से ही तिलकमजरी रची गयी है पर यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि धनपाल की प्रतिभा बाण से चढती हुई न हो तो उतरती हुई भी नहीं है, अतः पुरोगामी ज्येष्ठ बन्धु होने पर भी गुण-धर्म की अपेक्षा दोनों गद्य महाकवि समान आसन पर बैठाने के योग्य हैं। धनपाल का जीवन भी बाण के जैसा ही गौरवशाली रहा है। इस कथन में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।" तिलकमजरी के बाद गद्यकाव्य के रूप में दिगम्बर जैन कवि वादीभसिंह का गद्यचिन्तामणि ग्रन्थ उल्लेखनीय है। इसके बाद के लगभग चार सौ वर्षों में कोई उल्लेखनीय गद्यकाव्य नहीं है। वैसे फुटकर वर्णन गद्यकाव्य की झलक अवश्य दिखा जाते हैं। पन्द्रहवीं शती में वामन भट्ट ने 'वेम भूपाल चरित' नामक गद्यकाव्य बनाया। इसका पद-विन्यास, माधुर्य, सरलालकार-योजना, विप्रलभ शृगार बाण के सदृश माने गये हैं। भाषा सरल और मधुर है। कवि ने अपने लिए 'गद्यकवि सार्वभौम' विशेषण प्रयुक्त किया है।

भारतीय गद्यकाव्य की परम्परा का दिग्दर्शन कराने के लिए ऊपर कुछ संस्कृत गद्यकाव्यों का उल्लेख करना आवश्यक समझा गया। अब मूल विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

हिन्दी भाषा में गद्यकाव्य की परम्परा प्राचीन नहीं दिखाई देती। वैसे हिन्दी की गद्य-रचना ही सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पूर्व की नहीं मिलती। गोरखनाथ की कुछ रचनाएं गद्य में लिखी बतायी जाती है। इन रचनाओं की भाषा को तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य की माना गया है, पर उसके लिए कोई सबल आधार नहीं प्रतीत होता, इन रचनाओं का गोरखनाथ की

कृतियाँ होना सम्भव नहीं जान पड़ता। किसी प्रसिद्ध साम्प्रदायिक नेता या मतप्रवर्तक के अनुयायी स्वयं ग्रन्थ बना कर नेता के नाम से या मतप्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध करते रहते हैं। गोरखनाथ के इन ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ अद्यावधि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व की प्राप्त नहीं हैं। उनके अन्य पद्य-ग्रन्थों की प्रतियाँ भी अभी तक सत्रहवीं शताब्दी से पहले की मेरे अवलोकन में नहीं आयी। अतः जब तक उनकी हिन्दी गद्य रचनाओं की इससे पूर्ववर्ती प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त न हो जाएँ, वल्लभ सम्प्रदाय के प्राचीन ब्रजभाषा के गद्य-ग्रन्थों को ही हिन्दी के प्राचीन गद्य ग्रन्थ कहा जा सकता है। बीकानेर राज्य की अनूप-संस्कृत लाइब्रेरी में 'कुतुबुद्दीनकी बात' संवत् १६३३ में लिखित प्राप्त है जिसका गद्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी की अपेक्षा राजस्थानी और गुजराती गद्य अधिक प्राचीन मिलता है। जैन भंडारों की ताडपत्री प्रतियों में चौदहवीं शताब्दी का गद्य पाया जाता है। संवत् १३३६ में संग्रामसिंह-रचित 'बालशिक्षा' ग्रन्थ में तत्कालीन गद्य के उदाहरण पाये जाते हैं। यह संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ है, जिसमें समझाने के लिए राजस्थानी का प्रयोग किया गया है। पन्द्रहवीं शताब्दी में 'पृथ्वीचन्द्र चरित' या वाग्विलास नामक विशिष्ट ग्रन्थ मिलता है, जो राजस्थानी गद्यकाव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ग्रन्थ से वर्णनात्मक गद्य शैली की यह परिपक्वता का पता चलता है। इससे पूर्व भी कुछ ऐसे ग्रन्थ बने होंगे, ऐसी संभावना होती है, पर अब वे प्राप्त नहीं हैं। इसके बाद तुकान्त गद्य वाले और वर्णनात्मक विशिष्ट गद्य ग्रन्थ राजस्थान में निरन्तर बनते रहे हैं जिनका संक्षिप्त परिचय कराना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है। संस्कृत ग्रन्थों में गद्यकाव्य के जो लक्षण दिये हुए हैं, उनमें समय समय पर रचयिताओं की रुचि के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है। राजस्थानी में गद्यकाव्य किसे कहा गया है और इसमें कितने प्रकार हैं, यह जान लेना परमावश्यक है।

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध छन्दग्रन्थ 'रघुनाथ रूपक' में प्रसिद्ध छन्दों एवं गीतों के लक्षण एवं उदाहरण देने के पश्चात् गद्य के दो भेद दिये हैं—दवावैत और वचनिका। इन दोनों के भी दो दो भेद किये गये हैं—दवावैत के शुद्धबन्ध और गद्यबन्ध, और वचनिका के पद्यबन्ध और गद्यबन्ध। यथा—

> तव मछ कवि हू तिके, दवावैत विध दोय।
> एक शुद्धबन्ध होत है एक गद्यबन्ध होय॥

इसकी व्याख्या करते हुए आधुनिक टीकाकार श्रीमहताबचन्द खारेड़ लिखते हैं—"दवावैत कोई छन्द नहीं है जिसमें मात्राओं वर्णों अथवा गणों का विचार हो। यह अन्त्यानुप्रास रूप गद्य जाल है। अन्त्यानुप्रास, मध्यानुप्रास और किसी प्रकार का सानुप्रास या यमक लिया हुआ गद्य का प्रकार है। यह संस्कृत, प्राकृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी भाषा में भी अनेक कवियों और ग्रन्थकारों द्वारा प्रयोग में लाया हुआ मालूम देता है। आधुनिक लल्लूजीलाल के 'प्रेमसागर' आदि ग्रन्थों में तथा उर्दू के 'बहारदानिश', 'नोवलन' आदि ग्रन्थों में तथा फारसी के ग्रन्थों में देखा जाता है। यह दवावैत दो प्रकार की होती है—एक शुद्धबन्ध अर्थात् पद्यबन्ध, जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरी गद्यबन्ध जिसमें अनुप्रास नहीं मिलाते हैं।

पद्यबन्ध का उदाहरण—

> "प्रथम ही अयोध्या नगर जिसका बणाव,
> बार जोजन तो चौडे, सोल जोजनकी धाव,

चोतरफके फैलाव चौसठ जोजनके फिराव,
तिसके तरै गंगिता सरितूके घाट,
अत उतावलमूं वहे, चोतर वांगोके पाट।"

गद्यबन्ध का उदाहरण—

हाथियो के हलके सभू गणाते मोलें, अरापत के गाभी भद्रजाती के टोले। अत देह के दिग्गज विन्ध्याचल के मुजाव, रंग-रंग चित्रे सु उठके वणाव। भूमि की जमीन वीर चंद्र के ठणके, बादलों की जगमपा मेरे मेरे भोरो की भकी भणके। यत उदमके नगर भारी धनक की हुंग, जवांहर के जेहर दीपमाला की रुम।

वचनिका के दो प्रकार

"दोय भेद वचनकारा एक पदबध दूजो गदबध, सू पदबध दोय भेद एक तो वारता दूजी वारता में मोहरा रावणां। दोय गदबंध वचनका है एक तो आठ मात्रारो पद हुवै, दूजो गदबंध में वीसमात्रारो पद हुवै—"

टीकाकार ने उसके विशेष विवरण में लिखा है कि ये वचनिकाएं दवावैत के ही भेद मालूम होती है। इतना-सा भेद मालूम होता है कि वचनिका कुछ लबी और विस्तृत होती है और 'गद्बध' में तो कई छन्दो के जोटे अर्थात् युग्म वचनिका रूप में गुथते चले जाते है।

इनके बाद पद्यबन्ध का जो उदाहरण दिया गया है, उपयुक्त नहीं मालूम देता। दूसरे उदाहरण का ही कुछ अंश यहाँ दिया जाता है—

"तिण सभा में श्रीमुखवाणी, लिछमणजी तारीफ आणी।
आतो साराही जाण पाई, उण वन रावणसू जीतां नै सीता आई॥"

गद्यबन्ध वचनिका —

"चक्री विचाल, रघुवर विसाल, जंपे जब्बर, सुण भरथ सूर,
हणमत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुमेव किनी वपेस।
वे कहूं वैण, सुण विगत सैण, पचवटी प्रीत रहतां सुरीत,
उण ठांम आय अवसांण पाय, आतुर अभीत तिण हरी सीत।"

गद्यवद्ध वचनिका के दूसरे भेद को सिलोको की संज्ञा दी है—

"वोले सीतापत इसडी जी वांणी, सुग्रव नागां नै लगै सुहाणी।
सैंसाजल हणमत जिम ही सरसाई, वीरां अवरारी कीधी वटाई॥"

उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि संस्कृत गद्यकाव्यो की अपेक्षा राजस्थानी गद्यकाव्य की व्याख्या में अन्तर है। राजस्थानी गद्यकाव्य में तुक मिलाने का ध्यान रखा गया है। हिन्दी में भी कविवर बनारसीदासजी आदि की वचनिका-सगत रचनाएं मिलती है, पर उनमें तुक नहीं मिलती। साधारण गद्य और विवेचनात्मक टीका ही हिन्दी में वचनिका मानी गयी है। राजस्थानी में वह तुकान्त-प्रधान है।[१]

---

१ रघुनाथरूपक में वचनिका और दवावैत के जो भेद वताये गये है उनके नामो में थोडा उलट–फेर हो गया है, गद्यवद्ध को पद्यवद्ध और पद्यवद्ध को गद्यवद्ध कह दिया गया है। टीकाकार ने जो टिप्पणियाँ दी है वे भी भ्रांतिपूर्ण है। शुद्ध विवेचन इस प्रकार है—

वचनिका के दो भेद है—(क) पद्यवद्ध (या पदवद्ध), जिसमें मात्राओ का नियम होता है। इसके दो भेद होते है—(१) जिसमें आठ-आठ मात्राओ के तुक-युक्त गद्य-खड हो, और

दवावत और वचनिका सज्ञक रचनाएं तो राजस्थानी भाषा में भी अधिक नहीं मिलती, अभी तक जिनलाभसूरि और नरसिंहदास गौडरी 'दवावत' ये दो दवावतें और 'अचलदास खीची की वचनिका' और 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' ये दो ग्रथ ही मुझे ज्ञात है। इनमें से 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' एल० पी० तेसीतोरी ने सम्पादित कर के रायल एशियाटिक सोसाइटी, बगाल से प्रकाशित की थी। प्र य तीनों रचनाएं अप्रकाशित है। 'जिनलाभसूरिकी दवावत' की भाषा हिन्दी है। सलोका-सज्ञक छोट-छोटे देवी-देवताओं की गुण वर्णनात्मक रचनाएं पचासों की सख्या में उपलब्ध है। राजस्थानी गद्य को कहीं-कहीं वार्ता या वार्तिक सज्ञा भी दी हुई मिलती है। वार्तिक के रूप में 'मिसरबधात्पति काव्य' नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुका है। 'केहर प्रकाश' ग्रथ में तुकान्त गद्य की सज्ञा वार्ता पाई जाती है।

जसा कि पूर्व में कहा जा चुका है सर्व प्रथम राजस्थानी गद्यकाव्य 'पृथ्वीचन्द चरित्र' है जिसका अपर नाम वाग्विलास' है। इसकी रचना सवत् १४७८ में जनाचार्य माणिक्यसुन्दर सूरि ने की है। इसमें पृथ्वीचन्द राजा की कथा तो बहुत छोटी सी है, पर वर्णन का विस्तार अधिक है। ग्रथकार ने कोई भी प्रसग बिना वर्णन या विवरण के खाली नहीं छोडा। विवरणात्मक नामों के अतिरिक्त प्राय सम्पूर्ण ग्रथ तुकान्त गद्य में लिखा गया है, जिसे पढते हुए काव्य का सा आनन्द मिलता है। उदाहरणार्थ दो एक वर्णन यहाँ दिये जा रहे है।

मरहट्ठदेश वर्णन—

' जिणि देसि ग्राम अत्यन्त अभिराम। भला नगर जिहां न मागीयइं कर। दुग, जिस्यां हुई स्वर्ग। धान्य, न नीपजइ सामान्य। आगर, सोना रूपा तणा सागर। जइ देस माहि नदी वहइ, लोक सुपइं निवहइ। इसिउ देश पुण्य तणउ निवेश मरहठ प्रदेश। तिणि देसि पइठाणपुर पाटण वत्तइ, जिहां अन्याय न वत्तई। जीणइ नगरि कउसीसे करी सत्कार, पापलि पोढउ प्राकार उन्नार प्रतोली द्वार। पाताल मणी षाई, महाकाय षाई, समुद्र जेहनु भाई। जे लिइ कलास पर्वत सिउ वाद, इस्या सवर्ण देव तणा प्रासाद। करइ उल्लास, लक्षेश्वरी कोटीध्वज तणा आवास। आनन्दइ मन, गरुड राजभवन। उपारी अपड सुवर्णमय दड, ध्वजपट लहलहई प्रचड।

हिव हूउ प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अधकारव्रात, अदृश्य नक्षत्र पटल गगन उज्ज्वल नि शब्द घूक कुल, निमल दिग्मण्डल, आश्रित पूर्वाचल, हूउ रविमडल, विहसइ कमल, विस्तरइ परिमल, वायु वाइ शीतल प्रसन्न महीतल, जिस्यां राता पारेवा तणा चरण, तिस्यां विस्तरइ सूर्य तणा किरण।

---

(२) जिसमें २०-२० मात्राओं के तुक युक्त गद्यखड हों।-(ख) गद्यबद्ध—जिसमें मात्राओं का नियम नहीं होता। इसके भी दो भेद होते है-(३) वारताऊ या साधारण गद्य (४) तुक-युक्त गद्य।

दवावत के भी इसी प्रकार दो भद होते है—(१) पद्यबद्ध (या पदबद्ध)—इसमें २४-२४ मात्राओं के तुक युक्त गद्य खड होते है। (२) गद्यबद्ध—इसमें तुक युक्त गद्य खड होते है, मात्राओं का नियम नहीं होता।

दवावत और वचनिका में क्या अन्तर है? यह अभी तक समझ में नहीं आ पाया है। वचनिका के चतुर्थ भेद और दवावत के द्वितीय भद में कोई अन्तर नहीं दीख पडता। उपलब्ध दवावैतों की भाषा राजस्थानी से प्रभावित खडी बोली हिंदी है जब कि वचनिकाओं की राजस्थानी।

* कहीं कहीं तुकान्त गद्य के लिय भी वात, वार्ता या वार्तिक नाम का प्रयोग देखा जाता है।

महोत्सव वर्णन—

"अलकरिउ प्राकार, शृगारिया प्रतोली द्वार। मच अति मच तणी रचना हुई, स्वर्ग पुरी तणी शोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल वहकई। नाचइ पात्र, राज भवनि आवइ अक्षत पात्र। सोमाई भणता आवइं छात्र, लोक अलकरइं आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात। तीणि वेला तळइ कोरण, वाधीयइं तोरण, वाधीयई वंदरवाल, उत्सव विशाल। गुल घीउ लाहीयइं, मन ऊमाहीयइं। ईण युक्ति जन्म महोत्सव हूआ।"

इस ग्रन्थ के चार वर्ष वाद ही जिनवर्द्धनगणि ने "तपो गच्छ गुर्वावली" लिखी उसमें भी पद्यानुकारि गद्य विशेष रूप मे मिलता है। यहाँ उससे थोडा-सा उद्धरण दिया जाता है—

"जिम देव माहि इन्द्र, जिम ज्योतिश्चक्र माहि चन्द्र,
जिम वृक्ष माहि कल्पद्रुम, जिम रक्त वस्तु माहि विद्रुम,
जिम नरेन्द्र माहे राम, जिम रूपवंत माहे काम,
जिम स्त्री माहे रम्भा, जिम वादित्र माहे भभा,
जिम सती माहि सीता, जिम स्त्री माहि गीता,
जिम साहसीक माहि विक्रमादित्य, जिम ग्रहगण माहि आदित्य,
जिम रत्न माहि चिंतामणि, जिम आभरण माहि चूडामणि,
जिम पर्वत माहि मेरु भूधर, जिम गजेन्द्र माहि ऐरावण सिन्धु,
जिम रस माहि घृत, जिम मधुर वस्तु माहि अमृत,
तिम साप्रति कालि, सकल गच्छन्तरालि,
ज्ञानि विज्ञानि तपि जपि शमि दमि सयमि करी अतुच्छ,
ए श्री तपोगच्छ, आचन्द्रार्क जयवतउ वर्त्तइ।"

इस ग्रन्थ के तीन वर्ष वाद स० १४८५ में हीरानन्द सूरि द्वारा रचित 'वस्तुपाल तेजपाल रास' मे निम्नोक्त प्रकार का गद्य आया है—

इसुउ एक श्री शत्रुञ्जय तणउ विचारु महिमा नउ भण्डारु मन्त्रीश्वर मन माहि जाणी उत्सरग आणी। यात्रा उपरि उद्यम कीधउ, पुण्य प्रसादन नउ मनोरथ सिधउ॥ ६॥

शिवदास-रचित 'अचलदास खीचीकी वचनिका' का रचना-काल १५वी शताब्दी माना जाता है। उसमें पद्य के साथ-साथ वात रूप गद्य पाया जाता है। यद्यपि यह सर्वत्र तुकान्त नही है; फिर भी वचनिका-सज्ञक सबसे प्राचीन रचना यही है। उदाहरण—

"पगि पगि पउलि पउलि हस्तीकी गज-घटा, सी ऊपरि सात-सात सइ धनक-धर सांवठा। सात-सात ओलि पाइककी वइठी, सात-सात ओलि पाइककी उठी। खेडा उडण मुद फरफरी चुहुँचकी ठाँइ ठाँइ ठररी इमी एक त्यापट उडि चत्र दिसी पडी, तिण वाजि तकइ निनादि घर आकास चडहडी। वाप वाप हो! थारा आरम्भ पारम्भ लागि गढ लेयण हार, किना वाप वाप हो! थारा सत तेज अहँकार, राइ दुग राखण हार।"

१६वी शताब्दी में लिखित एक विशिष्ट वर्णनात्मक जैन ग्रन्थ जैसलमेर के 'जैन-भण्डार' से अपूर्ण प्राप्त हुआ है। उसका नाम हाशिये में 'मुत्कलानुप्रास' लिखा हुआ है। उसके कुछ उद्धरण मैने अपने वर्णनात्मक 'राजस्थानी गद्य ग्रन्थ' शीर्षक लेख में दिये है। यहा उसमे से उदाहरणार्थ ग्रीष्म ऋतु का वर्णन दिया जा रहा है—

"महा मिश्रनउ भीलउ, आव्यो उन्हालउ।
लूय वाजइ, कान पापडि दाझइ।
झाझूआं वलइ, हमाचलना शिखर गलइ,
निवाणे खुटइ नीर, पहिरइ आछा चीर।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ।
वाइ वाजइ प्रबल उडइ धूलिना पटल।
सीयालइ हुति माटी रात्रि, ते नान्ही थई रात्रि
सूय आपण पइ तापइ, जगत संतापइ,
जे जीव थल चरइ, तहि जलासय अनुसरइ",

यह ग्रन्थ वर्णनों का सुंदर संग्रह-ग्रन्थ है। सम्भवतः इसकी रचना १५वीं सदी के अंत या १६वीं सदी के प्रारम्भ में हुई है। पूर्ण प्रति मिलने पर इसका महत्व और भी बढ़ जायगा।

१६वीं शताब्दी की अन्य दो रचनाएं 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित की गई हैं। इनका भी थोड़ा सा उद्धरण नीचे दिया जाता है—

"रायाँ महिं वडउ राउ श्री सातल जिणइ मालविया सुरताण तणउ दल, भांजी कीधउ तल्ल। खुदाई-खुदाई तोब तोरे करतउ नाठउ जातउ गणउ घाठउ माल्हाना हिरण तणी परिवाठउ। मणी गालइ थाली यदि छाडावी रेख रहावी, खाडइ जइत्र मणावी नव कोटी मारवाडि मनी मालावी। मोटउ साहस कीधउ, वडउ पवाडउ लीधउ।

"श्रीकरणराय रिणमलनानी, तइं बंधाव्या सेन सुरतानी। तइं हंस-नइ परि निवेडया दूध मइ पाणी, मूकावी गुरु करि कहाणी।

'जिणइ ठाकुरि प्रवसक महोत्सव कराव्या तलिया तोरण बधाव्या, बदरवालि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वादिवा आव्या कुणही जो तस्या वहिनइ कल्लोल, कुण ही पल्लाण्या आसण होडा, केइ करहि चडी वइ दह निसि दोडा, केइ मूंनि माणइ तयोल लवग डोडा।

'तिमरी आविया, पइसारा मोटइ मेंडाण करावियां, जागी ढोल झालरि तणि वादित्र वजाविया। बिहु पासे पटकूल तणा नेजा लहराविया पगि-पगि खेला नचाविया तलिया तोरण बँधाविया। गात गान कीधा, पून कलस मूहव सिरि दीधा, भला मांगलिक कीया। घरि-घरि गूडी उछली, श्री समतणी पूगी रली।'

१७वीं शताब्दी के वर्णनात्मक गद्य के दो संग्रहों की प्रतियाँ मिलती हैं जिनके कुछ उद्धरण अपने ग्रन्थ लेख में दे चुका हूँ। वर्णन बड़े सुन्दर हैं। लेख विस्तार के भय से यहाँ हम शताब्दी की अन्य दो रचनाओं के उद्धरण दे करके ही संतोष करना पड़ता है। पहली रचना 'कुतबदीन साहिजादेकी वात' है। उसकी १७वीं शताब्दी की लिखित प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालय में उपलब्ध है। हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप की जानकारी के लिए यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

कुतबदीन साहिजादेरी वारता—
'आदि—अथ कुतबदीन साहिजादेरी वारता लिख्यते।

वडा एक पातिस्याह। जिसका नाम मवन स्याहु। गढ मांडव थाणा। जिसका साहिजादा दाना। मौज दरियाव सीर। जिसके सहरमें वस दान ममद फकीर। जिसकी औरतका नाम

मौजूम खातू । सदा वरतका नेम चलातू । जो ही फकीर आवै । तिसकुं खांणा खुलावै । एक रोज इक दीवान फकीर आया । दावल दांन घरां न पाया ।

अन्त—बेटे बाप विसराया, भाई बीसा रेह ।
सूरां पुरां गल्लडी, मांगण चीता रेह ॥१०७॥

ऐसा कुतबदीन साहजादा दिल्ली बीच पिरोसाह पातस्याहका साहजादा भया । दावलदान फकीरकी लडकी साहिबांसे आसिक रह्या । बहुत दिना प्रीत लागी । दुख पीड आपदा सहु भागी । पीरोसाहिका तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफत कुतबदीन साहजादेको पढै, बहुत ही वजन सुखसे बढै । यह बात गाहजुगमे रहि । ढढणीने जोड कर कही ।"

दूसरी रचना राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि समयसुन्दर रचित 'भोजन विच्छित्ति' नामक है । 'कल्प-सूत्र' की टीका मे, महावीर के जन्म के पश्चात् कुटुम्बी जनों को जो भोजन कराया गया, उसका वर्णन बडी छटापूर्ण भाषा में किया गया है । खाद्य पदार्थों का इतना सुन्दर वर्णन पढ़ कर पाठको को भी भोजन करने की इच्छा जग उठेगी । परोसने वाली स्त्री का वर्णन करके खाद्य पदार्थों का वर्णन किया गया है—

"माडयउ उत्तग तोरण माडवउ, तुरत नवउ । बेसवानउ आंगणउ, तेतउ नील रतन तणउ । सखरा माडया आसण, बैसता किसी विमासण प्रीसणहारी पहठी । ते केहवी ?—सोल शृगार सज्या, बीजा काम त्यज्या । हायनी रुडी, विहुं बांहे खलकइ चूडी । लघ लाघवी कला, मन कीधा मोकला । चितनी उदार, अति घणी दातार । दउलती हाथ, परमेसर देजे तेहनो साथ । चसमसती आवी, सगलारइ मन भावी ।

"हिव पकवान आणइ, केहवा वखाणइ—सत्तपुडा खाजा, तुरतना ताजा, सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रासादना छाजा । पछे प्रीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू । कुण कुण ते नाम, जीमता मन रहे ठाम । मोतीया लाडू, दालिआ लाडू, सेविया लाडू, कीटीरा लाडू, नांदउलिआ लाडू, तिलना लाडू, मगरिया लाडू, भूगरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू ।"

१८ वी शताब्दी के सभा-शृगार, कुतुहलम् आदि कई वर्णनात्मक ग्रन्थ मिले हैं, जिनके उद्धरण अपने अन्य लेख में दे चुका हूं । इस शताब्दी की दो सुन्दर रचनाएं चारण कवियो की भी प्राप्त है, जिनमें से 'खीची गगेव नीबावतरो दो-पहरो' और 'राजान राउतरो वात-वणाव' बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रथ है । इनका एक एक उद्धरण नीचे दिया जा रहा है । पहली रचना के प्रारम्भ में वर्षा का वर्णन तो बहुत ही सुन्दर है जिसको मैंने राजस्थानी साहित्य मे वर्षावर्णन लेख में दे दिया है । उसे यहां भी दिया जा रहा है—

"वरखा रितु लागी, विरहणी जागी ।
आभा झर हरै, वीजा आवास करै ।
नदी ठेबा खावै, समुद्रे न समावै ।
पाहाडा पाखर पड़ी, घटा ऊपडी ।
मोर सोर मडै, इन्द्र धार न खडै ।
आभो गाजै, सारंग वाजै ।
द्वादश मेघनै दुवो हुवौ, सु दुखियारी आख हुवौ ।
झड़ लागी, प्रथीरो दलद्र भागी ।
दादुरा डहिडहै, सावण आणवैरी सिध कहै ।

इसी समदयी वण रह्यो छ, बरखा मद न रही छ।
बिजली झिलोमिल कर न रही छ बादलाँ झड़ लायो छ।
सेहराँ-सेहराँ बीज चमक न रही छ।
जाण कुलटा नायक घरसू नीसर अग दिखाय दूसर घर प्रवेस कर छ।
मोर कुहक छ, डडरा डहक छ।
झाखरीरा नाला बोल न रह्या छ।
पाणी नाडा भर न रह्या छ चोटडियाम डहक न रही छ।
बनसपतीसूँ वेलाँ लपट न रही छ।
परमातरो पार छ। गाज आवाज हुय न रही छ।
जाण घटा घण हरखसूं जमीसूँ मिलण आयी छ।
इस वखत समइयम गगेव नीवावत बोल छ, मनरी उमग खोल छ।
सलाँ सिकाररी हुवो हुवो छ।

"तठा उपरांत करि न राजान सिलामति हुम श्राग बसत रितरा वणाव बणाणीज छ दखिण दिसा मलयाचल पहाडरी पवॅन बाजियो छ। सीत मद सुगन्ध गति पवॅन मतवाला मगल ज्यू परिमल झाला खावतो वह छ। अठार भार बनसपती मकरद फूलादिरा रस मोणतो थको वह छ। अवर मोरीज छ कूँपला फूटीज छ। वणराइ मजरी छ। वासावली फूटि रही छ। केसू फूलि रहिया छ। रितिराज प्रगटियो छ। बसत आयो छ। भमर मधुकर भकार करी रहिया छ। मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छ। बाग बगीचाँ दरखत गुलकारी झिलि फूल रही छ।"

स० १७८८ के लगभग रतनूँ वीरभाण कृत 'राजरूपक' ग्रन्थ राजस्थानी भाषा का एक वृहद ऐतिहासिक काव्य है, जिसे पण्डित रामकरणजी आसोपा ने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कराया है। इस ग्रन्थ में कई जगह वार्ता का भी प्रयोग हुआ है। यहा उसका एक उदाहरण दिया जा रहा है। इसमें औरगजेब का वर्णन है—

"औरगसा पातसा आसुर अवतार तपस्याके तेज पुज एक से विसतार।
मापका विहाई सा प्रतापका निदान मारतड आगे जिसी जोनमी जिहान।
जापका पगार धापका दरियाव, तापका सेस ज्वाल दापका कुरराव।
सबमका जव्वार अकसेका बाई, मरिदल समुद्र आए कुभाक भाई।
रहणीमें जोगस्वर वहणीमें जगदीस, ग्रहणीमें सिवनेस सहणीमें अहीस।
जाके जप तप आग ईश्वर आधीन साकूँ छल चाहै सा कुण कर हीन।

१८ वीं शताब्दी में ही दवावत-सज्ञक दो रचनाएं प्राप्त हुई है, जिनमें से पहली रचना 'नरसिंहदास गौडरी दवावत' भाट मालीदास रचित है। इसकी प्रति अनूप सस्कृत लाइब्रेरी में १८ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध की लिखित प्राप्त हुई है। आदि अन्त के उदाहरण इस प्रकार है—

आदि– हीन्दवाण छात हीन्दवाण सूर अजमेर जोधपुर मांण पूर अजपाल वश अग गौड अराड ढोलडी थोच महिपत्याँ माड।"

अन्त–' रग छटरते है। कपड़े पहरते है। खासक सीखावता है। हजूरी पावता हैं। चदन उतरते पाव दे सलाम करावे है।

अरथपत पातसा है। अम्मर फत्ते है। गमा विराजती है।

कीरत राजते है। घोडे फिरते है। पायक अडते है।
गुणी जण राग घटता है। वह वपत वणता है।
सोभा वणती है। श्री दिवाण पधारते हैं। दुसमण को जारते है।
देसौ दूर डरने है। साहो काम सरते है।
कवीसुर वोलते है। भरणा पोलते हैं।
कामका सूरत। जेतला दिहाडा तेतला प्रवाडा।
जग जेठराज नरसिह जेत, कवि मालीदास कहै दवावेत।

दूसरी दवावेत जैनाचार्य जिनलाभ सूरिजी की है जिसे याचक विनयभक्ति (वस्तपाल) ने १६ वी सदी के प्रारम्भ में वनायी है। इससे पूर्ववर्ती जैनाचार्य जिनसुखसूरिजी की दवावेत उपाध्याय रामविजय ने सवत् १७७२ में वनायी थी। इसका दूसरा नाम 'मजलस' भी है। दोनो दवावेतो के उद्धरण नीचे दिये जा रहे है—

"अहो आवौ वे यार वैठो दरवार। एचादणी रात, कहो मजलीसकी वात। कहो कौण कौण, मुलक कौण कौण राजा देषै, कौण कौण पातिस्या देषै, कौण कौण दईवान देषै, कौण कौण महिवान देषै। तो कहै—

दिल्ली दईवान फररूष्साह सुलतान देषै। चित्तौड सग्रामसिघ दईवान देषे। जोधाण राठौड राजा अजीतसिह देषे। वीकाणराज सुजाणसिघ देषे। आवेर कछवाह राजा जयसिघ देषे। जेसाण जादव रावल वुधसघ देषे।

ए कैसे है—वडे सु विहान है, वडे महिर्वान है, वडे सिरदार है। वडे वूझदार है, वडे दातार है। जमी आसमान वीच सभू अवतार है।"

आचार्य श्रीजिनसुखसूरि का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

"दुस्मन् दूर है, सव दुनीमें हुक्म मजूर है। मगरूराकी मगरूरी दफै करते है, छत्र धारीकी सी रौस धरते है। वडे-वडे छत्रपति गढपती देसोत डडौत करते है, चिकारे मुकारे भुज मरते है। (और) भी कैसे है—गुनुके गाहक है, गुनुके जान है, गुनुके कोट है, गुनुके जिहाज है विजैजिनराज है पट्दर्शनके महाराज है सव दुनिया वीच जस नगारेकी अवाज है।"

जिनलाभसूरि—दवावेत उपर्युक्त दवावेत से चौगुनी वडी है। इसमे कुछ पद्य व गीत भी सम्मिलित है। यहा वचनिका-सज्ञक गद्य काव्य के भी कुछ उद्धरण दिये जाते है—

'फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा विलास,
किधु हरजूका हास किधु सरद पुंन्युंका सा उजास।
फिर जिनुका रूप अति ही अनूप मनु सव रूप वतुका रूप,
जाकु देष्यै चाहै सुरनके भूप कामदेवका सा अवतार।
किधुं देवका सा कुमार, तेज पुज की भलक मनु कोटिन सूरन की जलक।"

उपर्युक्त दोनो दवावेतो में फारसी शव्दो का प्राचुर्य है, क्योकि इन दोनो की रचना सिन्ध प्रात मे हुई है। पजाव और सिन्ध की भाषा मे उस समय फ़ारसी शव्दो का वाहुल्य था।

२० वी शताव्दी की रचनाओ में 'शिखर वशोत्पत्ति' नामक ऐतिहासिक काव्य सवत् १६२६ में कविया गोपाल ने वनाया, जिसे पुरोहित हरिनारायणजी ने सम्पादित कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित किया है। इसका अपर नाम 'पीढी वार्तिक' भी है। इसका प्रधान

विह्न वार्ता नामक है, जिसे श्लोक की तरह मात्राओं आदि के प्रनिबन्ध रहित गद्य ही समझिए। उदाहरण इस प्रकार है—

"स्याम ताज कफनी कमंडलम नीर।
डाटी सुपेत सप सुवरण शरीर ॥१४॥
मोक्ल राव आतो देपि माथाकों नवायो।
साँई स्या मुरानी सेप नामी पथ पायो ॥ १५ ॥
जगलमें घर छा सा अभ्याइ जोगी आई।
मोक्लका कर्नासू सेप चौपीमें दुहाई ॥ १६ ॥
बोल्यो दूध पीव सेप नीकी भांति रणा।
तेरे पुत्र होगा राव सेपा नांव कणां ॥ १७ ॥

इसी कवि का अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ 'लावा रासा' है, जो राजस्थान पुरातत्व मन्दिर जयपुर से प्रकाशित हुआ है। उसमें भी दवावेत गद्य छन्द प्रयुक्त है। इसकी परवर्ती रचना कविराव बख्तावर के सं० १९३६ में रचित 'केहर प्रकाश' है। यह भी एक ऐतिहासिक काव्य है। बीच-बीच में वार्ता एवं वचनिका विशेष रूप से पाई जाती है। यहां उन दोनों का एक उदाहरण दिया जा रहा है।

जवाहर वेश्या की पुत्री कवलप्रसण के रूप का वर्णन वार्ता में इस प्रकार किया गया है—

"पुत्री जिणरे कवलप्रसण रूपरी निधान।
सुवेदियासू सवाई साव रम्भारे समान॥
साहित्या श्रृंगार काव्य जवानी पर कहे।
रमाताल पारजंत सगीतमें रहे॥
वीणाधर सहनाई गावे किण भात।
तराज पर नह आवे नारद वीणारी सात॥
जिणने सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावे।
कुरंग भी भमग वन पातालसू आवे॥"

उसके रूप को देख कर अन्य नारियों ने उसे बाग बगीचों में जाने का निषेध करते हुए क्या ही सुन्दर कहा है!

"सुघड जठ बोली या नवेली सहल सारे ही सिधावज्यो।
पण बाग वन सरोवर कदे भी मत जावज्यो।
जावेला बाग तो पिक शुक अली उड आवसी
न बिम्बफल श्रीफल अनाड सवा जो सुखावसी,
जावेला जो वन तो खुञ्जन कपोत चोंच चूरेला।
मणधर मृगराज गजराज विवर बूरेला।
जावेला सरोवर राज हस वूड जावसी।
कवल काला पडेला सिवाल अवटावणे आवसी।
रातने या अटारी माथे कदेई जो आवेला।
तो चन्द्रमारे भरोसे राहूसू ग्रसता ही ज खावेला।
राहू कदाक न आयो तो चकोर तो आवसी।

जावसी न आग मावे चहराने नूंप जावनी ।
सावण आया धरे यारे हीदा जिको नानेला ।
हीदिया छे तो परिया ओके पगिया मान जावेना ।

दचनका

कवल उरयगी आत आतमे कहान ।
परस्थानी परियो मी नहेल्यो ले गाय ।
जय्यम पट जेवर भनामलके जोत ।
हेरी जात चारो घोर म्यानगी सी होत ॥
छद्रघण्टा बिछियोका छूटे छण छणाव ।
ज्यो हमे वच्चोकी वाणीका वणाव ।
जा भन्का भणकार व्है जोरें पर जोर ।
सावणके मौसम ज्यों भिल्लयोका घोर ।
फवणीमे अनुरागमें अगणितके फैल ।
गुम्मजके महल आई मिजाजोके गेल ॥६३॥"

आधुनिक शैली के गद्यकाव्य की परम्परा भी राजस्थानी भाषा में चालू है। यहां कविवर कन्हैयालालजी सेठिया के गद्यकाव्यों के दो उदाहरण देखिए—

"आसोजरो महीनू । नान्ही सी'क एक बादली ओसरगी । रेवड़ वाळैरो अलगोजो गूंज उठ्यो । रिमझिम-रिमझिम मेवलो वरसै । अतैमे ही अचाण चूको पूनरो एक लहरो आयो अर वादली उडगी । करड़ी तावडी निकल आई । खेतमें निनाण करतो करसो बोल्यो आसोजारा तप्या तावडा काचा लोहा पिण गलग्या—'मिनखरी जवानमें कठेई पत कोनी' ।

बादलवाईरो दिन । मधरो मधरो आथूणू वायरो चालै । खेजड़ी परा बैठी कमेडी बोली—'टमरक टू' ।

नीचै छियामें सूतो मिनख सोच्यो किस्योक सोवणू पखेरू है ? अतैमें ही कमेडी बीठ करी-सीधी आ'र मिनखरै ऊपरा पटी मिनख भुंभला'र वोल्या—किस्योक बदजात जीव है ?"

हिन्दी भाषा में तो राजस्थान के कई विद्वानो ने अनेको गद्यकाव्य लिखे है, जिनमें ठाकुर रामसिहजी (बीकानेर), भवरमलजी सिंघी (जयपुर), दिनेशनन्दिनी डालमिया (उदयपुर) आदि प्रधान हैं । श्रीयुत् कन्हैयालालजी सेठिया का मातृभाषा का प्रेम विशेष उल्लेख योग्य हैं । हिन्दी के अच्छे कवि होने के साथ इन्होने राजस्थानी भाषा में भी समय-समय पर बहुत सुन्दर रचनाएं की । इनके राजस्थानी के गद्यकाव्यो का सग्रह 'पाखड़ल्यां' के नाम से शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है ।

—श्रीअगरचन्द नाहटा

कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य-ग्रंथ

वार-शक्ति मनुष्य को दी हुई प्रकृति की विशेष देन है। वैसे तो नेत्रधारी सभी प्राणी वस्तुओं और घटनाओं को निरंतर देखते ही रहते हैं, पर मनुष्य का देखना उनकी अपेक्षा बहुत महत्व रखता है। देखने के पीछे अनुभव करने की विशेष शक्ति आवश्यक है और वह केवल मानव को ही प्राप्त है। इतर प्राणी उन्हें देख भर लेते हैं पर जैसा अनुभूतिपूर्ण वर्णन मानव कर सकता है वैसा कोई भी प्राणी नहीं कर सकता। वस्तुओं का ज्ञान कर लेना एक बात है और अपने अनुभव को सुंदर एवं साकार रूप में दूसरों के समक्ष वाणी द्वारा उपस्थित करना दूसरी बात है। किसी भी बात का वर्णन करते समय श्रोता के सामने उसका चित्र सा उपस्थित हो जाय-यह वर्णन करने की विशेष कला है। वैसे रसील व चमत्कारपूर्ण वाक्य लिपिबद्ध हो जाने पर वे साहित्य की संज्ञा पाते हैं।

भारतीय प्राचीन साहित्य में वर्णन करने की विशेष छटा स्थान-स्थान पर देखने को मिलती है। कहीं कहीं तो निरूपण शैली इतनी सजीव होती है कि पढ़ने और सुनने वाले बरबस आकर्षित हो कर मन-मुग्ध से हो जाते हैं। यह वर्णन-शैली कई प्रकार की होती है। किसी में वस्तु के बाह्य रूप की, किसी में भीतरी गुणों की और किसी में भेद प्रभेदों के विस्तृत विवरण की प्रधानता होती है। किसी किसी रचना में भाषा का चमत्कार देखते ही बनता है। शब्दों का चयन बड़ा सुन्दर होता है और वर्णन गद्य में लिखे जाने पर भी (तुकान्त होने से) पढ़ने वाले को पद्य का सा आनन्द मिलता है। संस्कृत में गद्य काव्य में जिस प्रकार लंबे लंबे समास प्रधान होते हैं उसी प्रकार लोक-भाषा के वर्णनात्मक गद्य-ग्रंथों में तुकान्त शैली बहुत विस्तृत पाई जाती है। इसमें एक के बाद एक तुकान्त शब्द ऐसे सुन्दर एवं सहज ढंग में सजाये जाते हैं कि मानो मोतियों को चुन चुन कर माला ही पिरो डाली हो। सहृदय पाठक व श्रोता उस तुकान्त शब्दावली और वर्णन शैली का चमत्कार देख कर आनंद विभोर हो उठते हैं और लेखक के प्रति बरबस उनके मुंह से वाह वाह, 'खूब खूब' शब्द फूट निकलते हैं।

प्राचीन जैनागमों का अध्ययन करते समय आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व की वर्णन शैली का अच्छा पता चलता है। अंग-प्रमंगों का विवरण देने वाले स्थानांग समवायांग प्रश्न-व्याकरण आदि आगम तो नामकथन हैं ही पर उववाई सूत्र जैसे कई ग्रंथों में वर्णनों की अच्छी बहारें हैं। उववाई सूत्र में चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य वनखंड, अशोक वृक्ष, महाराजा श्रेणिक के पुत्र भंभसार (कोणिक अजात शत्रु), धारणी राणी भगवान महावीर का आगमन, समवसरण, महाराजा कोणिक का वंदनार्थ गमन, श्रमणों की तप-साधना आदि का अच्छा वर्णन है। इसी प्रकार अन्य जैनागमों में भी प्रसंगानुरूप अनेक प्रसंगों के सुंदर वर्णन पाये जाते हैं। जैसे कल्पसूत्र में भगवान महावीर की माता चौदह स्वप्न देखना है-उनका विस्तार से वर्णन मिलता है। इस संबंध में स्वतंत्र लेख द्वारा प्रकाश डाला जायगा अतः लेख-विस्तार भय से यहां उदाहरण नहीं दिए जा रहे हैं।

परवर्ती संस्कृत काव्य आदि ग्रंथों में प्राचीन वर्णनशैली को और अधिक आगे बढ़ाया गया है। जैसे देश वर्णन, नगर वर्णन, हाट बाजार वर्णन, राजा और राज सभादि का वर्णन,

फिर रागियो और अन्य नगर की रमणियो के रूप का वर्णन, वनखंड, आराम, उद्यान, महल आदि के वर्णनो के साथ साथ छः ऋतुओ, उत्सवो और क्रीड़ाओ आदि का वर्णन भी कविगण अपने काव्य मे अवश्य ही करते हैं। सुकवि वर्णन-योग्य प्रसंगो को कभी खाली हाथ नहीं जाने देते, जिससे काव्य में सजीवता व सरसता आ जाती है और श्रोता एव अध्येता विविध रसो का पान कर निमग्न हो जाते है। पद्य ग्रंथो की भांति गद्य काव्यो (कादम्बरी, तिलकमंजरी आदि) में भी स्थान-स्थान पर वर्णनो की छटा देखते ही बनती है। कही कही तो वर्णन बहुत ही चमत्कारिक एव कलापूर्ण पाये जाते है।

कई ऐसे स्वतन्त्र ग्रन्थ भी भारतीय-साहित्य में पाये जाते है जिनका उद्देश्य केवल वर्णन करने का ही होता है। ऋतुसंहार आदि ऐसे ही काव्य है। कतिपय ऐसे संग्रह-ग्रन्थ भी उपलब्ध है जिनमे भिन्न भिन्न वस्तुओ के वर्णन संगृहीत मिलते है। उनके वर्णनो का उपयोग दूसरे ग्रंथ-प्रणेता अपनी रुचि के अनुकूल घटा बढ़ा कर स्वरचित ग्रन्थो में कर लेते है। कथा-चरित्र आदि ग्रन्थो में स्थान-स्थान पर ऐसे सजीव वर्णन जुड़ जाने से उनकी शोभा बहुत अधिक बढ़ जाती है।[१]

संस्कृत-प्राकृत की भांति लोक-भाषाओ में भी ऐसे वर्णनात्मक ग्रन्थ समय समय पर रचे गये है। मैथिली भाषा का "वर्ण रत्नाकर" ग्रन्थ इसी प्रकार का है। यह डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या और बाबू मिश्र द्वारा संपादित हो कर एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता द्वारा सन् १९४० में प्रकाशित हुआ था। यह १५वी शती की रचना है और इसमें भेद-प्रभेद रूप वर्णन ही अधिक है। सजीव कथात्मक महत्वपूर्ण वर्णन ग्रन्थ सं० १४७८ में माणिक्यसुन्दरसूरि रचित पृथ्वीचन्द्र चरित्र है। लोकभाषा में वर्णनो का ऐसा सुन्दर संदर्भ ग्रन्थ अन्य नही है। इसका सार्थक व अपर नाम "वाग्विलास" रचयिता ने स्वयं रखा है। क्योंकि पृथ्वीचन्द्र के चरित्र की अपेक्षा उसमें वाग्विलास रूप चमत्कारिक वर्णनो की ही प्रधानता है। पाठकों को इसकी शैली का रसास्वाद कराने के लिये दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते है—

वर्षाकाल वर्णन—

"विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पथी तणउ काल, नाठउ दुकाल।
जिणिइ वर्षाकालि मधुर ध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ,
जाणे सुभिक्ष भूपति आवता जय ढक्का वाजइ।
चिहु दिशि बीज झलहलइ, पथी घर भणी पुलइ। विपरीत आकाश, चन्द्र सूर्य परियास।
राति अधारी, लवइ तिमिरि। उत्तर नऊ उनयण, छायउ गयण। दिसि घोर, नाचई मोर।
सधर वरसइ धारावर। पाणी तणा प्रवाह खलहलइ, वाडी ऊपर वेला वलइ।
चीखलि चालता सकट स्खलइ, लोक तणा मन धर्म ऊपरि वलइ।
नदी महा पूरि आवइ, पृथ्वी पीठ प्लावइ। नवा किसलय गहगहइ, वल्ली वितान लहलहइ।
कुटुम्बी लोक माचइ, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइ।
पर्वत तउ नीझरण विछूटइ, भरिया सरोवर फूटइ।
इसिउ वर्षाकालि।

---

१ कविवर सूरचन्द्र के 'पदैक विंशति' कथा-संग्रह ग्रन्थ की अपूर्ण प्रति हाल ही में मुनि श्रीजिनविजयजी से अवलोकन को मिली है। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है, पर स्थान-स्थान पर सुन्दर वर्णन राजस्थानी-गद्य में दिये है। वे कवि के स्वयं रचित भी हो सकते है पर कई वर्णन अन्य प्राप्त प्रतियो वाले भी है।

वसन्त ऋतु वर्णन-

तिसिह आविउ वसंत हूउ गीत तणउ अंत।
दक्षिण दिशि तणउ शीतल वाउ वाइ विहसइ वणराइ।

दोहा

सवे भला मासडा, पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूखडा, तीह मायइ फल्ल॥

मउरिया सहकार चंपक उदार।
बेउल बकुल, भ्रमर कुल संकुल, कलरव करइ कोकिल तणा कुल।
प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल।
राता पलास, सवत्री वास। कुंद मुचकुंद महमहइ, नाग पुनाग गहगहइ।
सारस तणी श्रेणि, दिसि वासीइ कुसुम रेणि। लोक तणइ हाथि वीणा वस्त्राडंबर भीणा।
धवल शृङ्गार सार, मुक्ताफल तणा हार। सवाग सुन्दर, वन माहि रमइ भूप पुरंदर।
एकि गीत गवारइ, दान दिवारइ। विचित्र वाजित्र वाजइ, रमलि तणा रंग छाजइ।
एकि वाडिइ फूल चूटइ वृक्ष तणा पल्लव त्रूटइ। हिंडोलइ हींचइ, भालता वादिइ जनिइ सींचइ।
वेलिहरा कउतिग जोअइ, प्रीतमत हाभइ।
वनपालकि अवसर लही, वसंत अवतरिया तणी वार्ता कही॥[१]

उपमा व तुलना आदि प्रधान विभिन्न शैली के वर्णन-

१ तुम्हें कदवउ धम पणि नथी जाणता मम। सामनउ-वन ते भणीइ ज वृक्षवत, नदी ते ज नीरवत, कटक ते जे वीरवत सरोवर ते ज कमलवत मेघ ते ज समावत, महात्मा ते जें क्षमावत प्रसाद ते ज धजावत, धर्मी ते ज दयावत, आदि।

२ माहरी लक्ष्मी इह सरीखी हुइ। सउ कहीइ-
आभ तणी छाह, कुपुरिस तणी बाह। दासीनु स्नेह, शरद कालनु मेह
थोडा मेहु नउ थइ वहिनु आवइ छेह।

३ जेटलु अंतर राणी अनइ दासी, जेतलु अंतर दही नइ छासि,
जेटलु अंतर मधुर ध्वनि नइ खासि। जेतलु अंतर समुद्र नइ कूपा
जेटलु अंतर सोनइया नइ रूपा जेटलु अंतर बाप नइ फूपा।
जेटलु अंतर लूण नइ कपूर जेटलइ अंतर कजुइआ नइ सूर।
जेटलइ अंतर डाभिली नइ तूर जेटलइ अंतर खाल नइ गंगा पूर।
जेटलइ अंतर साधु नइ चोर, जेटलइ अंतर हार नइ दोर।

४ सूय पाखइ स्त्रिय नहीं पुण्य पाखइ सौख्य नहीं
पुत्र पाखइ कुल नहीं, गुरु उपदेश पाखइ विद्या नहीं,
हृदय बुद्धि पाखइ धर्म नहीं, भोजन पाखइ त्रिपति नहीं।
साहस पाखइ सिद्धि नहीं कुलस्त्री पाखइ घर नहीं।

---

१ इस वाग्विलास ग्रन्थ के कई वर्णन प्रस्तुत लेख में दिये गये अन्य वर्णनात्मक ५ प्रतियों में भी ज्यों के त्यों मिलते हैं व कई वर्णनों में शब्दों का बहुत अधिक साम्य पाया जाता है। भेद प्रभेद रूप वर्णनों को इस लेख में उद्धृत नहीं किया गया, जैसे कि जातियों का प्रसंग आया तो वहां ८४ जातियों के नाम हैं। आदि आदि।

५. जिमि विलब विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज।
कुमगति विणसइ संतान, स्वर पाखइ विणसइ गान।

वर्णनात्मक ग्रंथों के प्रति मेरा आकर्षण—

श्वेताम्बर जैन समाज मे कल्पसूत्र का वाचन प्रतिवर्ष पर्युषणों में होता है। बचपन से ही मैं उसे सुनता रहा हू। बीकानेर में उसकी खरतरगच्छीय लक्ष्मीवल्लभी टीका ही विशेष रूप से वाची जाती है। इस टीका में व इससे पूर्ववर्ती कल्पलता टीका में भगवान महावीर के जन्माभिषेक के प्रसग में भोजन विच्छित्ति आदि का लोकभाषा में सरस वर्णन आता है। जो मनोविनोद के लिये अच्छा है। उसमें विस्तार से जानने के लिए "वाग्विलास"[1] ग्रन्थ का निर्देश होने से उक्त ग्रन्थ के प्रति मेरा आकर्षण बढा। जब इस ग्रन्थ के दो चार वर्णन जो इस सस्कृत टीका में दिये हुए हैं वे इतने सुन्दर हैं तो वाग्विलास ग्रन्थ में तो न मालूम ऐसे कितने सुन्दर वर्णन सगृहित होगे। यही उस आकर्षण का कारण था। कुछ बडे होने पर (साहित्यान्वेषण एव अध्ययन की वृद्धि के समय) उपर्युक्त माणिक्यसुन्दरसूरि का 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' देखने में आया जो बडोदा ओरियंटल सिरीज मे प्रकाशित "प्राचीन गुर्जर काव्य सग्रह" और मुनि जिनविजयजी सपादित "प्राचीन गुजराती गद्य सदर्भ" में प्रकाशित हुआ है। इस चरित्र का अपरनाम 'वाग्विलास' भी है। यह जानने पर वाग्विलास ग्रन्थ का स्वरूप तो स्पष्ट हो गया पर लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित भोजन विच्छित्ति आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में नही मिलने से वह वाग्विलास नामक ऐसा ही कोई अन्य ग्रन्थ होना चाहिये—यह अनुमान किया गया। पर कई वर्षों तक ऐसा कोई ग्रन्थ उपलब्ध नही हुआ। फिर क्रमश ५ ग्रन्थ उपलब्ध हुए जिनका परिचय प्रस्तुत लेख मे दिया जा रहा है।

१ कुतुहलम्—

बीकानेर के जैन ज्ञान-भडार में एक "कुतुहलम्" सज्ञक प्रति सर्व प्रथम मिली जिसमें राज नाम, सभा नाम, वस्त्रनाम आदि नाम और वर्षाकाल आदि का कुछ वर्णन था। इसके अन्त में 'इति कौतूहलम्' शब्द लिखे थे जिससे चमत्कारपूर्ण वर्णन वाली रचना को कौतूहलोत्पादक होने से 'कौतूहल' नाम दिया गया प्रतीत हुआ। इस ग्रन्थ के चार वर्णन पाठकों की जानकारी के लिये यहा दिये जाते हैं।

१. वर्षाकाल वर्णन—

ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पडई छटा, गाजइ भटा, भीजइ लटा।
मेह गाजइ, जाणे नाल गोला वाजइ, दुकाल लाजइ, सुकाल वाजइ, इद्र राजइ, ताप पराजइ।
वीज झबके, मेह टबके, हीया दबके, पाणी भभके, नदी उबके, वनचर लबके, आभो अबके।
बोलइ मोर, डेड करे सोर, अंधार घोर, पेंसइ चोर, भीजइ ढोर।
खलके खाल, वहै परनाल, चूये माल, साप गया पयाल।
झड़ लागी, लोक दसा जागी, घर पटे, लोक ऊचा चडै। आभा राता, मेह माता।

२. एता किसी काम का नहीं—

ऊनालानो मेह, दासीनो नेह, रोगीनो देह, स्त्री विण गेह।
पर घरनी आसि, कठ विहूणो रासि, अवसर विना भास, कुकुलनो दास।
फूसनी आग, जमाइनो भाग, काचो ताग, पाणीनो साग।
दीवानो तेज, दुरजननो हेज। जुवारानो वैपार, राडनो सिणगार। पावइयानो प्यार।

---

१. अथ पुन वाग्विलास ग्रन्थाइ भोजन युक्ति कथ्यते (पंचम व्याख्यान)

३ विशेषताएँ—

प्रथम पिंड पाणीरो, रूपो तो भावररो, दरसण तो परमेसररो, ताल मानसरोवररो, हस्ती तो कजली वनरो, पदमणी तो सिंहल द्वीपरी, चतुराई गुजरातरी, वासो तो हिंदुस्तानरो, स्वाद तो जीभरो, मतो तो पचारी, खेती तो बादरी, घीणो तो भुसरो देणो तो माथारो, गाल तो माताररो, चूडा ग्लररो, प्रादि २।

४ ये वस्तुएँ भली—

प्रमन म्वारा भला, खण्ग धारा भला, हेत मारा भला, घात पारा भला हाथ वहना भला, माल खरचता भला, दान मानसू भला, काया पानसू भला। साहिब जससू भला, खत नीचा भला। घर ऊंचा भला। राणी, पाणी पातला भला। ग्रमल जोरका भला। निसाण घोरका भला। इत्यादि।

७—सभा शृङ्गार

इस प्रति की प्राप्ति के पश्चात 'सभा शृङ्गार' नामक ग्रंथ की एक प्रति सं० १७६२ में महिमा विजय लिखित ७५६ श्लोक परिमाण की मिली जिसमें पूर्व प्रति से वर्णन बहुत अधिक व सुन्दर प्राप्त हुए। यहा उसम से दो चार वर्णन दे कर हमें सतोष करना पड़ता है। वसे इस ग्रन्थ में बहुत से वर्णन पाठकों का मनोरंजन कर सकते है। वर्षा का वर्णन इसमें दो बार आता है। जिसमें पहला वर्णन उपर्युक्त प्रति जैसा है पर अधिक विस्तार से है। दूसरा वर्णन इस प्रकार है—

१ वर्षाकाल हुउ, वहितो रहिउ कुमउ, वावि पाणी भरता रया। वादल उनया।
मेघ तणा पाणी वह, पथी गामइ जाता रह। पूर्व ना वाजइ वाय लोक सहु हर्षित थाय।
आकाश घडहड खाल खडहड। पक्षी तडफडइ, वडा माणस लडथडइ,
काठ सडइ, हाली हल खडइ। आपणा घरि वादम फेडइ बीजा काज मेडइ।
पार पार न लीइ, साध विहार न करीइ।
अनेक जीव नीपज, विविध धान्य ऊगज। लोकनी आस पूज, गाय भस दूज। इत्यादि।

२ धनी और निर्धनी का अन्तर—

निर्धनी वर्णन

ऊंचो तो एरड, साटरो तोहि नाग, घणो बोलो लाफु, बहु बाले नो लबोल। घणु जीमे तो भूखो, थोडो जीमे तो अभोगियो। भला वस्त्र पहिरे तो इतर, सामान्य पहिर तो दरिद्री। गोरो तो पाडु रोगियो, काला तो कबाडी। व्यापारी तो भडङ्ग, बील तो सचधन बाह्य, विषयहीन तो नपुंसक।

धनी वर्णन

ऊंचो तो अर्जुन बाहु, वामनो तो वासुदेव, गोरो तो कदप, काला तो कृष्ण, घणो जीम तो बहारी, थोडा जीमे तो पुण्यवत ऊंचा वस्त्र पहिरे तो राजदवर, सामान्य पहिरे तो गूमा, दाता तो वर्णविनार, जो न दे तो दाना पुण्य करइ, घणो बोल तो बोनो, न बाले तो मितभाषी, जो सग्न तो भोगी, जो नपुंसक तो परनारी सहोदर।

३. प्रभात व सध्या वर्णन–

प्रभात

हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीदथी डोल्या ।
नीदइं झकोल्या, मूत्री सभोगनी लोल्या, स्त्री भर्त्तार डमडोल्या ।
आवइ नारि, वारि उघारि, राति अधारि । दही सभाल्यू, विलोवणो घाल्यू ।
रातिज दीसै छै, घटी पीसइ छे । इतरइ सख वाग्या, झबकीने जाग्या ।
तितरई झालर वागी, स्त्रियो पण जागी, उठवाने लागी ।
मुहडे बोली–उठो भाई ! जागो भाई ! राति विहाई ! प्रह पीली थई !
राति परी गई ! चडकलड़ी चहचई ! मालण वाडी गई !
नोवत गडगडे छै, पारसी भणे छै, खुदा खुदा करे छै ।

संध्या

सूरजना किरण पच्छिम ढल्या, पथी सगा नइ मिल्या ।
विरहीना हीया वल्या, गोवाल घरे वल्या ।
चौपूं लाव्या, आप आपना घरे आव्या ।
पंखी टलवल्या, माले जावा ने खलभल्या, चोर सलसल्या, आवइ हलफल्या ।
आकास राता, मेह करि माता । क्या किण नीला, क्या किण पीला ।
नाना प्रकारना रग, भला सुरग । वावै अनग, जगी करै जग, भोगी पीये भग,
स्त्री वछै सग । आदि ।

४. शीतकाल वर्णन–
भोगी भमरनै प्यारो, जोगीश्वरानै न्यारो ।
महा टाढो, वाजइ गाढो, जावानो नही मिले किहा साढो ।
दाहे रुख वाल्या, सज्जन ही साल्या । स्त्रीसूं घणी गोठ, खाना लाडू सोठ ।
वासइ सगडी धखइ, अवल चीज भखइं, ठारे करि ठर्‌या, हाथ सोडमें धर्‌या ।
हाथे न लेवइ वस्त्र, आवा ओढै वस्त्र । लोक सीसिआट करइं, चौपू उछरइ, ताढइ न चरइं ।
धूजे बालगोपाल, विरहीमा पडइ हवाल, सहु वैठा चौसाल,
साचव्या देहरा नइ पोसाल, एहवो सीतकाल ॥

५. उनालो–
गयो सियालो, आयो ऊनालो । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै, पग दाझइ छै ।
तावड़ो तपीजइ छै । पथी पसीजइ छै, चन्दण घसीजइ छै ।
रुंख पात झड़इ छै, पणिहार पाणी माटइ लडइ छै ।
वाव कूवा सूके छै । पथी मारग मूकै छै, कंठ सूकै छै । आदि २ ।

६. अधारी रातरो वर्णन–
साझ परी गई, गुदडी परी थइ, दीवइ जोति भई ।
चोहटइ भीड मिटी, व्यापारीनी महिमा घटी, हाटइ ताला जडइ ।
आप आपरै घर आया, कूंची लाया । स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जारने भजै ।
हाथे हाथ न सूझइ, कोई कोने न वूझइ, विचार माणस मूझइ ।
चोर ते धसइ छै, कूतरा ते भुसइ छै ।

७ वस्तु स्वभाव–
चद्रमाने कुण शीतल करइ अग्निने कुण दाह करइ ।
दूधने कुण धोले छ, समुद्रने कुण हिलोले छ ।
मयूरपक्षन कुण चितर । लक्ष्मीने कुण नोतरे, गंगोदक कुण पवित्र करे ।
हंसने गति कुण सिखावे, वृहस्पतिन कुण वचाव । कृपगुन कुण सचाव ।
तिम सज्जनन स्वभावे जाणवा ।

८ शोभा–
कुल वहू ते शील शोभ, रजनी चन्द्रमा शोभ, आकाश सूय करि शोभे,
वदन वदन शोभे, कुल सुपुत्रे शोभ । वटइ राजा शोभ, इत्यादि ।

९. न शोभे–
जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कण्ठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन,
फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक । वेग रहित घोडो, केस रहित मोटो,
वस्त्र रहित सिणगार, स्वण रहित अलकार । इत्यादि ।

१० पणिहारी–
यहरानी भीड, हुई पीड, तुटई चीड ।
एक उतावलि दोडइ छ, एक मायइ वेहड, चडइ छ, लूगड ते माथे ओढ्ई छ,
वहड ते फोडइ छ । एक एक नइ अटइ छ धकाधड पडइ छ–मांहो माह लडइ छ
हुवइ नानी लाडी, चीकलथी पडइ आडी, बीजानी भीजइ साडी, ते माट करइ राडी,
सोक सोक्नी करइ चाडी ढील जाडी, खीजइ माडी, सासूइ पाछी ताडी ।
एक पणिहारी भमरइ छ, वाता ते करइ छ, निजर ते भरइ-परइ फिरे छ,
एक एक नइ हस छ, पाणी मांह धस छ । आदि ।

३–मुक्तलानुप्रास

उपयुक्त प्रति प्राप्ति के पश्चात् दो वष हुए जसलमेर के जन ज्ञान भडारों का पुनरावलोकन करने के लिय जाने पर वहा यतिवर लक्ष्मीचन्द्रजी के सग्रह की अपूण प्रतियों में १६ वीं शताब्दी के लिख हुए ८ पत्र प्राप्त हुए, जिनमें १०८ वणन लिख हुए ह। इनमें से कुछ वणन सस्कृत भाषा में ह पर अधिकाश राजस्थानी में ही ह । यहा इन प्रति से भी कुछ वणन उद्धृत किय जा रहे ह । प्राप्त वणनात्मक प्रतियों में यह सबस प्राचीन है ।

१ रसवती वर्णन–
उपसइ मालि, प्रसरइ शालि । भला मडप निपाया, पोयणी न पाने छाया ।
केसर कुकमना छडा दीधा । मोतीना चोक पूर्या ।
ऊपरि पच वर्णा चद्रवा बाध्या अनेक रूप आछी परियछीना रग साध्या ।
फूलाना पगर भरया, अगरना धूप सचरया ।
पान गादी चातुरि चाकला, बइसण हारा बइठा पातला ।
साध्या पाट, गेलाव्या आगनि पाट । ऊची धाडणी भलकती कुडली ।
ऊपरि मनाव्या सुविसाल थाल, वाटा वाटनी सुधणमई कचोली ।
रूपानी सीप मूकी, इसी भांति मूकी । आदि २ ।

फिर विविध रसवतियो के नाम है। इसमे प्राचीन खाद्य-पदार्थों के नामो की विस्तृत विगत मिल जाती है।

२. विरहिनी–

किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करउ अनास्था।
सर्व सिंगार, मानि अंगार। तिणइ अवला (अंतर्गत) फूना कीधा वेगला।
चंद तपइ पान, थया विसवान। विरहानल प्रज्वलइ अंगु, सखिजनसूं विरंगु।
एहवऊ काई थयू विग्र चित्तू, न वुलगई गीत्तू। न कुण हीसूं हूंसइ, सदा नीससइ,
बोलावि खीजइ, दिहाडइ दिहाडइ देह सीजइ। आदि २।

३. वर्षा–

आसाढ समाढु मेघ आव्या, कुणइए नइ मनि उछरगि न भाव्या।
कालविणी वली, जगत्रइ नइ मनि रली। उत्तर वाय वाज्या, आकाश मेघ गाज्या।
कूडा वहूक्या, केवडा महक्या। कुंद उलस्या, करसणि हरख्या।
आंब महमह्या, मयूर गहगह्या। बप्पिहा रामइ, विरहणी उमामइ।
वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेसनी वाट भांगी।
जल भरिया निवाण, पृथ्वी प्रवर्ती मेहनी आण। आदि।

४. हेमंत ऋतु–

अति वसतु, आवियो रितु हेमंतु। जिहां सीयना भर, सेवइ निर्वात घर।
तुलाइए पुढीइ, भली तुलाइ उढीइ। अति ही मोटी, प्रलेव दोटी।
ओढि वेसइ, सीयाल हुई हसइ।

शरद ऋतु–

उन्हाला नउ भाई, अनिलेइ वेस्वानर नइ अगू काई न जाणीइ।
किहाई हूतउ, दिसि सप्रकास शरद ऋतु पहुतउ। फूल्या कास, अगस्ति ऊगउ। आदि।

५. वसंत ऋतु–

विरहणी हसतु, पुहतउ वसतु। फूलइ वणराइ, नगर माहि न फिराइ।
मेल्हइ वैराग, खेलइ फाग। अति सुविसाल आंबानी डाल।
तिहा वांधहि हिंडोला, रमइ नर भोला। आदि।

६. ग्रीष्म ऋतु–

महा पुत्र नउ आलउ, आव्यो उन्हालउ। लूय वाजइ, कान पापडि दाझइ।
झाझूआ वलइ, हेमाचलना गिखर गलइ। निवाणे खूटइ नीर, पहिरइ आछा चीर।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ। वाइ वाजइ प्रवल, उडइ धूलिना पटल।
सीयालइ हुन्ति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि। सूर्य आपण पइ तापइ, जगत्र संतापइ।
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अनुसरइ।

७. कलिकाल वर्णन–

इणइ अवसर पिणी कालि, समइ समइ अनंत गुणि हाणि।
रस निरस्वाद, लोक स्तोक मरयाद। अविवेकु वासु, धर्मवत नासु।
अतुच्छ मच्छर, करकस स्वर, तुच्छ धर्म रंगु, गुरुजन प्रससा भंगु।

सुकृत करणे प्रमादु, बहु मृषावादु। साम्प्रति वर्तइ इसउ कलिकालु जिहां का नहीं कृपालु।
दरसण उच्छद्धलु। आयजन स्वल्प, घणा कुविकल्प।
बहु भाराक्रांत देस मडल, पृथ्वी मद फल। साधुलोक आकुल, राजा लुब्ध बल। आदि २।

यह प्रति अपूर्ण प्रतीत होती है। किनारे में ग्रन्थ का नाम "मुत्कलानुप्रास" लिखा है जो ऐसी रचना का सायद प्राचीन नाम प्रतीत होता है।

४-वर्णनात्मक बड़ी प्रति

जैसलमेर से आते समय बड़ौदा युनिवर्सिटी के गुजराती भाषा के प्राध्यापक डा० भोगीलाल सांडेसरा मेरे साथ बीकानेर आये। साहित्य गोष्ठी के प्रसंग में जब ऐसी रचनाओं की चर्चा चली तो आपने भी ऐसी एक प्रति मिली बतलाई। मैंने तत्काल उनसे मंगवा कर प्रतिलिपि करवा ली। उपलब्ध प्रतियों में यह सबसे बड़ी है। इसके ४० पत्र हैं। फिर भी अपूर्ण है। लेख विस्तार भय से इस ग्रन्थ के विशेष उद्धरण न दे कर कुछ वर्णन ही दिये जा रहे हैं—

१ अथ भाद्रपद मास, पूरइ विश्वनी आस। लोक नइ मनि थाइ उल्लास।
जिणइ आगमि करसइ मह न मावइ पाणीनो छेह। पुनरपि थाइ देह।
भला हुइ दहीं, करीन्यां कोई करे नवि सही। पृथ्वी रही गहगही।
साथइ कादम मावइ, करसणि भावइ। नीपजइ सातइ धानि, देवनां अपान।
भागइ दुकाल भाग्ये वडइ सुगाल। आदि।

२ गंगा पाखइ जल नहीं, धणु पाखइ बल नहीं।
मित्र पाखइ दुख नहीं, रवि पाखइ तेज नहीं।

पुत्री जन्म—

३ जउ पहिलइ बेटी आवइ माइ बाप काल मुहा थावइ।
अंगु घर थी आवी, बुद्धि सांपि किआ आवी।
बेटी घर मम्हो पाउ थावइ, चण्डि काटि निघाइज।
जा हुई थालि ताउ हुइ सालि थालि।
हुई वडरी, पइ पनरा वेरी। अवाटइ चालती वहू करावइ हांसती।
कुल कलक आणइ अन्तूरी करि नामुहि लागइ।
धारण घर तामस पिरयु घर शोषण। पारणु कुल ईगल दिराबु भूमइ।
मनइ म गूमइ, माहमण मपमान करा। म जाइ बेटा, भलज्य वालि भली।

५-महत्त्वपूर्ण अपूर्ण प्रति

उपर्युक्त प्रति के बाद जोधपुर के केशरियानाथ के भंडार का अवलोकन करते समय एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई जो १७वीं शताब्दी की लिखी हुई है। इसमें १२७ पत्र पूरे और १२८ वां अधूरा रह गया है। कई स्थल बड़े ही सुन्दर हैं। पर स्थान-संकोच कारणों से ऐसे का कोई उद्धरण नहीं दिया जा सकता—

१. कलिकाल–

सम्प्रति वर्त्तइ कलिकाल, महा कूड कपट काल ।
चाड चवाड़ साक्षात् हलाहलि, सासु वहु परस्पर कलि ।
गुरू शिष्य जाइ खाव वलि, अन्याय कुरीति देश मडलि ।
राज कुल रूधा खलि, राय राणा वर्त्तइ छलि ।
क्षत्रिय नासइ दीठइ दलि, भला माणस हुइ तातलि ।
पृथवी मद फल, मन्त्र सत्रै नि फल, जडी मूली रस विकल ।
कुल स्त्री निरंगल, न्यायी राय तुच्छ दल । चरड वहुल, वाट पाडा तणा कलकल ।
धर्मगुरु चपल । पापोपदेस कुसल ।
मिथ्यात्व निश्चल, लोक माया वहुल, अल्प मंगल ।
इणि कुकालि, अवसर्पिणी कालि । अल्प क्षीर गाइ, निस्नेह माइ ।
भक्ष भोज निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद ।
रहस भेद, रसच्छेद । क्रूर सचना, गुरु वचना ।
आउखा स्तोक, निवाणिजा लोक । देव वातली, भक्ति पातली ।
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्यु ।
वाप वेटी तणा गरथ सातइ, आपणा छोरू कुखेत्रि घातइ ।
पाप जउ, धर्मी खउ । माचउ अवगणियइ, झूठउ वखाणियइ ।
गुरु शिष्य तणउ खमइ, वाप वेटा नमइ ।
सासू पाटलइ, बहु खाटनइ । ए कलि तणा भाव ।

२. विरहणी–

हार त्रोडती, वलय मोडती । आभरण भाजती, वस्त्र गाजती ।
किंकणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती । वक्षस्थल ताडती, कचुउ फाडती ।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तलि लोटती ।
आसू करी कचुक सीचती, डोडली दृष्टि मीचती । दीन वचन वोलती, सखीजन अपमानती ।
थोडइ पाणी माछली जिम तालोचलि जाती, शोक विकल थाती ।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोयइ । क्षणि हसइ, क्षणि रूसइ ।
क्षणि आक्रन्दइ, क्षणि निंदइ । क्षणि मूझइ, क्षणि वूझइ ।
तेह तनु, सतापइ चदणु । कमलनाल, पुण मेलइ जाल ।
चद्रकाति ज्वलइ, पुष्प शय्या वलइ । हार भावइ अगारु, कदली हर, मानइ जमहर,
जे जल सीकर, ते उद्वेग कर । जउ शीतलोपचार, ते करइ विकार ।
इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, विरहानल नीपजइ ।

३. युद्ध-वर्णन–

बिहु पखा वृहत् पुरुष सांचरिया, क्षेम मूडाविइ ।
बिहू गमा सनद्ध-बद्ध नीपना, सुभटे जरहि जीणसाल लीवी ।
मयगल गुडिया, मं डादडि सुहवडि घातिया ।
पच वल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरंगम पलाणिया ।
वीर पुरुष महासुभट प्रगुण नीपना, चक्रव्यूह, गरुडव्यूह तणी रचना नीपना ।

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible], [illegible]-[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ ११४ ॥

४ [illegible]—
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ ११६ ॥

५ [illegible]—
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

[illegible]

चुकी है और जिनसमुद्रसूरि और शांतिसागरसूरि संबधित १६ वी शताब्दी के वर्णन 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित हो चुके है।

ऐसी ही कतिपय वर्णनात्मक रचनाएं चारण कवियो की प्राप्त होती है जिनमें से खिड़िया जगा की 'रतन महेशदासोतरी वचनिका' एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है और 'खीची गंगेव नीबावतरो दोपहरो' और 'राजान राउतरो वात वणाव' राजस्थान पुरातत्त्व मंदिर से प्रकाशित हो रहे है। ये दोनो भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

राजस्थान मे लोकवार्ताओ को कहने का ढंग भी बहुत छटादार, वर्णनात्मक, तुकान्त और निराला है। उसमें वर्णनीय प्रसंग साकार हो उठता है। वात कहने वाला जहा जहा भी प्रसग मिलता है उसका वर्णन वडे ही विस्तार से प्रसंग के अनुकूल करके श्रोताओ को अपनी ओर ऐसा आकर्षित कर लेता है कि वे अन्य सारी वाते भूल कर वात सुनने के रस में निमग्न हो जाते है। श्रोता रातभर उसी रस मे सरावोर रहता हुआ समय का अन्दाजा भूल जाता है और कहानी-कार छोटी सी वात को इतनी लम्बी और छटादार बनाये जाता है कि जिससे कई दिनो तक वह वात चलती ही रहती है। शहरी वातावरण अव इसके अनुकूल नही रहने से राजस्थान में वातो के कहने की जो विशेष शैली थी, अव लुप्त होती जा रही है। रसिक व्यक्ति गावो मे आज भी इसका रसास्वाद कर सकते है। प्रस्तुत लेख द्वारा विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाने वाली इस वार्ता शैली और बातो को चिरस्थाई बनाने के लिये ध्यान आकर्षित किया जाता है। गुजरात में लोक-साहित्य और वार्तादि के संग्रह का जैसा अच्छा प्रयत्न हुआ है, राजस्थान के साहित्य-प्रेमियों के लिए भी अनुकरणीय है।

प्रस्तुत लेख मे जैसी वर्णनात्मक रचनाओ का परिचय दिया गया है—खोज करने पर और भी कई रचनाए मिल जाने की पूर्ण संभावना है। जैसा कि पहले कहा गया है उपलब्ध प्रतियो मे तीन महत्वपूर्ण प्रतियें अभी अपूर्ण रूप मे उपलब्ध हुई है। उनकी पूर्ण प्रतियें भी अन्वेषणीय है।

ऐसी वर्णनात्मक रचनाओ के विविध नाम प्राप्त हुए है। वाग्विलास, सभाशृङ्गार, मुत्कलानुप्रास, वचनिका—ये पुराने नाम तो मिलते ही है। स्व० देसाई ने तुकान्त की विशेपता को लक्ष्य करते हुए इनकी सज्ञा 'पद्यानुकारी गद्य' शैली बतलाया है। यद्यपि १५ वी शताब्दी से पहले की कोई ऐसी रचना लोक-भापा में अभी तक प्राप्त नही है, पर पृथ्वीचन्द्र चरित्र में इस ग्रन्थ से पहले भी यह शैली प्रचलित रही होगी ऐसा प्रतीत होता है। १६ वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राजस्थान और गुजरात की भापा एक जैसी ही थी अत इन रचनाओ मे से सभाशृगार में गुजराती भापा का पुट अधिक देखा जाता है। प्रथम शुद्ध राजस्थानी में है और अवशेप तीन अपूर्ण रचनाओ की भापा दोनो प्रान्तो के लिये समान सी होने से इनका रचना काल १६वी शताब्दी ही होना विशेप सभव है।

—श्रीअगरचन्द नाहटा

खीची गगेव नीवावतरो

दो-पहरौ

गगेव खीची फाग भड़ा किंवाड़,
यैरिया जड़ा उपाड़
निगुनी मेल [illegible] घणाय,
सुणिया मन प्रमन थाय

परग्या रितु लागी,
विरहणी जागी
आभा भरहरे,
बीना आयास करँ
[illegible] ठेथा स्यावै,
स्पुटे न समावै
पहाड़ा पागर पड़ी,
धन उपड़ी
मोर मोर मड़ै,
[illegible] धार [illegible]
आभा गाजै,
गाज पाजै
[illegible] मेर नै दुयो हुयौ,
[illegible] दुनियारीरी आस हुयौ
[illegible] लागी,
प्रीति [illegible] मागी
[illegible] हरिवड़े,
[illegible] [illegible]री मिन करै

इसी समझयौ यगु रती है
परग्या महने रही छै
बिजळी मिलोमिल करने रही छै,
[illegible] झड़ लायी छै
सेहरा-सेहरा धीन चमकने रही छै
जाणै कुळटा नायका परसू नीसर
अग[illegible]याय दूसरे घर प्रवेस करे छै
मोर कुहके छै,
डेडरा बहके छै
आगरारा नाळा बोलने रहा छै
पाणी नाड़ा भरने रहा छै
घोड़ड़ियाळ [illegible]पने री छै
धनमपनीमूं चला लपन्नै रही छै
परमानरो पा'र छै
गाज-आवा'र दूयनै री छै
जाणै पटा पणे हरम्मू नसीम
मिलण आयी छै

इसे [illegible] मा[illegible]यौ
गगेव नीवावत यो'ै छै,
मनरी [illegible] लागे ?
मैन[illegible] गिरवारी दुयौ हुयौ छै,
माह [illegible]राय माहणियों हुकम

हुवौ छै

तयारी कीजै छै.

मन - जाणिया हथियार - पोसाख लीजै छै.

घोड़ा दही कटोळसूं संपड़ाइजै छै,

फेर उजळै पाणी नहाइजे छै.

हजार घोड़ा तयार कीजै छै,

चौकड़ा - लगाम दीजै छै.

सू घोड़ा कुण जातरा छै, कुण रंग भातरा छै ? — अैराकी आरबी तुरकी खंधारी ताजी सिकारपुरी धारी काछी माळवी हवसानी पूरबी टांघण पहाड़ी चिन्हाई — और ही अनेक जातरा घोडा तयार कीजै छै.

कुमेत नीला समंद मकड़ा सेली समंद, भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केला महुवा धूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्याण पवण गुरड़ संजाब संदली सीहा चकवा अवलख सिराजी.

फेर ही अनेक रंगरा घोड़ा तयार कीजै छै.

साखत जीण काढीजै छै.

तिके जीण किण भांतरा छै — गुजराती कसमीरी कमूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रंग-रंगरी वनात मुखमल कलाबूती सोनै रूपैरा वाणिया जीण हाजर कीजै छै.

जीण माडजै छै.

केसवाळी रंग - रगरी गुंथजै छै.

अगाड़ी — पछाड़ी खोलजै छै.

रेसमरी वागडोरासूं आण हाजर कीजै छै. ...... किसा हेक घोड़ा छै ?

वे पख भला, ऊचा अलला,

कटोरा नग्वा, आरसी सारीखा.

तिअंगल गाळा, मुठिया चील फळा.

निमंसी नळा, गोडा नाळेर फळा.

डर ढाल अैसा, कूकड़ कंध तैसा.

आंख पाणी मोती तवा,

लिलाड़का वेठा नवां.

जळ अंजळ पीवै,

कनोती लोय दीवै.

मगर लादक अछी,

छोटी पड़छी.

पूठ वाथां न मावै,

पूछी चवर ढावै.

फीचां धनख जैसी,

काछ नारगी तैसी.

अैसा घोडे राव चाकरांरै हाथांमें काढणा.

सू मोर ज्यूं तंडव करै छै,

निकुली ज्यूं अंग भांजै छै,

म्रग ज्यूं उलहसै छै.

भागा काला मांकड़ां ज्यूं झांकां भरै छै.

निरत कारण ज्यूं नाचै छै,

नट ज्यूं उळटां खावै छै.

डोरमे थका अेकी - वेकी करै छै.

आंखका गोसा सिन्वके जैसा.

मनका गगाजळ,

सुकलीणी ज्यूं छदां ऊजळ.

अैसा हजार घोड़ राव आण हाजर हूवा छै.

तठा उपरायंत गंगेव नीबावतका भाई - भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां

करै छै कसूमल केसरिया हरी सबज मपताल् सोसनिया नारंगिया सपेत

जाएँ निबाराकी जाडी फूली छै

ऊपर उमहीन रणता हथियार बांधने छै

तरवार कटारी ढाल छुरी तरगस बंदूक बरछी गिलोल गोफण चूकमार और ही भांत भांतरा आवध सभिया थका चौक पधारै छै

सू किण भांतरा छै —

फालगीरो फळस,

मनीरो नाळेर,

तोरणरा आम्बा,

कुंवारी घडारा वींद,

गालरा गाडा,

फौजारा लाटा,

कांचा कुंभ ज्यूं काचा जाएँ,

परायी छठी जागै,

रिहतो तज,भूलियो लोह लिया रहे,

काढ़ बांध निकळक

तठा उपरायत गंगेव नींबावत बाहर पधारै छै सू किण भांतरा छै ?

ऊगतो सूरज,

पाताळरा हाम,

कुवरापन कुंवर,

जळहर नवाथ भीगी भवर;

दसमारयो सिंघ,

मारियो सिप,

भीज गयंद,

दुरवासा आर्नेव,

अर्जुन ज्यूं साध,

दुरयोधन बांध

ग्यानरो गोरख,

सहदेव ज्यूं सारी बात समरथ,

अरजुन ज्यूं बाण,

करण ज्यूं दान पाण,

बत्तीस आपडीरो निवाहणहार,

बैरियां बिभाडणहार,

पर भोम पचायण,

धण न्यिण, जस लियण,

कळायरो मोर,

सूधै भीनै गात,

केसरिया पौसाख किया, पाच हथियारां बांधा आण घोडे असवार हुवे छै

नगारै डंक दयो लागो छै,

मीर सिकारानै हुक्म हुयो छै

बाज, जुररा, जुही, बहरी, सिकरा लगड़, चिपक, तुरमती साथ लीनै छै

चीतेवाणानै हुक्म हुयो छै

चीता साथ लीनै छै,

घोडारी पूठ तख्ता ऊपर बैठा छै

आंख्यां आडी फूल्है छै

मखमलतरा पटा, रूपैरी मयर बद्धी, रेसमरी डोर

किंठ चीता कठारा छै ? सदोरा, आबोरा, दरावरा, रारा, धरैर पहाड़ारा, ईडरा डूंगरा, आलारा पहाडारा, पावरा धड़ारा, पारकरा सिंदारा इसा चीता साथ मंगै छै

स्वरां हुक्म हुवै छै सुसारा हार हुवै छै लाहोरा सारी सर बागु गिलसा पाडी बिसारी सूरदय मोर नाळ, हाथ भर सर, धरै बाज किसा

[illegible]. [illegible] [illegible]. [illegible] पंजा. [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] जाहै [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] पटा. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवा छै

[illegible]

[illegible]

प्याला. दकणी. लोटा, पाला. बाजोट. और ही सब तरहरा गाडां घात जै छै.

तठा उपरायंत मोतियांनै हुकम हुवौ छै. भूंजाई माह सारी ही वसत सीधो सीदाण देवयार परव लेव राती-नाडी चालज्यो. [illegible] [illegible] रस उण नाही आया छा. सु मोती भोई तो पाथरा नाडीरै मारग नजीर हुवा छै. आप रसगैर मारग आवयानैं लुटारै मारग चालिया छै. [illegible] पोटांनु जमी गूंज रही छै. [illegible] थोरी आकासनै जाय लागो छै. [illegible] [illegible] बाज रही छै. [illegible] [illegible] [illegible] हुवनै रही छै. घड़ लिगांरा [illegible] जगांरो [illegible] हुवनै रह्यो छै. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवनै रह्यो छै. [illegible] हुवनै रह्या छै. [illegible] [illegible] [illegible] हुवनै रह्यो छै. [illegible] [illegible] [illegible] हुवनै रह्यो छै. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रह्या छै. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. सु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवनै रही छै. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छै.

[illegible]

करवानका ऊपर जुररा छूटै छै तिलारा ऊपर वासा छूटै छै लवा ऊपर सिकरा छूटै छै वटेरा ऊपर तुरमती छूटै छै बोवड़ा ऊपर चिपरू छूटै छै कुरजा ऊपर लगड छूटै छै कुलगा ऊपर कुही छूटै छै इण भात देसौत राजेसर सिकार खेले छै

घोडा दौड रह्या छै होमरा हगामो हुय रह्यो छै जितरै बीच थोहर भाडारा निडा माहा खरगोस उठिया छै सू किण भातरा छै ? मोटा पेटा छै तोनडिया छै घणौ लीलै जड़ी-बूटीरा चरणहार, पाहरै पाणीरा पीवणहार तिका ऊपर कुतारी डोर छुटी छै बाठ बोमा बूटै छै घुचली खाय रह्या छै ठुलीरी, गोफणरी, तीरारी चोटा हुय रही छै के घोडा आरडै छै घोडारा पगासू काकरा-पथर उछळै छै

इतरै बीच हिरणारा डार आय नीसरै छै तिके किण भातरा हिरण छै ? काळा यडा वेगड छै, सुहडारै डारमे मेघ हुय रह्या छै माहे राग छै जिके कूद-उछळै छै, रीगटा हिरण छै, [illegible] आइ हिरणीनै घेवता फिरै छै सनळो हिरण निगळैनै घेचे छै इण डार करोला मुहडै आगै आण काढियो छै तिका ऊपर चीता छूटै छै कुलफा दूर कीनै छै तमासो वण रह्यो छै

इसै समइयैम मालुवा आण अरज कीनी छै भानरारा सुहा वेहडा माहा सूअर नीचा उतरिया छै राजाना दमोता सूमरा सामी वाग लीनी छै फड़फड़ा फुरयदाया जावै छै इणमे सूअर नचरा पडै छै सू सूवर किण भातरा छै ? भूरा, कवळा कैई अवलरा छै डार अेकै पासै छै अेकल अेक तरफ छै सू अेकल किण भातरो छै जैरो वारह आगळ मग लीडीन्ट छै, वाघो-पूठ अेक मारणो छै गुळवाड गोहू जव चिणारो, जुवाररो चरणहार छै मयमत छै सू चर चर फरणिया आया छै माछुवारा सताया थोहरनै भाडरा निडा बुरजमे छै धूड वाहै छै सू जडा समेत उखाड नाखै छै इसा सुवरारा मोरा ऊपरा राजाना घोडा लगाया छै वरछियारा धमोडा लाग रह्या छै चूकमाररी खाटखड लाग रही छै कैई घोडा सुवरारा तूडासू उछळ परै पडै छै तरवारा वहि रही छै कटारी वहि रही छै कैई सेल्ह तूटै छै कैई आधो सलै छै सुवर मारजै छै उठा ऊपर घातजै छै

इसै समइयैमे धूप तपै छै रातरा अमलारी खुमारिया देसौता राजानानै निल लागै छै तद नाडी साम्ही वाग वाळी छै सिकार मरव अेक ठोकर रहकला ऊठा ऊपर घातनै छै होम माणण तळाव आया छै

तिको तळाव किण भातरो छै राती धरहीरो पाडरो नीर पवनरी मारियौ फीण आछटतो थको भोला खाय रह्यो छै लहरा लियै छै अथग डोर छै कड़िया सुधै पाणीमै पैठा पगारा नग भागै छै दूधरै भौळाधै तिलाव वामीनै छै ऊपर कुजा, मारसा गहकनै रही छै टेडरा

घडियोडा, रूपैरा मोनेरा नकस छै फोफलिया रूपैरा लागा छै फळा ऊपर बनातरा मुखमलरा चकारा लगायजै छै

तठा उपरायत तरगसारा कुलावा छूटै छै सू तरगस कुण भातरा छै? लाहोर कसूररी घणी ठाजी, घणी बनातमे लपेटी थकी, घणै कलाबूतसू गूंथी थकी, रूपैरी सुहरी कुनडी जीभी लागी थकी, तिके ठाजी साठ साठ तीरासू भरी थकी तिके किण भातरा तीर छै? गुजराततरी नीपनी साठी, गाडे गाही, सात नार सचै मारी, लाल स्याह रंग, गजवेल नाळैरा पैगाम छै, ऊपर सोनैरी नकस छै, खुरसाणरा उतारिया, माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपैरा माना छै, पीलळ ताबैरा छला छै, नातरी चौस्डी छै, तिलीररा परारा छै, नातरा सुफाळा छै, सोनैरी हळ लिखी छै, नचमूठरा तीर छै इसा तीरासू ठाठा भरिया थका सू उणहीज नडा पीपळारा दरखतासू नागळजै छै

तठा उपरायत कमाणा कुरमाणा माहे मेलजै छै तिके कमाणा किण भातरी छै? नारै बरम दरियाना माहि जहाना हेठै नधी ऊपाड चिलेवाड हकारा करती गुण-भार वकी अढार टके असली जानी पठाणरी बेटी ज्यूं तुही तुही करती थकी, थलोघणी ज्यू लचकार करती थकी, इण भातरी कमाणा उणहीज दरखतारी सारवासू नागळजै छै

तठा उपरायत ढालारा अलीनध खुलै छै सू ढाला किण भातरी छै सिलहटी छै सुध गैंडारी आरणारी छै घणारी मारी वधै छै बारहै महीना सचै मे रहै छै मोहर तोलैरो रोगान रंग लागो छै तरवार कटारी बरछीरा नाव ही न लागै छै सुवररी नातरी लागै तो पण रडक न ऊतरै गोळी लागै तो उछळ पाछी पडै मोनै रूपैरा चाद फूल, मुखमलरी गादी, साबरा हथीसा, चोबदाररी डाना कसा इण भातरी ढाला सू उणहीज दरखतारी सारासू नागळीजै छै

तठा उपरायत तरवारियारा कमसारिया खुलै छै सू तरवारया किण भातरी छै? सीरोहीरी नीपनी, वे आ अगला बाद केरिया थका जनैत मगरेब पुडतनाळ सेफ बिलायती गुजरी निराणपुरी हबमानी फिरंगी सू म्यान माहा काढ घाममे नाखजै तो पाणीरै मौळानै जनावर तृण बाहे नगतरमें बाही नीय टूक करै धौरगमे बाही थकी मीनसिरो चलणिया सार नाढै लोहमे बाह्या थका नालछो ही न पडै मू घणी मुखमल बनातरा म्याना माहे लपटी थकी, घणी मोनै रूपैमे जडी थकी, घणी बुलगारे साजम लपेटी थकी, उणहीज नालारा गडगनामे मेलजै छै

तठा उपरायत कमरस्यारा कमर बाँधा ऊजै छै सू कटारी किण भातरी छै? निराणपुरी, रामपुरारी, नूनीरी, राजासाही, आहारी, अढाई, मोगलीरी, बेतारजानी, पाहानीभी, घणै सोनैमे मकोळी थकी, नव नगा रावास भरी थकी, उणहीज

सेल्हां वाफ्तांरा कमरबंधांमें लपेटी थकी, उणहीज ढालांरी आंचांमें मेलजै छै.

तठा उपरायंत पेटीरा कसा छूटै छै. सू पेटी कुण भांतरी छै? असल दाणांदार बोयदाररी छै. तैरी खसखोयरा लिया भंवरा गुंजार करै छै. बीस-बीस पांवडां खसखोयरा डोरा छूटै छै. जाणै गांधी हाट पसारी छै.

तठा उपरायंत वागांरा चिहरबंद छूटै छै. सू किण भांतरा वागा छै? सिरीसाप भैरव 'चौतार कसबी महमूदी फूलगार अध-रस सेला वाफ्ता होरिया मोमनी तनजेब सासाहिबी तरै-तरैरै कपड़ैरा वागा छै. सू उतार-उतार उणहीज दरखतांरी साखा ऊपर डरळा कीजै छै.

तठा उपरायंत चरणांरा गिरदाना मोकळा कर जाजमां गिलमां ऊपर बैसजै छै. पावां लपेटा उतार ढालांरा गड़गदांमे राखजै छै. वाफ्तांरा सैलांरा रूमाल केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजै छै. बीझणांसूं वायेरा लीजै छै. सू किण-भांतरा बीझणा छै? लाहोररा कियाड़ा छै. रूपैरी डांडी जरीसूं मढी, टुकड़ीरी झालरी. सू वणी थकी खवास-पासेवाणांरै हाथ छै, फरास वडां फरासी पंखांसूं वायेरो घात रह्या छै. मातै हाथी ज्यूं हींड रह्या छै. तीन भांतरो पवन वाज रह्यो छै—सीतळ मंद सुगंध. गरमी मिटायजै छै.

तठा उपरायंत राजानां मलूक कुंवरांर साथ सारू कलालीरो हुकम हुवो छै. तिजारो मंगायजै छै. निको तिजारो किण भांतरो छै? तासगीरी आड़ीरां नीपनो डकनीम ताड़ीरो, नाळेरमो मोटो, खोपरा वडरो, गरीरै दळरो, हाथसूं छूट पड़ै तो काचरी सीसी ज्यूं किरचा-किरचा हुय जावै. पाणीमें घातियां थकां टहि जाय. इण भांतरो तिजारो सू गोरी भूवरियां पुंहचांमूं दुजण माह्यां कटोरांमें भजा जुवान मचकावै छै. चंवडी गळणीमूं खिची चाढ छाणजै छै. ऊजळा रूपोटांमे घात मुनहारां हुयनै रही छै.

तठा उपरायंत अमल मंगायजै छै. सू अमल किण भांतरो छै? थेट आगरा ही काळू केकीनरो नीपनो. भूरो थटाई अरोड़ी नहलिया भोजपुरावटी. सू आगराही अमलरी चकी वंक्यां छुरयांसूं मिरोवढ कीजै छै. केसरिया पोतां रूमालांमें घातजै छै. अरोड़ी गाळजै छै. भोजपुरीरा पला कीजै छै. मुनहारां हुयनै रही छै. अमलांरा जमाव कीजै छै. अमलांरा तंडल रोपजै छै. अमलांरी नीवां दीजै छै.

इसैमें भांगेसुर मंगायजै छै. सू किण भांत छै? केसररी क्यारी दोलळी, वासग-माथारी. थोहररा विड़ारी, भाखररा खुड़ारी, भूरै मोररी, काळै पानरी, आवूरा विहड़ांरी, भमरमार मिरधमाळ लरियाळ चिड़ियाळ चोटड़ियाळ. अेक पान अडगरियां पान अेक पान अहमदावाद. पान-पानरो रस लीजै छै तिण भांग सारू मसाला

मगायजै छै जायफळ लाग इळायची मिरच विरहाळी अजू नागकेसर अमरटटी तज तमालपत्र तनोल प्रत सबी और ही मसाला मगायनै छै मिश्री कालपी गगापारसी मगाय फोरा घडाम भिजोयजै छै

तठा उपरायत इलरारी कूडी तेजवळरो घोटो धोय तयार कीजै छै भागण थीण मोकळा पाणीसू धोयजै छै फेर कोरी हाडीमें राधजै छै तठा पछै घोटजै छै भला मोटियार होमनान जुवान नणावै छै नेवडा गळणासू मचराय काढजै छै इसी जाडी नादजै छै मावै टीवो काढजै तो नीसरै, पवनरी मारी मींक ठाहरै इण भातरी भाग काढ तयार कीजै छै कसूंबान् दोसताक पवन करै छै मू रूपोटामें लिया चनास पासेवाण हाजर करै छै मुनहारा हुवै छै देसोत आरोगै छै अमला चाव हुयनै छै

तठा उपरायत जागडियानै हुकम हुवौ छै मू भजन ख्याल गावै छै माता हाथी गजराज पटामर ज्य भोला खावै छै सहनायची सहनाया माहे मारग वणायो छै

तठा उपरायत सिरदारा देसौता तळावमे भूलणरी हास करै छै लाल लागोरी पोता पहरजै छै घडनावा वणायजै छै सू लै तळावमे पडजै छै हामो तमासो कर रह्या छै, मार्थरा जूडा केसारा छूट छै सू किसा नजर आवै जाणै काळा नासग तिरै छै जळ डोहि रह्या छै जाणै रेवा नदीरै हाथ डोहळ रह्या छै इणी समइयौ जणनै रह्यो छै जिसैमे पाणीमे तिरता मुरगाबी नजर आवै छै तिणनै सिकारै पगा वदूका गिलोला मगायजै छै मू वदूका किण भातरी छै? गगा-पारसी, सीहतन-समियाणैरी लाहोररी करनाटकरी फिरगरी थम्गरी घणी सोनै रूपैमे गरकाव कीवी थकी नकसनार जाणै गोडियै नागण लाची कीवी छै दूसरो वीनरो मळाय सीसू पीळियै दुधैरी लकडीरा कुदा छै रूपैरी तारारा कोकडी सीरम सपतैरा वध छै वोयनारसी डावा छै कसूमल सूतरी लपेटी जामकी छै रूपैरी जनातरी मुगमलरी कुदार पीनी चल रही छै सुइया साव्ळी रूपैरा चमकनै रह्या छै सात सात विलदारी लागी खोळी मेण कपडरीसू बाहर काढजै छै जाणै वाजळ माह बीज नीसरी आकासरी, कना तीजरै तमासै मारू पातळी कामणी पोसाक कर बीमरी, इण भातरी वदूका मोटयार तिरता तिरता लेय उण घडनावा आया छै

गिलोला किण भातरी छै? घणी सींग लकडीरी जोडी, घणी पय मरेमरी पचायी, कमाणरै घाटरी, नातरा मोगरा लागा थका घणी सोनैरी फूलरी जिसी जगाळी रगरी, नवे चढावरी तात, रेसमैरो मेनार गुथिया थका, राजाना

देमोतांरै हाथां दीजै छै. कुंभारी कमायोड़ी, हथाळीरा मारिया, धुंईरा पचाया, नींबुवै वाटरा. इण भांतरा गिलोला हाथ दीजै छै.

उणहीज वदूकां गिलोलांसू मुरगाब्यांनै चोटां कीजै छै. तमासो हुयनै रह्यो छै. सिकार मुरगाबी अेकठी कर तळावसू बाहर पधारजै छै. लीली पोता दूर कीजै छै. चरणा पहरजै छै. सू किण भांतरा चरणा छै? डलायचैरा मिसरूरा गुलबदनरा मालनेरीरा वाफतांरा, चाळीस चाळीस हाथांरा छै. गिरिया डोवरे समा नाडा छै. सू चरणा पहर जोड़ी पगां घातजै छै. सू जोड़ी किण भांतरी छै? लाहोररी पिस्तोरी घणै बनात मुखमलरी लपेटी थकी, घणै कलाबूतसूं गूथी थकी, पैहरजै छै.

तठा उपरायंत पाछलै पोहररी ढळती छायारी विसायत कीजै छै. देसौत सिरदार जाजलमां पधारै छै. केस सुंवारै छै. मोगरैरी वेल केवड़ैरे तेलसू केस सुथरो कीजै छै. दांतरा छलांरा चंदणरा चवड़ीरा कांगसियांसू केस सुंवारजै छै. केसांरा जूडा वाधजै छै. ऊपरा मखतूलरा डोरा वाधजै छै.

तठा उपरायत गोठ सारू वाकरा मगायजै छै. रवारियानै हुकम हुवै छै. परगना मांहां वाकरा दही ले आवो. सू रवारी ऊंठां आवै छे. किण भांतरा रवारी छै?

टीघा लांबा जुवान दीसता राजान,
वांकी मूछां, राता नैण,
भामी डाढी, मोटा वैण,
जाडा पुंहचा लांबा हाथ,
भूखै सिंघनै घालै बाथ,

इण भांतरा रवारी ऊंठांनै माले छै. सू ऊंठ किण भांतरा छै? थापवीतलीरा, मुपवीनलीरा, नाळेरा गोढांरा, बीलफळ डरकीरा, हथाळियै ईडररा, मगा सेरी वगलांरा, घाट वाजोटरा, बाथमें कांधेरा, कसतूरिया पटारा, कोरवै कानरा, टामकमें माथैरा, लोकवे नाकरा, तंजियै होठरा, कवाडियां दाता उधरै पीडरा, परघळां श्रामगांरा, कांगरै थूवरा, मोटै पूटैरा, छोटै पींडांरा, भामरै पूंछरा, भुवरियै रूरा, चोळमै रंगरा, लांवियै मीह ज्यू लकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यू वठठाट करता थका, वेस्या ज्यूं भाला करता थका, मातै हाथी ज्यू हुंकारा करता थका. इसा ऊंठ भेकजै छै. हाथ फेरज छै. पीतळरा गीरवाण रूपैरा कड़ा छै. ता माहे मोहरा बोलचै मोहर। घातजै छै. लूंबां कवडाळा वळेवड़ा घातजै छै. लाल सिलेहटीरा पड़छयां गाबां घातजै छै. ऊपरां पलाण मेलजै छै. सू किण भांतरा पलाण छै. सीसूंरै काठरा, घणै लोह पीतळसू जड़िया थका, रूपैरी फूलड़ी लागी छै. दांतरै कामसू वणिया थका. वनातरा मढिया श्रौ कुपीतळरा वाजणा पागड़ा, कड़ी कुहटै गाळो श्रोकडा

सातरा, पटाडारा चोलुवा वणाया थका, कागा कसणा कीया थका, चढ खडिया छै

गाव-गाव माहा दहीरा कळस मेल्हजै छै श्रेनडा माहा वाकरा उठायजै छै सू किण भातरा नाकरा छै, रातडियै रिणरा, उनळा थळारा, घणी गागुरण हींगरणरा चरणहार, नर्यो कायर तू नैरा चरणहार, गुवार चिडी-मोठरा खावणहार, माहरै माश्रा, कडकती नळीरा, करांडिया दांतारा, रूमरसूता ऊचा, चिलकता मोरारा, माटरै खेतरा, मादळिया पेटारा, नालनामी नोरडा खोडै मीलहैरीरा चरिया कुरळियारो नैसणहार, ऊभटै करेडैरा मुरडणहार, श्रायनैरा चरणहार सो उहा ऊठा ऊपर मसकारी पर नेय दोय नाधजै छै चलाया श्राया छै राजानामू श्राय मुजरो कियो छै

नाकरानू नरको नरणरै पगा अलथळिया मोराराना हुक्म कीजै छै सू असीना सीरोहिया लेनै ऊठिया छै मजकती थीरा भरै छै जाणै पानामरसे हस मोनी चुगण चालियो छै नेय-नेय नाकरारी सिल्हाडनै ठरा हुनै छै तरवारारा झणकार हुयनै रह्या छै चौगोरी त्यागपड़ हुयनै रही छै कनोरा माहे फल लीनै छै नजरा होमनाम पमू कानै छै नमौत रवा धोय हाथ ऊजळा कर विसायना ऊपर बिराजमान हुया छै

तठा उपरायत हुक्कारी हौंस कीजै छै चाकरानै हुक्म हुवौ छै हुका तयार कीजै छै किण भातरा हुका छै ? मोनैरा, रूपैरा, विन्री, खाखोळ ठाढा पाणीसू भरजै छै नीचै सुथरा विछायजै छै ऊपर हुक्का मेल्हजै छै नमचा सरद कीनै छै

सू नमचा किण भातरा छै ? चीटीया, चौगानिया, घणै वनातरा लपटिया, सालूरा लपेटिया, वोयनारस मढिया, चैतरा, कलाबूतरै कामरा, सोनै-रूपैरै वळारा, रूपैरा कुलाना लागा थका, सोनैरी टूटी, रूपैरी चिलम, चिलम-पोस छै

तमाकू वणायनै छै सू किण भातरो तमाकू छै ? सूरत नीपनो, तानैरै रगरो, जाडै पानरो, कडी हावळीरो, सू इण भातरो तमाकू सू चिलमा भरजै छै ऊपरा थोहररा आकरा कोयलारा चिलमिया मेल्हजै छै जाणै सहिजानैरा ताइन, नभूत लगायोडा जोगीसा छै तिणारी हौंस माणनै छै मधरो-मधरो खाचजै छै घरराटा हुयनै रह्या छै जाणै श्रामो मधरो गाज छै धुवैरो टोरो लाग रह्यो छै सू जाणै श्रासानरी खाली श्रोमा वहै छै

तठा उपरायत खसबोय मगायनै छै, सू अतर किण भातरो छै ? गुलाबरो चनणरो फिननरो वुररो खसरो करणैरा, सू सीसी खुली छै सीरा भर भर नाखजै छै, लगायनै छै, मुनहारा कीनै छै

तठा उपरायंत पुराणै अगररो चिकायो सूंधो मंगायजै छै. सीसी खुलै छै. मोतीपुड़ैरी सीपरा प्यालांमें घात हाजर कीजै छै. सूधो वगलां लगायजै छै.

तठा उपरायंत केसर मगायजै छै. सू केसर किण भांतरी छै ? अेराकरी किसटवाडरी, कासमीरी, जाडी पांखड़ीरी वटवीं डांडीरी. सू केसर चदणरा सूकड़ासूं जेसळमेररा ओरीसांमें होसनाक जुवान घसै छै, ऊजळ रूपोटांमे उतारजै छै. देसौतां रै मुंहड़ै आगै राखजै छै. तिणरा तिलक कीजै छै. आड़ा काढजै छै.

तठा उपरायंत वाकरा उणहीज दरखतांसूं टांगणा कीजै छै. वाकरा खुल्है छै. जाणै रूईरी वरकी वौपारी खोली छै. मांस उतार उतार पासे राखजै छै. तरवाररा पटदळां माहिसूं कटारयां मोहासूं छुरी काढजै छै. मांस छुन-छुन पासै कीजै छै. मोरां पसवाड़ां पींडारो मांस देगचांमे घातजै छै. हडोईरा मांस पासे चरुवांमें घातजै छै. सीरा होसनाक सुधारै छै दुयजै छै. गरम पाणीसूं धोयजै छै. चीर-चीर देगचांमे घातजै छै. ओझरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियो मांस घात दवगर कीजै छै. फूल आंतां अवल धोयजै छै. ऊपरा दूसरी आंतांरी साढा गूथजै छै. मसाला चरायजै छै. रजवो दहीरो दीजै छै.

तठा उपरायंत सुवर खोलजै छै. साटां उतारजै छै. सू कुण भांतरा दीसै छै ? जाणै रंगरेजरी हाट खुली छै. जुदो देगचांमें वणायजै छै.

तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जाणै-धोबीरै घर कपड़ा मोकळा किया छै. मांस उतार-उतार टुकड़ियांमे घातजै छै. मिरच धाणा सूंठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै. दहीरो रजवो दीजै छै. लकड़री कठौतीमे मुदनक राखजै छै.

तठा उपरायंत खरगोस होसनाक वणावै छै. मछळांद मिटायजै छै. नान्हो छन देगचांमे घातजै छै. मांहे वेसवार हळद धाणा सूंठ मिरच जाइफळ तज लांग घातजै छै. सींधो लूण दही साथ दीजै छै. तिलोर तीतर करचानक मुरगावी होसनाक वणावै छै. पोटा चीरजै छै. पेटाळजो चीरजै छै. मुहड़ैमें हींग भरजै छै. पेटमे जीरो भरजै छै. पांखां समेत देगचांमे वाफजै छै.

तठा उपरायंत तीतररो मांस सिला ऊपर वांट पलीधो कीजै छै. दूसरो मांस न्यारो-न्यारो वणायजै छै. घणा मसाला दीजै छै. लवांरो मांस होसनाक सुधारै छै. वकरांरा फीकर गरम पाणीसू धोयजै छै. ललाई मिटायजै छै. पासे देगचांमें रांधजै छै. घणो घी वेसवांरां मसालांसू वणायजै छै. सीकां पासै वणै छै. आडा डोरा घीरा दीजै छै. मांस रफतैरी खसवोय फूटनै रही छै. त्यांरी खसवोय लेवणनूं तेतीस कोड़ देवतागण गंध्रव होसा खाय रह्या छै. भांत-भांतरो मांस वणायजै छै. मेदैरा मांडा

करजै छै तैंमे घणो नान्हो कुनियो मास मदी आच कढाईमे तळजै छै वेसवार मसाला घात उहा माइमे घातनै छै तठा पछै माटा गूथ समोसा घणाय तळजै छै

तठा उपरायत सीरो-पूडी वणै छै मोहितै सारू देगजीमि जोयजै छै निरजै सारू चोखा मगायजै छै पुलाव सारू कमोद नीणजै छै काठा गोहुवारो आगे मगायजै छै सू नाळेर-गरा गोळना रोटा वणायजै छै मूगारी पातळी दाळ घणा मसालासू नीजै छै तुवररी दाळ छूटा चावळारै पगा देगचामे कीजै छै छूटा चावळ राधणरै पगा वासमती मगायजै छै पातळा रोटा जुदा ही वण रहा छै ठाम-ठाम देगचा-चरू चढ रहा छै मूग जुगाहीज देगचैमे सीझै छै

सू मूग किण भातरा छै ? मगरैरा नीपना, भरतरै खेतरा, हरियै रगरा, चुनळा जेयडा, इण भातरा मूग हाथासू रळकायजै छै चुण-वीण फाकरा काढजै छै सू मूग हसनाक वणारै छै

अनेक भातरा छतीस भोजन वणै छै निनारैरै पाणीसू आटो गूदजै छै तेरा रोग करजै छै रोटा भोर पींडी फीनै छै तठा पछै कढाहीमे तळनै छै पर भोर कूट छाण माहे थूरो घातनै छै घान चूरमो कुतयी वणायनै छै

तठा पछै सिरारणरै पगा दही बाधो थो तैरी गळणी खुलै छै माहे बूरो घात अधोतररै रूमालसू छाणजै छै मसाला माहे लाग इळायची मिरच घातजै छै इण भातरो सिरारण कर माटकी भरीजै छै

रसोई ऊपर चीलका कागला झडाफड करनै रहा छै तिका कागलानू मलूकजादा हुवर गिलोलारी चोटा कर रहा छै

इण भात तमासो करता पाछलो चौघडियो आय रह्यो छै अमलारो वखत हुवो छै तद खिजमतगारानै हुक्म हुवौ छै—मतानी स हर-सकरो तयार कीजै सू हरसकरैरी तयारी कीजै छै सू हरसकरो किण भातरो छै भागेसुर घोटियारी पींडी घणै मसाला समेतरी आणनै छै गळिया अमल मे भाग गाळजै छै फेर गरूसू गलटाय काढजै छै रूमालसू तियारा छाणजै छै तयार कर पीतळरा कळस भरीजै छै सिरदारा आगे आण मेलनै छै उनळा रूपोटामे घात मुनहारासू मारा माथनै पायजै छै

सू किसा-अेक सरदार जुवान छै ? पाका पाका वरियामानू, अनरायलानू, नींवरानू, डाणहुला डाम्रियानू, करडन्तानू, लोह घडा लाह पर डाहलानू, लोली देता, कटारी ग्गराइ ग्गाला, पचामा नोळानिया आधे आध गाढ उतरिया, जियारा पाच पाच हजार दाम

पाटा-बंधाईरा पाटैदार खाय चुका छै. पांच-पांच सै हाथ कोरी पाटांनै लागी छै. इण भांतरा रजपूतांनै अमल सिरदार आपरा हाथां करावै छै. घणै चोजसूं मन लियां मनहारां कीजै छै, दिल हाथ लीजै छै. अमलां गहतंत हुवा छै. मातै हाथीज्यूं झोटा खाय रह्या छै. फुरणी वाज रही छै. कोसा लाल चिरमी हुवा छै. आंख्यां छिटक रही छै. मधरै-मधरै हुक्कांसूं तमाखू खायजै छै. गल्हां कीजै छै.

तठा उपरायंत सूळांगरियां होसनाकांनै हुकम हुवै छै—जाजमां कनारै सूळां तयार करो, सू हिरणांरा मगर पसवाड़ा पींडांसूं मांस उतारजै छै. छुरयांसूं छुणजै छै. सू छुरी किण भांतरी छै? पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यानां मांहां काढजै छै. तिकांरा दस्ता किण भांतरा छै? मोहरैरा गुरड़ोढगाररा संगरेसमरा माहीदांतरा रूपैरा सीपरा जड़िया तरै-तरैरां दसतांरी भांत-तिकां छुरयांसूं मांस छुनजै छै. मसाला वेसवार लूण चरायजै छै. दहीरो रजवो दीजै छै. तरगसां मांहां सीकां काढजै छै. वेवड़ां ठीहां चाढजै छै. वीच खीसरी भरती दीजै छै. सू तसु वीढ सीकां ऊपर चाढजै छै. आडै हाथ डोरा घीरा दीजै छै. इण भांत सूळां वणै छै. वडी देवगिरी थाळीमे उतारजै छै.

तठा उपरायंत देसौत फेरांसारा फिर आया छै. हाथ पग मिटीसूं उजळा कीजै छै. कुरळा कीजै छै. सिझ्या-वांदणरो वखत हुवो छै, वनाती आसण विछै छै. पीतलरा भरतरा धूपिया आगै आण मेलजै छै. गूगळ वतीसै मसालै सहित खिवै छै. खसबोई महक रही छै. देई-देवता खसबोय ले रह्या छै. वनातरी गऊ-मुखीमें हाथ घातियां आपरै इष्टरो ध्यान-सुमिरण कर परवारिया छै. जाजमां आय विराजै छै.

तठा उपरायंत मसालां हुई छै. दुसाखा हुवा छै. मसालचियां आण मुजरो कियो छै. नजर दौलत छड़ीदार कर रह्या छै. अमरावां सिरदारां खिजमतगारां सारां ही आण जुहार-मुजरो कियो छै. सारा ही मुंहडै आगै विराजमान हुवा छै.

तठा उपरायंत दारूरा घड़ा मगायजै छै. सू दारू किण भांतरो छै? अैराकरो वैराक संदलीरो कंदली फूलरो अतर वाती वभै धुंवांधोर तिवारारो काढियो, वोदी वाड़में नाखियां जग उठै. बापरो पियो वेटो छिकै. असवाररो पियो प्यादो छिकै. राजा पीवै परजा छिकै. इण भांतरो पहलड़ो तोडेरो धातो, सू दारू केसरिया गुलावियारा दाव दीजै छै. मुजरा कीजै छै. मुनहारां हुवै छै. मतवाळा हुयजै छै. उपरा उण भांतरां सूळांरो थाल वीचमे लाया छै. मोछ्रण-ठुंगार हुय रह्यो छै. चोळबोळां हुयजै छै.

तठा उपरायंत हवलदारां अरज

थीनी छै – मुजाई तयार हुयी छै आप फुरमायो छै – पातोटा नारो, बानवट थाळ मगावो पातोटा नासिया छै, आगै बानवट मेलिया छै त्या उपरै रूपैरा पीतळरा थाळ जळसू सखोळिया मेलिया छै सिरदार पातोटा आय बैठा छै रहडया घातिया देगचा चरू आणजै छै परीसाररो हुक्म हुवो छै सारै सायनै सरव वसतरो परीसारो हुवै छै पाच-पाच दस-दस इस्तलाळिया गइन्त भेळा बैठा छै मुनहारा हुय रही छै घणी फीनसताई चोज लिया आरोगजै छै शहरा गार बीच बीच लीजै छै गोळियारी खटरड लागनै रही छै मुसालारो चानणो रणनै रह्यो छै जाणै सरदरी पुरणमासी खुली छै

फेर हुकम हुवै छै महतावारो चादणो हुवै सू महितावा पचास सव सायठी ही लागी छै जाणै जेठरो दो-पहरो खुलियो छै। इण भातरै चादणैम जीमणरी हौंस माणजै छै दारूसू मनवाळा मिरदार लाहरता बोलै छै

इण भातसू आरोग परवारिया छै थाळ बारिया उठाया छै हाथारी चीकणाई उतारणै पगा मूगारा थाळ मगायजै छै निण माहे हाथ मारजै छै मूगासू मसळ चीकणाई उतारजै छै

तठा उपरायत पाला मरा चळू करणरै पगा मगायजै छै चरू बीनै छै कुरला कीजै छै हाथा लोहणनू रूमाल हाजर हुवा छै हाथ पूछजै छै

इतरैमे तबोळी बीडा आण हाजर किया छै तिके पान किण भातरा छै मघी रूसणी तोडैरी वाडीरा नीपना तिकारी बीडी बणै छै माहे कपूर चूनो काथो सोपारी घात बीडी सिरदारानै दीजै छै खुस वखत हुवै छै

कवीस्वर आसीस दियै छै-अवै अन-दाना! ध्रुव-मेर ज्यू अटळ, चँद सूर पवन पाणी ज्यू जुगे-जुग राज करता

जुगठळ-वाळा जाग ज्यू,
अन ध्रत छिलै अपार।
दिल धाई आसीस दे,
कवि जपै जै-कार॥

दस कूप समो बापी,
दस बापी समो सर।
दसा सर-वरा समी किन्या,
अन दान विसेस्त॥

इण भातरी अनेक आसीस दियै छै अैमो गहरै साद कविराय बोलै छै जाणै नगारै डको हुवौ कना मेर घार हुवो इण भात कवराय आसीस देवै छै.

तठा उपरायत अरगजो मगायजै छै सू अरगजो किण भातरो छै? चोवै चदणरा मुठिया गुलाबरै पाणीसू रगडीजै छै माहे कपूर कसतूरी घातनै छै केसररो रग दीजै छै सूधै चमेलीरी

मेलवणी दीजै छै. इण भांतरो अरगजो रूपैरा रूपोटां मांहे घात आण हाजर कीजै छै. अरगजो लगायजै छै.

तठा उपरायंत माळा फूलांरी छावां आण हाजर कीजै छै. सू फूल कुण भांतरा छै? हजारा नौरंग तुररो मेहंदी किलंगो सोनजुही इसकपेचो खेरी कोयल मालनी चांदणी मुखमल नरगस हवास गुल-अनार दाऊदी केवड़ो. और ही अनेक भांतरा फूलांरी माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै. सू सारै साथनै बकसजै छै. फूलांरा चौसरा घातजै छै. छड़ी हाथांमें विराज रही छै.

तठा उपरायंत कवरावांनै नवाजस हुवै छै. घोड़ा ऊंठ माळा कडा सिर-पांव थिरमा बकसीजै छै.

तठा उपरायंत ओळगुवां बाजदारांनै इनाम दीजै छै. माळीनै मोहताद दीजै छै. साराहीरी आस-उमेद बर आणजै छै.

इतरैमे सात घड़ी बाजी छै. आठवींरो अमल छै. सिरदारां-रजपूतां अरज करायी छै – असवार हुयजै, साथ सारो अमलां गाढो सदोरो छै. तरां आप उठिया छै. मातै गजराज ज्यूं हींडता थका खवास-पासवाणांरै हाथ ऊपर हाथ दिया घूमता थका घोड़ै पधारै छै. साहणी घोड़ो आण हाजर कियो छै. पागड़ै पग दियो छै. असवार हुवा छै. नगारै-भेर घाव हुवा छै. सादियाणा वाजै छै. जाणै आभो गाजै छै. तुरी करनाळ रणसींगो वाज रह्या छै. सहनाय मांहे खंभायची हुय रही छै. साथ सारो अमलांसूं लाल्हरतो थको वहै छै. वधाईदार आगै वधाइयां छै. सू वधाई आण दीवी छै.

तठा उपरायंत कामणी हरख मण उवटणो करै छै. पीठी सिनान करै छै. खमवो लगायजै छै. सीस गुथायजै छै. माळ माळ मोती सारजै छै.

> हाम काम लोचनी आंभैरी वीज.
> भादुवैरी आकासरी परी. मोतियां सरी.
> कल्यांरो भूंवखो. पून्यूंरै चंद सो मुख.
> थाको हंम असील वंस.
> वे पख सुध अैमी मुध.

सू आभरण पहरै छै. जरकसी साड़ी, अतलसी चरणो, केसरी अंगिया, घणै विराणपुरैरी कोर पटै लागां थकां, सीस ऊपर हीरारो सीस-फूल वणायजै छै. मोतियांरी माग भरजै छै. ललाड ऊपर अरधचन्द्र विराज रह्यो छै. केसर सी खोळां कीजै छै. हींगळूरी वंदी दीजै छै बांका लोयणामे अणियाळो ठास सजै छै. जड़ावरी लड़ी दांव णी झूंटणा झूंवरा अलोक वण रह्या छै. मोतियांरो हार चीढ पंच-लड़ी विराज रह्या छै. जड़ावरा वाजूवध कांकण रतन-चोक आरसी वींटी विराज रही छै. वळै चूड़ो सोनैरी वंगड़ीदार विराजै छै. जाणै काळी घटामे वीज चमकै छै. कट-मेखळा जड़ावरी सोहै छै. सौनैरी पायल पग-पान पोलरी

अणवट पगा विराजै छै आभूसण असा
गिरानमान हुवा छै जाणै मेर-गिर
गेळी नखत-माळ गिराज रही छै

हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै

पावळरो चौथो हैसो खावै

तंबोल विना खाधा आहारा विगार थावै

माडी माडी कटारीरी पड़चळी ममावै

उतरते थाव वाजै ल्हणनै लुळै

घोवा रोवा जेतो बीचस् भाज जावै

इसी इसी ग्रोडस नरसारी मुगधा मध्या प्रोढा रूपरो निध्यान

जाका मलूक हाथ-पाव

जघा कदळीरो थभ

नाह चपारी डाळ

सिंघ सी कमर

कुच नारंगी

नख लाल ममोला

ग्रीवा मोर सी बोली कामल सी

अधर प्रवाळी दात दाड़मी कुळी

नाक सुवारी चाच

नाथरा मोती जाणै सुक त्रिहसपत सारखा दीपै छै जाणै लाल कवळरी सुमयोग लेवण सेत भवर आया छै

म्रग सा नेत्र मीन जैसा चपळ

भूंह जाणै इन्द्र-धनख छै

मुख पूनमरे चंद ज्यु सोळहै कळा मपूरण छै

पेट पीपळरो पान छै

पासा भाखरणरी लोय छै

नितंब कटोरा सा छै

नाभी मडळ गुलाबरो फूल सो छै

सारयातरी पदमणी

रम्भा रमा सी सरगरी उरवसी

असी कामणी पोसाग कर मोहला माहे मैणवतीरी पील चोसा च्यारा खुणा जगाय पान चावै छै चादणीरा विछावणा खुल रह्या छै ऊपर बनातरी ग्लावूती चादणी रूपैरी चोबासू खडी की छै

सोनारो पिलग कसणा कसियो छै सो कैसोहेक सोभायमान दीसै छै? जाणै खीर समुद्ररा झाग छै ओसीसा गींदवा कैसा गिराजै छै? जाणै सीगीमल काछवा समुद्रमे केळ करै छै इण भात कामणी पोसाग गिमायन किया गिराजै छै जिसैमें असवारी आण उतरी छै सारो साथ मुजरो-जुहार कर घरानै पधा छै घोडा पायगा लगायजै छै गगेव नींबावत भीतर पधारै छै रमा-रमा हुय रही छै आण ढोलियै विराजमान हुवा छै मुहडै आगै पातरा पोसाग कर साज बाज लिया खडी छै हुकम हुवो छै राग रग हुवै छै छह राग, तीस रागणी मूरतवत खड़ा हुवा छै सात सुर तीन ग्रामरो भेद धणियो छै भाव दिखावै छै फेर वारी मुनहार राज-लोक करै छै

तठा उपरायत सारो राज लोक मुजरो कर वोहडै छै तिणरो वारो छै

सू हजूर रहै छै. सुख कीजै छै, रस लीजै छै. केसरिया दुपटा ओढ सुखसूं पौढजै छै. परभात हुवौ छै. अमलांरी वायड़सूं आंख खुली छै. दरबार पधारै छै. साथ सारो मुजरै आवै छै. मुजरो लीजै छै. अमल कीजै छै. गोठ मजलस अमलांरा वखाण हुयनै रह्या छै. फेर ही कोई राजवी माणगर हुवै सू इण भांत ऐस माणज्यो.

नर सुर नाग न घट्टियां,
काळै केहरियांह।
जळ पूरिय पखाण ज्यू
गल्हां ऊबरियांह।
भलियूं भलां नरांह
लांबीयूं लांवां नरां।
मुळवा सुवां पछांह
वातां रहिसी वोच उत॥



रामदास वेरावतरी आखडीरी वात



अथ राव रामदास वेरावतरी आखडीरी वात लिख्यते।

गाव दुधोड हुवो राव श्रीरिडमल जीरे पुत्र वेरोजी हुवा वेराजोरे पुत्र रामदासजी हुवा गाव दुधोडरे खेडे थापना कीनी वडो एक आखादसिध रजपुत हुवो विरदधारी रजपुत हुवो रामदास वेरावतने उगणीस विरुद हुवा तिके विरदारा नाव–

१ प्रथम पाखरीया विना रहणो नहीं
२ दुजो सबला उथापण
३ तीजो निबला थापण
४ चोथो जाचक जण तरवर
५ पाचमो परनारी सहोदर
६ छठो चरु सुगाल
७ सातमो सुनी
८ आठमो सरणाई सोहड
९ नवमो विरद अणभग
१० दसमो पथरी बोर
११ इग्यारमो वेरी वकारने मारे
१२ बारमो पराइ लुगाइ माता समान
१३ तेरमो अगलीया गजण
१४ चवदमो छतीस आवध दावण
१५ पनरमो आखादसिध
१६ सोलमो गजघटाभाजण
१७ सतरमो आसेसरमने
१८ अठारमो मनोहर
१९ उगणीसमो लाखा परछमा पचायण

उगणीस विरद कया हिवे चोरासी आखडी कहे छे–

१ च्यार लुगाइ उपरत परणवारी आखडी
२ रुपासोनारा थाळ विना जीमणरी आखडी
३ पीतलरामें जीमणरी आखडी
४ मलजुद्ध कीया विना रहणरी आखडी
५ तलवार पकडवारी आखडी
६ जेठीमधु विना दातण करवारी आखडी
७ खाडो खुरसाणरो सेल सेर पनरेरो बाधणो, नहीं तो बीजो बाधवारी आखडी
८ छतीस आवध चालता सेर धीसरो आहार करने चालणो, नहीं तो आखडी

९. दिनमें पोहर सुवणो, उपरंत आखडी.
१०. रातरे पोर एक सुवणो उपरंत आखडी.
११. बाजरी भुजाइमें वापरवारी आखडी.
१२. गोव भुंजाइ सगला साथने हुवा विना जीमणरी आखडी.
१३. सकर विना भुंजाइ करवारी आखडी.
१४. पाछली रात हल उछरतां भुजाइ कीयां विना रहवारी आखडी.
१५. होके कीयां विना रहवारी आखडी.
१६. सगला साथने अमल कसुंबो कीना विना रहवारी आखडी.
१७. कटारी बांधवारी आखडी.
१८. साप सापणी भेला पकडवारी आखडी.
१९. लुगाईरे नांवे वसा आभडवारी आखडी.
२०. सरसे घोडे चढवारी आखडी.
२१. काछी घोडे चढवारी आखडी.
२२. पालखी चढवारी आखडी.
२३. कपुर विना पान चाववारी आखडी.
२४. लुगाइसुं रातमें एक वार भोग करणो, उपरंत करवारी आखडी.
२५. किसतुरी विना रहवारी आखडी.
२६. फाटा कपडा सींवणरी आखडी.
२७. साथने वल हुवा विनां जीमणरी आखडी.
२८. वावडीरो पांणी पीवणरी आखडी.
२९. वेहती नदीरो पांणी पीवणरी आखडी.
३०. भूखारो मुंहडो देखणरी आखडी.
३१. दूधको वोलणरी आखडी.
३२. मारग हालनां टलवारी आखडी.
३३. अऊतरो धन लेवारी आखडी.
३४. खटवनरो माल लेवारी आखडी.
३५. गांव फिलसो देवारी आखडी.
३६. सीव मांहसु बलद गांवमें लावारी आखडी.
३७. विखे विमांण गांव छांडवारी आखडी.
३८. काम पडीयां बगतर टोप पेरवारी आखडी.
३९. केसरीया वागा विना पेरवारी आखडी.
४० दांतरा चुडा विना वहारण राखणरी आखडी.
४१. घुडवेल वेमवारी आखडी.
४२. गांयारी वासमारी लेवारी आखडी.
४३. चोर दीठां मेलणरी आखडी.
४४. कांमरे माये रजपूत निकले तिणरो मुडो देखणरी आखडी.
४५. रजपुतरो रोजगार राखणरी आखडी.
४६. सरखे आयां काढ देणरी आखडी.
४७. रजपुतरो मुकातो लेणरी आखडी.
४८ चोहटे घोडो नखुरी करावणरी आखडी.
४९. पिणघट ऊभा रेहणरी आखडी.
५०. सोमवार विना खिजमत करावणरी आखडी.
५१. बारे वरस तांइ वेटी कवारी राखणी उपरंत राखवारी आखडी.
५२. तुरकने वेटी देणरी आखडी.

५३ वेर वाद विना वादीया रहवारी आखडी
५४ धूड घोलणरी आखडी
५५ घड्या ऊभा जुत पिहरणरी आखडी
५६ सादीया दीठा मेलवारी आखडी
५७ ढोल वाजीया ऊभा रेणरी आखडी
५८ मातसे वेरी मारे राखीया विना रहवारी आखडी
५९ वासे रोह दीठा जायगासु खिसवारी आखडी
६० दोना दला विचे पग घालवारी आखडी
६१ रोलामे निकलवारी आखडी
६२ भाजे तिण लारे जावारी आखडी
६३ आगलाने विना वकारीया लोह करवारी आखडी
६४ लोहडा विना मारवारी आखडी
६५ एक घाव विना लोह करवारी आखडी
६६ माल गाय जाय तिणने मारीया विना रेहणेरी आखडी
६७ धोला केस दीठा जीवणरी आखडी
६८ पोतारो मुदो दीठा जीवणरी आखडी
६९ धाडो आणीया वासी राखणरी आखडी
७० मेवासीयारा गाव मारीया विना रहवारी आखडी
७१ देसरा धणीने काम पडे तरे ऊभा रेणरी आखडी
७२ सूरजरो मुदो दीठा विना जीमणरी आखडी
७३ मुहडासु किणने गाल काढणरी आखडी
७४ चारण भाटने विना काम विगे-रणरी आखडी
७५ लुगाइने विना दुन मारवारी आखडी
७६ मोन देने पाछी लेणरी आखडी
७७ जीमता भाणे माहे कालो नीकले तो श्रेठो मेलणरी आखडी
७८ रुपीयारो व्याज लेवारी आखडी
७९ धन संचवारी आखडी
८० तमाखु पीवणरी आखडी
८१ जुवा रमणरी आखडी
८२ विना चुप हलवारी आखडी
८३ निबलाने मारणरी आखडी
८४ आपसु चढतो हुवे तिणसु लडवारी आखडी

इतरी आखडी रामदास वेरावत आगाढ सिध रजपुत सुरवीर दातार तिण इसडी आखडी पाली गाव दुधोडरा दरबार आगे सिला १ वगणीस गज लाबी छे, आठ गज चवडी छे, तिण ऊपर रामदासजी बेसता तिकी सिला पडी छे तिण ऊपरे रजपुत वेसे तिको इसडी आखडी पाले, तिको इज वेसे नहीं तो तलाक छे गावरो धणी पाटवीने छे और लोक नवत वेठो व्यापारी नचिंत वेसो देसोतने तलाक छे।

हिवे मीयां वुढण जालोर राज करे, पांच हजारीरो मनसोबो छे, साथ सरांजाम बीजो घणो छे. अमल धरतीमें निपट करणो छे. वडो वेढरो करणहार छे. तिणरे सांढीयां हजार सात छे. तिको गांव देवु रहे छे. एक समे मीयां वुढण महेचांरे परणीयो छे. तिको उणरो नांम वाइ लाडु छे. उणसुं मीयां वुढण चोपड रमे छे. सो वाइ लाडुरे डांण पड़े नहीं, तरे वाइ पासो वावती कयो पासा तोने रामदास वेरावतरी आण छे. पोवारा पडीया तरे लाडुवाइरी जीत हुई।

तरे मीयां वुढण पुछीयो—रामदास वेरावत कुण छे? कठे रहे छे? तरे महेची कयो—रामदास वेरावत माहरे भाइ छे, वडो रजपुत छे, तिणने चोरासी आखडी छे, उगणीस विरद छे, वडो सतधारी रजपुत छे, माहा सूरवीर छे, वडो आखाड सिध रजपुत छे.

तरे मीयां वुढण कयो—ऐसा तुमारा भाइ हे तो हमारी सांढीयां लेवेगा? तरे महेची कयो—हमारा भाइ ऐसा ही हे सो तुमारी सांढीयां लेवेगा. मीयां कयो—खुब हम भी देखेंगे। हमारी सांढीयां लेवेगा तो वडो रजपुत विरद धारी जांणेंगे. तिण ऊपर महेची कयो—तुमारी सांढीयां लेजाय तो तुम रजपुत जाणजो.

तरे मीयां वुढण कयो—हमारी सांढीयां लेवेगा तरे हम तुमसे मुंह बोलेंगे. तरे महेची कयो—मीयांजी हमारा भाइ सांढीयां लेवेगा.

चोपड रमतां इसा समाचार मीयांरे ने महेचीरे हुवा. तरे महेची चारण घररो वुलायने रामदासजीरे कने मेलीयो ने कयो, इसी तरे—विरदायने कहेजो वाइ लाडुरे ने मीयां वुढणरे चोपड रमतां इसी वतलावण हुइ छे, सो जाणसुं. राज सोने मोहरे कांचली दीनी अमर-कांचली दीवी. ए करसुं मारो बोल ऊपर आंणजो. इसी तरे कागद लिख मेलियो, चारण साथे. सो कागद वांचने रामदासजी तिणहीज वीरीयां हेरु मेलिया, अने कयो अनतो साढीयां लीयां वसां. चारणने घोडो सिरपाव दे ने सीख दीनी पधारो वाइने जुहार कहेजो.

अबे पाछासुं दुधोडसु तीनसे असवांरांसुं रामदासजी चढीया. असवारां पुरी सिले करने चढीया. ए कांम प्यालारो पीवणहार छे, कालीरा कलम छे, जाता पवनसुं लडे, जीव ऊपर रुठा फिरे, तिणमे पग चातरे नहीं, पुंठ फेरे नही. इण भांतरा असवार चढीया तिके जायने गांव देवुसुं सांढीयां लीवी. पछे रवारीने कयो—सात हजार सांढीयां तिण धणी ताती सांढ हुवे तिण ऊपरे चढने मीयां वुढणने जायने कहजो रामदास वेरावत साढीयां लीवी. गांव दुधोड़रो धणी लाडुवाइरो भाइ तिण सांढीयां लीवी. रवारी आयने कयो मीयांने वेगा चडो. तरे मीयांने समाचार हुवा तरे मीयां

फोजरो धमसाण करने रामदासजी उपर चनीया रामदासजीने आवडी छे, खेह दीठा खिसणो नही साढ पिण एक ब्याइ मो साढ ऊभी छोडने जाणरी आखडी तरे तोडीयाने पराालने साढ उपरे घाल लियो ने आगी खडीया इतरे खेह उडती मीठी तरे रामदासजी ऊभा रया इतरे मीया दाउद वाहदर दोय आण पोहचा तरे इका बोलीया अबे खडे रहो, कहा जावोगे तरे रामदासजी सोले असवारासु ऊभा रया बीजा सारा साथने सीख दीजी कयो साढीया ले जावो आप रामदासजी ऊभा रया इतरे इका आण पोहता तरे रामदासजी वकारीया मीया भला आया, रयावास थाने अबे वाहो तरे इका वहादरा कयो रामदास तुम वाहो तरे रामदासजी बोलिया सिरदारा उण इकाने मा पेहली लोह करो मती तरे रामदासजी कयो तिको कबुल कीयो इतरे इको घोडो हजार पाचसु चढीयो आयो हाथमे माग मण एकरी लीया थको आण पोहतो सो एकण कानी हजार पाच फोज, एकण कानी एक इको इसो प्राक्रमी पोरस छे सावतरूपी छे इसा इका श्रोहता तरे रामदासजी बोलीया इका वाह करो थाहरो धन लीधो छे, सो पेहली तु वाह तरे इको मण ग्नेयरी मग वाही सो साग रामदासजी ढालसु ओमाटसु टाल दीधी पछे रामदासजी वरछी फेरने बुडीरी गीधी इकारे छातीमे सो साम जातो रयो तरे बीजा इकारे ने रामदासजीरे चतलाजण हुइ सो इको सिले ठोय करने आयो छे सो रामदासजी आवतारे वरछी वाही सो इको घोडो फुटने नरछी जाती थको धरतीमे रुपी दोइ इका मारने रामदासजी आधा खडीया पाञासु मीयारी असवारी आइ फोज हजार पाच साल लारे छे सो मीया इका देखने इका कने आया आगे देखे तो इकारे लोह क्रोडू नही ने भीत समान ऊभा छे वरछीसु पोया छे इसी तरे मीया बुढण लारासु देखने फोजने कयो इण रजपुतसु कोइ हाथ जोडने लडेगा तब साथरी तो सारारी इका देखने निरासा हुइ रामदासजीने किण ही आसग्या नही तरे मीया पाछा वालीया रामदासजी साढीया ले ने दुधोड आया इणाने तो आखडी छे, वाडो नामी राखणो नही साढीया रजपुताने बच दीनी,चारण भाट खटचनाने बच दीनी देता देता सुरज आथमाण लागो रावलामे रसोडो तयार हुवो इतरे चाकरा आणने कयो रसोडे पधारो रामदासजी पुछीयो साढीया लारे कितरीक छे, तरे रजपुता प्रधाना कयो साढीया हजार गेय रही छे तरे रामदासजी ओडाने बुलायने कयो साढीया ल्यो अने तलाव खोनो तरे साढीया ओडाने दीनी पछे सारा माथसु रसोडे पधारीया साढीयारा भावरो दुहो

सवत पनरेसे चोपने, आखी मोय रख।
तलाव खणायो वेरा तणे,जाणे लोक सलक॥

वात – सियां वुढण पाछो जालोर आयो. वीवी महेचीसुं मिलियो, महेची समाचार पुछीयो, मीयांजी हमारा भाइरा हाथ दीठा. मीयांजी बोलिया अब तुमारा भाइ कनासुं सांढीयां मंगाय दो. तब महेची बोली मीयांजी कछु भोला हो ? उणने आखडी छे, धाडो आंणीयो वासी राखणो नहीं, सांढीयां तुरत वेच दीनी, उण हीज वेला. इसो सुणने मीयां सांढीयांरी आसा छोडी. पछे रामदासजी वरस २५ (?) में हुवा तरे पातसाहरी फोजसुं लडने कांम आया ।

॥ इति उगणीस विरुदधारी रामदास वेरावतरी चोरासी आखडी तिके संपूर्ण ॥



राजान राउतरो वात-वणाव

परमेसर प्रणम् प्रथम देवा सिरहर देव।
सारदा गुणपति समरि सत-गुरची करि सेव ॥ १ ॥

दिओ सेत वरदान तू परमेसरि प्रसताव।
राजानारी रस-कथा विधि कहि वात वणाव ॥ २ ॥

अथ वात

१ ॐकार महादेव परमातमा परम सिव परम सक्ति अचळेसर अचळ आसण नियौ तिण थानकरी ठौड़ नगीगिर हेमाचळरौ बेटौ दूसरौ मेर गिर अढार गिररौ राजा आनू गिरद कहीजे तिणरै वैसणै ऊपरि ईसवररा अवतार महाराजा राजेसर राज करै तिण राजेसर राजारै महाराणी महामाया पटराणी तिणरा पेटरौ नीपनौ कुंअर गुर पाटपति कुंअर श्री राजान कुंअर-पणै भौगवै कामदेवरी मूरति नव कोटी मुरधररा पति नरेस अनेक सिरद विराजमान।

अथ काव्य

भाले भाग्य कला मुखे ससिकला लक्ष्मी-कला नेत्रयो।
दाने देव कला भुजे जय-कला जुद्धे प्रतिज्ञा-कला॥
भोगे कोक-कला बले गुण-कला चिंतामणी सा कला।
काव्ये कीर्ति कला तव प्रतिदिन छोणीपते राजते॥

वात

खट त्रीस बस राजकुळी सिरोमणि सूरज वमी राजान मारवाडिरा नव कोटरी ठकुराई अळागोळ राज पदवी भोगवै राज पाट सिंघासण छत्र दंड माथै सेत चामर दुळावीजै छै सेत वाना सेत नीसाण सेत झंडा विराजमान हुआ छै तिण राजान राजाउतरा वात वणाव वखाणीजै छै।

तठा उपरांति जरि नै राजान सिलामति तिण राजानरी राजद च्यार ठिकाणै

विराजमान दीसै छै. पांच कोट पटै किया छै. राजथान नंदीगिर सिवपुरी मंडोवर अजमेर जाळिंधर मारीखा पाइतखत वर्णीजै छै. गंदाल महर गढ कोट वाजार पौळि पगार वाग वावड़ी वगीचा कूआ सरवरांरी वडां पींपळांरी छिनि महररी पाखती विराजि नै रही छै. पाखती अरटारी भींगाड़ चोंग रड़ि पड़ि नै रही छै. ढहारो खटाको लागिनै रहिआे छै. पाखती नीळ वरिः नै रही छै।

तठा उपरांनि करि नै राजान सिलामति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै. जाणे आकास लोक गिलणनूं दांत दिया छै. ऊंची निजरि करि जोइजै तौ माथारो मुगट खड़हड़ै. तिण कोटरी खाही ऊंडी द्रह नागद्रहो मारीखी. जळ छैल पाताळरी जड़ांसूं लागि नै रही छै. तिण गढ मांहे वावड़ी कूआ तळाव जळ वहळ धान घ्रित तेल लूण खड़ इंधण अमल कपड़ौ घणो अपार संचौ कीओ छै. कोट बुरजांरा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यों वादळांरा कीरण मारीखा ऊजळा सीकोट सौ निजरि आवै छै. नगररा वर कोट वरावरि ऊंचा विराजि नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति नगर मांहे ऊंचा देव सिव जैनरा देहरा मढ विराजि नै रहिआ छै. तांहरा डड - कळस धजा पताका आसमानसूं वातां करै छै. देहरा मांहे कथा कीरतन नाठक पड़िनै रहिआ छै. धूप - दीप कीजै छै. आरती उतारीजै छै. केसरि - चंदण चरचीजै छै. अगर उखेवीजै छै पंच सबदा वाजि रहिआ छै. झालरियां झणकार हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति देवळांरी पाखती धरम - साळा दान - साळा मंडीजै छै. मांहे जोगेसर पवनरा साझणहार त्रिकुटीरा चढावणहार धूम्र पानरा करणहार उरधवाहू ठाढेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास - मुनी।

दूहो

ब्राह्मण सेतंबर वळे जोगी जंगम जाणि।
दान सन्यासी सोफिया खट दरसण वाखाणि॥

गोदड़ कानफाड़ जोगी जंगम सोफी संन्यासी अविधूत पंचागनिरा झूलणहार अलमसत फकीर जिके संसारनूं भागा थका फिरै. जड़भरत अतीत सम - रसरा छाकिआ राम - रस प्यालैरा पीअणहार दया - धरमरा पाळणहार करम - जाळरा भोड़णहार तापस अस्टांग जोगरा साझणहार सांत - रस मांहे गलताण होइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांत करि राजान सलामति तिण सहर मांहे च्यार वरण, च्यार आश्रम, अढारै वरण, खट दरसण, परम - ग्यान - पुरायण धरम धरमरा पाळणहार दया - धरमरा

रासणहार देह-सामनारा करणहार बैठा तप करै छै अनेक सत्कार मत धरमरा रासणहार गैराइतारा करणहार धजबंधी कोडीधज लाखेसरी दौलतिवत चौरंग लिछमीरा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहराम सन साहूकार घणा सुख चैनसू वसै छै ।

तठा उपरात करि राजान मिलामति तिण सहिर माहे छत्रीस पवन जाति रहै छै तिण सहिर माहे वाजार चौहटा मंडिया छै सोना रूपा जवहर जडाव कपडा पटकूल रेसम पसमरा थान भाति भाति विमाईजै छै ।

तठा उपराति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भाति भातिरा थान भाति भातिरा पदारथ भाति भातिरी अमोलिक वसतासू मोलावीजै छै हटवाडैरी भीड हुइ नै रही छै चोहटै माहे रग तबोलरी कीच मचि नै रहिस्री छै ।

तठा उपरानि करि नै भोगिआ भमर लजा छयल हुसनाक जुवान निजरबाज बाजार माहै ऊभा जोहा न्याए छै चोहटै माहे नगर नायिका वेश्या लाख लाखरी लहण हार सोलै सिणगार ठविया थका फूलारा चौसर पैहरिया थका नैय अणियाला काजल ठामिया थका वाका नैणारी झोक नाखती पायलैरै ठमकैसू घूघरैरै घमकैसू बिछीयारै छमकैसू रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती बाजारि चाली जाए छै निजरारा झडाका लागा थका जुवाना छयलारा मन गरेन नाज करै छै भाति भातिरी वेस, भाति भातिरी रमाल, भाति भातिरा खेल मंडि नै रहिया छै, भाति भातिरा तमासा लागि नै रहिआ छै इण भातिरा मारू महर मझोनर सिवपुरी बिराजमान हुआ छै कना इन्द्र पुरी सी निजरि आवै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान मिलामति इण भातरा सिद्ध खेत गिरद ऊपरै राज पन्थी राजसरा सुख कुंअरपणा भोगवीजै छै तिण राजान राजकुमार मारून्, ४ ठौडरा नालेर आया छै प्रथम चित्रोड गढरा धणीरा, लुद्रपुर पाटणरा, घाट सहररा, पुगल नगररा ढोला आइ पुहकर ऊपर उतरिया छै अगार दोष रहित गोधूलिक साहो सो माडियो छै ।

तठा उपरात करि नै राजान कुमाररी जान घणै आडवरसू हाथी घोडा वहिल सुखासण रथ पायकरा वणाव किया थका वघेल जानियारै साथ लिया घणै मोती जडाव जरकसीसू लडालव हुआ छै घणै मोंघे घणी केसरि अगरचेसू गरकाव किया थका घोडा रजपूतारै घूमरैसू आइ तोरण बान्धिओ छै तठै आगै वगाणी तिण भातिरी रायजादी गोरगीआ सोल सिणगार ठविया थाळ थाळ मोती सारिया तोरण कलस वधावै छै मोतियै वधावै छै आगे छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति नीला आला वंस केलि खंभ मूंना गलिश्रा थका कांचनांरा कलसांरी वेह करि नैं चौरी पधराया छै. हथलेवो जोड़ि छेहड़ा बांधिया छैं. सु जांणै मन बांधिया छै. जिके वेद मूरति ब्राह्मण छैं सु अरणी अगनि लगाड़ि होम करैं छै. घणा गो-घृत नैं कपूररी आहूति दीजैं छै. वेद ध्वनि कीजैं छैं. दूलह नैं दूलहनी सेहरा बांधिश्रा पूरव माहमा वेसाणीश्रा छैं. सेहरा दीजैं छै. चार फेरा फेरीजैं छै. वीमाह कीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अनेक राग रंग वधाई वांटीजैं छै. राय अंगण धोलहरे गेहणी घणां मंगलाचार गीत नाद खंभाइची गावैं छैं. छत्रीस वाजां पंच सवदा वाजै छै. तांहरा नांम तंती १ वीणा २ किनरी ३ तंबूरो ४ नीसांण ५ एनो पांच सवदा आगै छत्रीस वाजांरा नाम कहै छै. ढोल ६ दमामा ७ भेरि ८ भूंगलि ६ नफेरी १० मदन भेरि ११ सुरणाई १२ झांझ १३ मंजीरा १४ मादल १५ श्रीमडल १६ डफ १७ ऊड़क १८ रंग तंग १६ मुहचंग २० ताल २१ कंमाल २२ तंबूर २३ मुरली २४ रिणतूर २५ सख २६ ढोलक २७ राय गिड़ गड़ी २८ रवाज २६ रावण हथो ३० पूंगी ३१ अलगचो ३२ झालरि ३३ पिनाक ३४ वरघू ३५ सारंगी ३६ करनाल ३६ इण भांतिसूं छत्रीस वाजा वाजि रहिश्रा छै. अनेक मंगलाचार हुइ रहिश्रा छै. अनेक दांन सनमांन दीजै छैं. अनेक रंग वधामणां कीजै छै. मोतिश्रैं चौक पूरीजै छै. वीमाह पूरो कियो छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति वीमाहरैं समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिलणरो कोड रंग-रळी वधांमण कीजै छै. रंग महलैं धवलहरैं पधरावीजैं छै. छेहटैरी राति गांठि छूटी छै. सु जाणैं मनरी गांठि छूटी छै. राजांन कुमार घणैं हरखसं आणंदसूं उछाहसूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझरी वात उहां हीज जांणी पिण वीजो उण सुख उण वातां कुण जांणैं. दूलह नैं दूलहणीरी जोड़ी देखि देखि नैं लोक वार-वार वखाणैं छै. कहै छै गंगाजी मांहै ऊंडैं जल पैसि तपस्या करि ईश्वर गवरिजा पूजिया छै. वळे हेमाळै गळिश्रां कासी करवत लिश्रां अंगरी असत्री अंगरो भरतार पाईजै छै. सु यां हेलमा तपायो छै ।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति पनरह दिन तांई जान राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजनरा वणाव कीजै छै. दोइ भांतिरा अंन १ वायो २ अड़क, तीन भांतिरा मांस १ जलजीव, २ थलजीव, ३ आकास उड़ण जीव. पांच भांतिरा सालणा १ तरकारी, २ मूलकंद, ३ डाल कूंपल, ४ पान-पत्र, ५ फूल-फळी, पंड छालि. भांति भांति गोरस १ दूध, २ दही, ३ मिठाई, ४ लूण, ५ तेल, ६ हींग, ७ वेसवार, ८ चरकाई. इण भांतिरा सत्तर भ्रख-भोजन कहीजै अढारमो ठंढ़ो पांणी।

कवित्त

दुविधि अन पल त्रिधा साग पंच मास धारण।
गो रस जुग निधि गिणत मिष्ट गति ए कवि चारण॥
लूण तेल सात हींग सात दस भोजन भत्त।
तिरय अनंत गति रचै गान छुण गिणै कवित्त॥
सजोग एक अनेक सुचि पट रस पट निधि नेत सुचि।
सुह विधि रसोद समुभै भता सुपह अरोगै अन्न रुचि॥ १॥

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति भाति भातिरा भोजन जाति जातिरा मास जाति जातिरा पकवान जिलेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पूरी, साबूणी खेरा, पंचामृत।

दूहा

मीठा मोळा रस मिलै, खाटा खारा जाणि।
कडुआ दान कसाइला, ए पट रस वाखाण॥

भाति भातिरा पकवान घणौं सुरैं घीरा भरिश्रल मुहडै माहे मेलिया गलि जावै मुहडामैं मेलिया छाती ठाढी हुवै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति भाति भातिरा अंबरस, सिखरण, आना, नीबू, सूरण, आदा भाति भातिरा आचार अथाणा भाति भातिरी तरकारी गोरस मीठा मोळा खाटा खारा कडुआ कसाइला भाति भातिरा पट रस सवाद लीजै छै ऊपर कपूर वासिया गंगोदकरा चळू कीजै छै।

तठा उपराति राजान सिलामति घणा घोडा हाथी सुखासण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दइजै दीजै छै घणा दास दासी दे नैं घरा सामा श्रीमणा पधरावीजै छै धरतीरौ इदु होश्रे तिण भाति जग छेल कर नैं घणे सोनैं रूपैरौ मेह होइ नैं तूठौ छै कवेसरा गुणी जणा मगत जणानु घणा दान दे कोड पसाउ, लाख पसाउ, करि हाथी करह पेसाणरा मह्रा पसाउ करि जसरा जागी छुराइ नै वलियो आगैं नीली भाख लीआ वधाईदार गेडिश्रा छै नगर माहे श्रोछव वधावीजै छै मंगल गावीजै छै गळिश्रा गळिश्रा फूल बिखरीजै छै।

तठा उपरांति राजान सिलामति तोरण बाधीजै छै घणा गज डंबर पेसारा करि मंदोरर महलें पधराया छै सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहरत सुभ वा सुभ लगन सुभ वेळा माहि श्राणि पाट सिंघासण विराजमान किश्रा छै माथा ऊपर सेत छत्र धिराजै छै सेत चमर ढुळै छै।

तठा उपरांति राजांन सिलामति तिण राजांन कुंअर राजाउत मारू ठाकररै च्यार पटरांणी छै. नाम सिणगार सुंदरी १, सोभाग सुंदरी २, सरूप सुंदरी ३, मदन सुंदरी ४. साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कलारी जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसतीरौ अवतार वारह आभूषन विराजमान हुआ छै. आठे पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै. किण भांतरा आभूषण किण भांतरा सिणगार।

काव्य

लज्जा मान कटाक्ष लोचन कला अल्प स्थितो जल्पनी।
रति भय अभया सु प्रेम रसा गय हंस वुल्लाइन॥
धैर्यं च सुचक्षमा सुचित्त हरखं गुह्य स्थलं शोभनं।
सील ग्यान सुनीति नित्य तन सा पट् दृण आभूपणं॥ १॥

राजांन कुमार सौळै सिणगार विराजमान हुआ छै. सु प्रथम मरदरा सौळै सिणगार तिके किण भांतिरा कहीजै।

काव्यं

क्षौरं मंजन चारु-चीर तिलकं गत्रं सुगंधार्च्चनं।
कर्णे कुंडल मुद्रिका च मुकुटं पादौपि चर्मोचनं॥
हस्ते खड्ग पटंवरं कटि छुरी विद्या विनोदा मुखं।
तांवूलं मति सीलवत चतुरं श्रृंगारकं पोडस॥ २॥

बीजा इस्त्रीरा सोळै सिणगार तिके किण भांतरा कहीजै छै।

काव्यं

आदौ मंजन चारु-चीर तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं।
नासा मौक्तिक पुष्प-हार कुरलं झंकार कृन्नूपरं॥
अंगे चंदन लेपनं कुच मणी क्षुद्रावली घंटिका।
तांवूलं कर कंकणं चतुरता श्रृंगारकं पोडशः॥ ३॥

इण भांतिरा सोळै सिणगार किआं थकां रहै छै।

तठा उपरांति कंवर नैं राजांन सिलामती तांह अंतेउरी आगै ४ वडारणां सहेलिआं रहै छै. १ अनंगमंजरी, २ मदनमंजरी, ३ रतनमंजरी, ४ पदुमंजरी. तांह वडारणां सहेलिआं आगै ४ पात्रां सिंगारणी खवास्यां रहै छै. १ गुणमाला, २ फूलमाला ३ विजैमाला, ४ दीपमाला. तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै ४ विलासनी दासी रहै छै.

केतकी १, चंपकली २, रामकली ३, कामकली ४ त्या दासिआ आगै सोळै सोळै छोकरी खिजमतदार रहै छै इण भातिरा चार राजलोकरा च्यार महला आगै ४ नाजर खोजा रहै छै मोहनराइ १, वसतराइ २, सामरग ३, रामरग ४. महलारी दोढीरी जावता रावै छै।

तठा उपराति राजान सिलामति रितिराज वसत वैसाख मासरा मगलाचार विमाहरा सुख विलास करता सरद रित आई छै आसोज मास आइ समापति हुओ छै इतरा गढ कोट चोंहटा नगर वीमाहरा मगलाच्यार दान प्रथम प्रस्तावरा वात वणाव विचार गढ कोट नगर वीमाह वात वणावरो प्रथम परिछेद पूरो हुओ छै।

*

तठा उपराति राजान सिलामति षट रितरा वलाण कीजै छै प्रथम सरद रिति वखाणीजै छै आसोज लागै छै पितर पख पूजीजै छै धरतीरो मैल कादमजल पखाल निरमलो कियो छै सरोवरारा जल निरमल हूआ छै कमल पोइणी फूलि रहिआ छै सरगरा देवानै पितारानू मात-लोक प्यारो लागे छै कामधेनु गाया छै सु धरतीरी पाकी औषधीरा रस चरै छै दूधारा सवाद अमृत सरिखा लागै छै सु कढीरा वडिआरा गटक लीजै छै पचामृतरा सवाद लीजै छै।

तठा उपराति करि नै नवरात होम ज्याग हुई नै रहिया छै नव दुरगारा नौरता न्सराहो पूजीजै छै न्सराहेरा वणाव भाति भातिरा सिणगारीजै छै छत्र दड सिंघासण घोड़ा हाथी दरबाररा वणाव गहमह हुइ नै रहिआ छै वाही आळ काढीजै छै भैंसा ऊपरे तरवारियारा वाह त्रूटि नै रहिया छै राजसू नीझोडीजै छै जिके दिगपाल रजपूत सामत अजान वाह ठाकुर अड़ानीड़ न्यारे आइ राडा रहिआ छै दरवार दुलीचा विछाइजै छै विछात वणि नै रही छै दरवार वणियो छै हाथी घोड़ा फेरीजै छै महोला मुजरा कीजै छै।

तठा उपराति राजान सिलामति सरद रितरै समैरी पूनिमरो चद्रमा सोळै कळा लिया सपूरण निरमली रैणरी ऊजली चादणीरै किरण करि नै हसनू हसणी देखै नहीं नै हसणी हस देखै नहीं छै मिलि सकता नहीं छै तारा वार वार माहो माहै बोलि बोलि नै वरह गमावता छै अण चादणीरी सपेती करि नै महादेव नन्दी धमल ढूंढता फिरै छै सो लाभता नहीं छै इद्र एरापति जोता फिरै छै इण भातिरी सरद रितरी सपती चादणीरी सोभा विराज नै रही छै रास महलरा महोछव माडीजै छै राग रंगरा मजाज ताइफा लागी नै रहिआ छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति इणै चतुरगी रायजादी कितीयारी भुयिसो मोतीचारी लड़ी हुवे तिणि भातिरी ऊजळी गोरगीआ ऊजलै गाति ऊजळै वायनै चदनरी खोळि किया ऊजळा मोतियारा महणा पैहरिया ऊजळा वागारा वणाव किया ऊजळा

फूलांरा चोसर घातियां हाथे ऊजळा फूलांरा गेंद उछालती थकी ऊजळी सखीयांरै साथै सहेलियांरी टोली सो रास-मंडल रमणरै ओछाह चांदणीरी रातिरी चली जाइ छै. ऊजळा वणाव कियां ऊजळी चांदणी मिलि गई छै. सु आगली सखीआंनूं जावनी लखै नहीं छै. लखाव नहीं पड़तो छै. तिणि सोंधेरै डोरै लगी जाए छै. ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतमसूं जाइ जाइ मिलै छै. इण भांति सरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै।

तठा उपरांति देव जागिआ छै. काती मासरा वरत महोछव कीजै छै. घरि घरि दीपमालिकारा वणाव हुइ नैं रहिया छै. जूआ खेलि मंडि नैं रहिया छै. दीवाली पूजीजै छै. चितरांम कीजै छै. भांति भांतिरा अनंद वट कीजै छै. गाड्या खरेर मांडीजै छै. कुल संक्रातिरा दिन वरावर हूआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हेमंत रितरौ वणाव कीजै छै. हेमंत रित लागी पछिरौ वाउ फिरियौ. उतराधो वाउ वाजियौ. हेमतरा वरफ ऊपडिआ टाढ़ौ टमकियां प्रालौ पड़ण लागौ. जिके धरतीरा धणी पताल वासी भुयंगनैं धणरा धणी दौलतवंत ओ विहे एकै वग हूंता सु धरतीरौ पुड भेद नैं विमरै पैठा. उठे रहण लागा।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति उणि हेमंत रित मांहे वालीमूंध सुहव गोरी गयां तनांरी रस छातीरौ रस अधरांरौ सवाद अमृत सरिखौ लागै छै. सु तो सरगांरा सुखांसौं पणि अधिक सुख जांणीजै छै।

दोहा

सरगे सुरा न वकरा, ना वाजंती वीण।
नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण ॥ १ ॥

तठा उपरांति करि नैं जिके वारै वारै वरसरी कांमणी तेरा चउदां वरसां माहें पनरा सौलै मांहें मुगधा मध्या प्रौढ़ा वीसां पचीसां वरस माही जिके कुदी जुवांनी कांमरी कंदली कांमरी कली रंगरी वूटी जीवनरी जड़ी इण भांतिरी कांमणी त्यांरा उरस्थल पाकी नारंगीयां सारीखी अंणहार पाके वरन कोमल कठोर कुच असैं भीड़िआं थकां रहे. उवै कांमणी घणै क्रिस नागर कस्तूरी अंवर अंतर सांधेसूं गरकाव हुई थकी उवां राजांरा मलूकजादांरा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै घणैं मंगाय पांन तांवोलरा रस लीजै छै. उजळी सपेत विछाइत ऊपरै ऊजळै वणाव कियां ऊजळी रुसनाई लाग रही छै. इण भांतिसूं हेमंत रित मांहे रातरा सुख विलास मांणीजै छै. हमे ससिर रितरा वणाव कीजै छै।

तठा उपराति राजान सिलामति करै कैं हेमाचलरा पहाड़रा टूका ऊपरैं ऊजला बरफरा टूक वधण लागा वडाई पाई दिन लघुता पाई, इहा नदियारा जळ जमि ठठ हूआ नदी खीण पड़ी घटी।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति जिण भात लैणायत दीठा देणायत घटै तिम तिणि भाति दिन न्नि निसि दीठैं सूरजरौ तेज घटण लागो नैं सूरजरौ तेज घटियौ राति मोटी होण लागी वडाई पाई दिन लघुता पाई तिणि ओछौ हुम्र लागो जिमि कोई भलो भूडै नरानर कीजै तरा घटती जावै भूडौ भलै वरावर कीजैं वधती जाए तिण भाति राति वरानर हुई छैं सूरजजी ठढ़िरा मारीग्रा उतर पथ छोडी नैं दखिण सामा वहण लागा।

तठा उपराति राजान सिलामति उण रित माहे सूरजजी पणि मकर सक्रात भेला हुआ छै ठढिरा धनाया आपरै महले आया छै नैं आकासनू पण राति छोडै नहीं सूरजरा पयोधर वधै तिण भाति आधा न्नि दिन वधण लागा विरहणी कामणीआरा मुखा कमल कामरी दाहसू वळीआ छै तिण भाति माहे जाळिया छै कमल पोइणी वनसपती घणराइ नळी नै रही छै अगनी जळ सारीसी ठढी लागै छै जळ आग माह सरीगै लागै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति तिण ससिर रितरी माह मासरी रातिरौ झालौ पडै छै उतराधरी पवन उतावलो दीया राइ नैं रहीयौ छै तिणि रित माहे ओढ ढालिआ ऊडा मोहरा माहे ऊडा तहखाना माहे खेर कोइलारी मकाला जगाड़ीजै छैं तपन तापणरा सुख लीजै छैं उणि भांतिरी गरम ठौड माहे ऊची सोड तलाई सेभरनट तकिया घणु ऊलला गरकाव गरा परानैहसू भरिआ एका घणु ऊजळी गरकाव निछात कीजै छै पीलचोसा अढारन्नानीआरी रुसनाई लागि रही छै तेज पुज आम्प आरोगीजै छै प्यार कर नं सौंस दे दे नैं प्याला पीजै छैं घण लौंग पान बीड़ारा रस लीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति घणी कसतूरी क्रिस नागर सारु जवाद चोआ चवेली अन्तर अम्बर भाति भातिरा तेल सुगध साधैसूं गरकाव हुआ थका ऊचे राजान आलीजा आलीगारा नाह व्ला अलवेलिआरा पदमणीआरा रमण माणौ छै तिण भाति गलवासड़ीआ घातिया थका वालौ जोवन माणीजै छैं इण भाति सुख वोल करि रात पाधी गारीजै छै परभाति वुलगारारा गदरा पाथरीनै छै घणी चवेली तेलरी मद्दन कीजै छै हमामैं गरम पाणीसू नाहीजै छै अगोळी कीजै छै वागारा वणाव कीजै छै साधारानैंसू आणी साधा हाजर कीजै छै भाति भातिरा साधा लगाड़ीजै छै सभा मजलस कीजै छै इण भांति सिसिर रित वणाव वखाणीजै छै सु कहीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हमैं आगैं वसंत रितरा वणाव वखाणीजैं छै. दखिण दिसा मलयाचल पहाड़रौ पवंन वाजिऔ छै. सीत मंद सुगंध गति पवंन मतवाला मैंगल ज्यां परिमल झोला खावतौ वहै छै. अढार भार वनसपती मकरंद फूलादिरा रस मांणतौ थकौ वहै छै. अंबर मोरीजै छै. कूंपला फूटीजै छै. वणराइ मंजरी छै. वासावली फूटि रही छै. केसू फूलि रहिया छै. रितिराज प्रगटीओ छै. वसंत आयौ छै. भमर मधुकर झंकार करी रहिया छै. मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छै. बाग वगीचां दरखत गुल कारी झिलि फूल रही छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति जिके छोगाला छयल छबीला जुआंन हूसनांइक फूलांरा छोगा नाखीआं थकां फूलांरा चोसर पेहरीआ थकां अगरचै मरगचैं केसरिआं कचमैंलै वागैं कीआं घणै चोआं अंतर फूलेल गला मांहि भीनां थकां घणैं अंबीर नैं गुलाल मांहे गरकाब हुआ थका झोली भरिआं थकां दिसि दिसि छूटि रही छै. घणैं अबीर नैं गुलाल मांहे गरकाव हुआ थका अंबीर गुलाल उडि रहिआ छै. दिस दिस केसरिआं पिचकारी छूटि रही छै. आकास ऊपरै अंबीर नैं गुलालरी अंबरै डंबरी लाग रही छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति सारीखा साथरी टोलियां कियां थकां भूल गैनूल पड़ि नै रहीआ छै. केसरिआ वणाव कीआं थकां आगैं वखाणी तिण भांतिरी नाइका पात्रांरा ढूल चलीआ जायै छै. डफ चंग मुह चंग वाजि नैं रहिआ छै. वीणा ताल मृदंग वाज रहिआ छै. वांसली वाजि रही छै. ढोलकां वाजि रही छै. फाग गाइजै छै. फाग खेलीजै छै. नाचीजै छै. हास विणोद कीजै छै. हास रस हुइ नै रहीयौ छै. फागोटांरा सुख सवाद लीजै छै. घरि घरि वसंत राग हुलरावीजै छै. कामदेवरी दुहाई देतां फिरै छै. पंचम राग गाईजै छै. वसंतरा वणाव हुइ नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति होलिका प्रव पूजिजै छै. आगै वखांणिया तिण भांतिरा अमल माणीजै छै. हमैं ग्रीपम रितरा वणाव कीजै छै।

तठां उपरांति करि नैं राजांन सिलामति इतरा मां ग्रीपम रित आई छै. सो किण भांतरी वखांणीजै छै. नैरत दिसारौ ऊनौं पवन वाजियौ छै. उन्हालसी प्रगटीओ छै. जेठ मास लागौ छै. सूरिज व्रख संक्रांति आयौ छै. सु जांणीजै छै. सूरिज व्रखां नैं दरखतांरा ओलो ताकै छै. तो वीजां लोकांरी कौंण वात. सूरजजी उतराध सामां वहै छै. सु जांणीजै छै हेमाचलरौ सरणो लिओ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति ग्रीपम रित मांहै पवन पावक समान वाजियौ छै. प्रथी अप नैं वायू अकास च्यारि तत पांचमै अगनी तेज तत भेला मिल नैं

रहीश्रा छै प्रिथीरा लोक विहगम पंखी छै सुर तरवरा रू खारा श्रोला ताकै छै. तरवरारा पान झड़िश्रा छै सु जाणै वस्त्र विना नागा डिगंवर सारीखा नजर आवै छै निवाणारा पाणी नीठिश्रा छै पोइणी पलि नै रही छै श्रोछै जळ माछला तड़फड़ी रहीश्रा छै गजराज सूरा सरोवर ढूढता फिरै छै सादूला केसरीसिंह ज्वालानल अगनीसू वलतां थका वीभा वनरा हाथिश्रारी पेटरी छाया सूता विसराम करै छै भुयग सर्प नीसरीश्रा छै सो लू नै तावडैरी अगनिसू वलता थका द्रौडि द्रौडि नैं हाथीश्रारै सीतल सूंडाहला माहे पेसि पेसि रहीश्रा छै इण भातरा सजल जीव तिके निजल हुइ नैं रहीश्रा छै।

इमैं तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति ग्रीषम रित माहे जिके राजाना ठाकुरना सुख जेठ माहे कहीश्रा तिके सुख सुर जेठ कहता इन्द्ररी ठकुराई पिण नहीं ऊग्रा राजारा सुख कहीजै छै जो एण वगीचा माहे हमामार महल छोह पंक ढालीश्रा घर तहखाना वणाया छै झरोखा, जालिए, छाणिश्रे पवनरी हवा पडि नै रही छै श्री महल केसर गुलाबसू छाटीजै छै माहे जल गुलाबसू चहवचा भरीश्रा छै घणा मलयागर चदण, केसर, कपूर, घणा गुलाब नैं मुरा वरफरा पाणीस घसीनै छै अगे लेपन लगावीजै छै अगे तोल कीजै छै नीमसीं.वाउ दोलिश्रा छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति इण हमामा महला बाहरि वाग-वगीचारा रसता लाग। छै. चोकीण निवाइत पणी छै पारती जळ कुल छुटि नै रही छै वागैं रमतारा चोहबाचा भरिश्रा छै खजाना भरीश्रा छै अलत नलारा फुहारा छूटि नैं रहीया छै स्यारे गुलकारी, रग रगरी बूंटी, फुलान्री सबजी लागि नै रही छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति इण वागाइत माहे ग्रीषम रितरा विलाइती वालेरा खस खाना, ऊंची ठौडरा बगला, रावटी वाला नधरा ठासारा गूथिश्रा भाति भाति खसखाना वणाया छै घणै सीतल पाणीसू सीचिश्रा थका वीभरणा वाइझायासू ढींफा खाइ रहीश्रा छै तठै निलाइतरी गूथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरे ऊपरे ढोलिश्रा गिलमारी विछाति थापि नैं रही छै सेमा ऊपरै घणा फूल कपूर पाथरीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति किण भातिरा सरवत छाणीजै छै घणै वेदानै, दाडिम कुलीरा रस लीजै छै मो घणी कालपी मिसरीरा भेलसू घणी एलची नैं मिरचारैं भेल वोह लागै थै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पाणीसू ऊजळै गळणैं भोळि भोळि भारीजै छै।

तठा उपरानि करि नैं राजान सिलामति इकत्रीसमी तारा पुराणा पोसत महवाईरा

नीपनां, आगै वखांणिआं तिण भांतिरा, तजारी तंज, घणी कासमीरी केसर, घणी ऊजली मिसरीरै भेळि कपूर वासीआै पांणीरी कल्हारी भारीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तजारैरी वाड़ीरी नीपनी, नीली घणुं पाकी, पुरांणी, आगै वखांणी तिण भांतिरी भांगि घणी एलची, मिरचां, पांन, जावंत्रीरैं मेलसू पाखांणरी कूंडीआं सरवंगरा घोटासूं ऊजळा प्राचांरी धमोड़ी घणैं ऊजळै मिसरीरैं भेळ ऊजळा गरणांसूं भारीजै छै. ऊजळां प्राचांरी खवारयां ऊजळा रूपोटां लीआं हाजरि खड़ी मिसरी, अफीणसूं अरोगाड़ीजै छै. कनाथां पड़दा तांणीजै छै. चोहवचा मांहे जल केलरा रंग तरंग मांणीजै छै. कुंअर पदो भोगवीजै छै. चौमासो लागौ छै. दूसरौ असाढ़ आढ संप्रापति हूओ छै. तठा आगै वरसात रितरा वणाव कीजै छै, सो आगै वखांणीजै छै.

दोहा

सरद हेम नैं सिसर रित, रिति वसंत ग्रीपम्म।
वर्षां दांन वखाणि तूं, ए षट रित ओपम्म॥
इति श्री षट रितिरै वात वणावरौ दूसरौ प्रस्ताव पूरो हूओ।

*

हमैं तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति एकांण प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसररा परमांणा आबू गढ़रा मंडावरि आया छै. अजमेर थांणैरो हुकम हुयो छै. महाराजा कुआर श्री राजान राजाउत मारु मंडोअरसूं अजमेर पधारिआ छै. फौज वंधीरा वणाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अतरा मांहे पातसाह महमद मुसतफाखांनरा चार दूत विचरिआ हूंता त्यां हकीकत राजांनरा पातसाह आगै पोहचाई. सत्तर खांन वहत्तर उमरावी वांण खड़ा छै. पातसाह श्री राजान कुअर राजाउत वात पूछै छै. राजांन कुअर किसाएक रजपूत छै. दूत हकीकत कहै छै, जु राजांन कुअर उठती वहीरो जुवांन आजांन वाहू राजहंस लीलंग छै. भेदंग छै. तिसा ही वागांरा वणाव, तिसाही मूछांरा मरट, तिसा ही भुजांरा आंमला, तिसा ही पोरसरा गाढ़, तिसा ही कामवटरा अंग, तिसा ही रजपूतवटरा आचार देख नैं महाराजा राजेसर अजमेररै थांणै राखैआ छै. हसम हुकम सौंपीआ छै. हजरितसूं मालिम छै. राजांन कुअर वत्रीस लछणो छै. तिके कहै छै. सत १, सल २, गुण ३, रूप ४, विद्या ५, तप ६, अलप अहारी ७, वडोचित उदार ८, तेज ६, धनकर १०, दोलतवंत ११, सकलनाइक १२, दयावत १३, विचखण १४, दाता १५, बुधिवत १६, प्रमाणिक १७, जस १८, उदिम १६, लाज २०, धीरज २१, राज सनमान २२, सूर २३, सादसी २४, वलवत २५, भोगी २६, जोगी २७, भुजायण २८, भाग्यवान २६, चतुर ३०, ग्यानी ३१, देवभगत ३२, पर उपगारी ३३।

कवित्त

सत्त सील गुण रूप विद्या तप अलप आहारी।
धन उदार जस तेज चतुर नाइक उपगारी॥
बुद्धिवंत बलवंत राज सनमान विचख्खण।
भोग जोग गुर भगत भाग परमाण भुजायण॥
जस लाभ धीरज साहस धरण दया ग्यान उद्यम करण।
दिखि सूर भान राजानरा विधि बत्रीस लखण वरण॥ १॥

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति फेर पातसाहजी हुकम कीयौ हकीकत इत कहै छै कबले जिहांनिआ पातसाह सिलामति राजान कुमार पट भाषा निवास छै चवदै विद्यारौ जाणहार छै।

दोहा

सुर आसुर अरु नाग नर, पसु परीकी वाण।
जोदाना आणै सुपह, सो पट भाष सुजाण॥ १॥

काव्य

ब्रह्म ज्ञान रसायण सुर श्रुत वेद तथा जोतिष।
व्याकरण च धनुर्धर जलतर मंत्रावार वैदक॥
कोपैनाटक वाजवाह नरसे सबोधना चातुरी।
विद्या नाम चतुर्दस प्रतिदिन कुर्वंति नो मगलं॥ १॥

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति तीसरै हुकम दूत अरज कीधी जु राजान राजेसररो तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजाम, निरंजण, निराकार, संसार सिरोमणि, संसार आधार, ईस्वरा अवतार हिंदू महाराजाधिराज श्री राजान राजावत मारू अैरावत सूरजवंसी इण भांतिरो छै।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति इणि भांतसूं राजानरी वात सुण नैं अजमेररै थाणैरी हकीकत सांभल नैं आदि वैर उगराहनूं असुराण तुरकाणरा दल राजान ऊपरै विदा हूआ सो किण भांतरा कहीजै छै रहमाण रहीम अलाह परवर दिगार, पीरा पिकंबरारी औलाद, चौवीस अवलीआरी करामात, अवलीए आमलीक कबले जिहांनिआ हजरति पातिसाह मुहमद मुसतफाखानरा उमराउ हुसन हुसेनखां अलीखान सारीखा गोरी, पठाण, सैद, मुगल, उजबका मुसलमान आकीनदार, चीस सीपारारा पढ़णहार, पांच वखत निवाजरा करणहार, मुछ कलमेरा पढ़णहार, पैसता, आरबी, पारसीरा बोलणहार,

आउखी ढाडी राखणहार, वालि वाधि कोडीरा मारणहार, अवली मूंठीरा तीरंदाज, असली जादा, कोल वोलरा राखणहार, गाजी वहादर ताजक नीलक तार, जरवाफ, वादले, आसावरी, विलाती, हजारी कपड़ैरा पहरणहार, देस देसरा, जाति जातिरा, मीरजादा भेला हूआ छै. माही मुरातवा समेत पोहकर अजमेररा थाणां ऊपरै विदा हूआ छै. आवाज फूट नैं रही छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति पातिसाहरा दल वादल मोगर थाट ऊपड़िआ छै. वीस लाख असवार पाखरीआ लोहमीवाड़ किआं वगतर, हाथल, टोप, झिलमें, चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किआं, गरकाव हूआ थका छत्रीस आउध डाविया रहै छै।

कवित्त

सर सींगणि छुरि कुंत सांग गेडीहल मोगर।
गोळी गोफण संख गुरज मूसल घण तोमर॥
प्रासी चक्र खड़ग गदा चावक नै फरसौ।
कुहकबांण वंदूक ढाल कट्टार खपटसौ॥
सेलह त्रिसूल सांठो धको वली वंसहड़ि कड़ि लगण।
भूकंत चहुलि सूलो चटक दंडायुध छत्रीस रणि॥ १॥

इण भांति छत्रीस आयुध डाविआं, नव हाथां जोध खैपांन तुरक, अवला पाघड़ांरा जमरांणैरी जमात सारीखा निजरि आवै छै. जाणैं कलिपंत कालरौ समद उलटीओ छै. तिण भांतिरी समंद व्यूह सेन्यां कीआं चाली आवै छै. कांही जलजात व्यूह सेन्या कीधी छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अठीना सका वंधी हिंदू भाजणी परत राजावत राजांन मारू गुरडव्यूह, म्रिघव्यूह, चक्रव्यूह, सेना रची छै. विहूँ फोजांरी धड़स चाली जावै. हसमरी धसन पड़ी नै रही छै. सूरिज रथ खांचि नैं रहीओ छै. गयणा गरज डंवर छायो छै. सूरिज पोलै पांन सरिखो निजर आवै छै. मुरचांरा मुकामला मंडाया छै. अणीमेल हूऔ छै. रायजादारा भाला भलकि नैं रहीया छै. तवल वंधा मीरजादा वाकां वहादरावां नै तारा तवल वाजि नैं रहीआ छै. भेर घाव लिनैं रह्यौ छै. नोवतरा टकोरा लागै छै. नौवति भींगड़ि पड़ी नैं रही छै. भेर, नफेर, करनाल भभक नैं रह्यौ छै. सुरणायांरी क्रहक पड़ि नै रही छै. वड़ो राग सिंधुड़ो वागि नैं रहीओ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति किलकिला नालि छूटी सु गोळांरी आगाजसूं धरती धमकि नैं रही छै. जवर जंग नाल्यांरा निहा उपड़ि नैं रहीआ छै. गज नाल्यां,

धुलर नाल्या, जनूरा नाल्या, रामचगी हथ नाल्यारा चणणाट वाजै छै आकास छायो छै सु जाएे तारा छूटै छै कुहक वाएरी कहक पडि नैं रही छै आतस आरावा हवायारी मारको पडि नैं रहियौ छै अधार घोर हुइ नैं रहीओ छै इणि भातिरो औसर मडि नैं रहीयौ छै रौद्र रस प्रगटीओ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति पचास टाक चिलेरीया अणहारी कनाणरा पोकार वाजि नै रहिश्रा छै रींगडा मालोडारा बूम पडिश्रा छै सवायै मेहरो जोरि सोक वानै तिण भाति पसारी रुग वाजि नैं रही छै केवर दुवासू जोरै पखार्ं फूट फूट नीसरै छै तीरा गोळीश्रा रै मारक पडतै जिनावर पारा समारण न पावै छै आकास उडत पखी पडै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति असवारारी वाग ऊपाडी फिलफिला ज्यों ऊपाडि ऊपाडि हेमरा नारीजै छै भूसणा ऊपरै वरछी चमकि नैं रही छै रामण गाजा सेलारा धमोडा पडि नैं रहीश्रा छै सरफूत आर पार हुश्रै छै. वगतरारा तथा फोड फोड पूठी परा श्रणीश्राला श्रणी नीसरै छै सु जाणा धीवर पूठैं जाल माहे मछा मूह काढीश्रा छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति जिके सूर सामत रानताला छै सु हाथीश्रारा कंभाथला दातूसला पाउ दे दे नैं घाउ वाहै छै मछा नीसाण पाडै छै पातिसाहरा गूडर गाहीजै छै गजटला गाहीजै छै. वीरा रस ऊपनो छै वीरा रस मातौ छै वीर हाक वाजि नैं रही छै. नाराजीश्रारी झाट पडि नै रही छै वगतरा ऊपरा तरवारीश्रारा धाउ त्रूटि नै रहीश्रा छै जाणौ वादला माहे वीजळिश्रारा सिला ऊपडिश्रा पाखरा ऊपरै सारधारा फूलधारा वाजी ॥ ठणणणणणा जाणैं परभातरी झालर ठणकै, नरजगतर निघस हुश्रा कना वह भायामी राति वाही तठा उपराति करि नैं रानान सिलामति फैंतकारी महकि नैं रही छै भयानक रस मातौ छै भयानक रस हुइ नैं रहियौ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति राजान राजाउत मारूरा सामत राठजादा एक पाखर, लाग पाखर, श्रणीरा समर जाहरा पग मेर माथै मडीश्रा छै एक एक रानतालैर हाथि हजार हजार मीरजादा पडीश्रा छै श्रागलै पवेसरैं कहियो।

दोहा

सुर असुरा इण श्राहुडै, श्राही एक अचक ।
पिडि नितरा हींदू पडै, तेता सहस तुरक ॥

मेद्धाण मटि घाण हुश्रा छै चालीस कोस रिण माथरै पना हजार पडिश्रा छै फरकारी वाढि [illegible] नैं रही छै विणजारारी वालद पडै तिण भाति धोडा भडा हाथीश्रारा गरा पडीश्रा छै वगतरा केसू फूलै तिण भांत घणा घायासूं धाया थका

डोलिआं, झोलिआं ऊपड़िआ छै. जिके अवसांण सुध खत्री छै तांहरी अरोगी थिसै छै. जिके सतवंती छै तिके सांमरै साथ वळण चालीआ छै. तिके सनी अंगनि सनान करि नै सरग भोगरा सुख मांणै छै. पूठै करण रस कीजै छै. जगवासी लोग छै त्यांनां करण रस ऊपनों छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति राजान राजावत औरावरै रिणखेत हाथी आयौ छै. रिण जीत नगारा धुवै छै. फतैरा सैवानां वागा छै. जस जैतरा डंका वाजिआ छै. कुसल खेम आणंदरा वधाइदा दौड़िआ छै. घरां साम्हां फौजांरा वहूस चालीआ छै. आवै छै सु किण भांत वखांणीजै छै. पातसाहरा देरा हसंम रखत तखलआं हूंता सु आंणि थाणै दाखलि कीआ छै. अजमेररा थाणांरी जमीत कीजै छै. घरि घरि मंगलाचार आणंद वधामणां कीजै छै. घणां माल निजराति उवारीजै छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तिणि प्रस्तावि, राजानरै सिकारनी असवारी हुइ छै. नोवत टकोरा पड़ि नैं रहिआ छै. वाहरि डेरा कीआ छै. असपका खड़ी हुई छै. तंवू, समीआंणां, सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूडर तांणीआ छै. दल वादल लागि नैं रहिआ छै. रजपूतांरा थाट मोगर मिलै छै. महोला लीजै छै ।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हजार तोपची खंधार, शब्द भेदी आगवर जागरा जाळणहार, आकास उड़ता पंखी पाड़ै, इण भांतिरा नाल गोळी दारू जामगी साज वाज किआं थकां, मुंहडा आगलि सजि नैं ऊभा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति फौज वंधीरो वणाउ कीजै छै. फौजां आगै आतस चालै छै. जवरजंग नाळि, किलकिला नालि, जंवूरनाळ, गजनाल, हथनाल, सुतर नाल, कुहकवांण, राम चंगी कई भांति भांतिरा आरावा रहहूए घाती आवै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हाथी सज कीआं वहै छै. सु किसड़ा वखांणीजै छै. थेट सिंवल दीप अनोप देसरा नीपनां, षेधंगरतांह, भद्र जातीआं, हाथीआंरां कूंभाथला भांजिआं सवामण मोती आंमल प्रमाण नीसरै, अढ़ार भार वनसपतीसूं ओघसतां थकां हमला खाई नैं रहीआ छै. उरै गजराज रेवा नदीरै कांठै द्रह ऊपरै पांचसै हाथीरै हलकै लीआं मोड़ी खर करि नैं रहीआ छै. पांणीरी छोळांरा झकोला खावता थका गज कीला करि नैं रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति कपोलांरै मदगंध करि नैं भौरांरा झोर पड़ नैं रहीआ छै. भौरांनूं वैठा सासहे नहीं, सूंडीर वरां वलाका खाइ नै रहीआ छै. तठै कालवूत हसतणींरै फरस करि नैं छिवितरी खाड मांहै पड़ै छै. पछै लोह सांकलरा प्रास

नालि नैं तिके हाथी पकडीजै छै इणी भातिरा सींघली गजराज वेसास नैं आणीआ छै. ताहनू घणा मलीदा, वेसवार, मोगर दे दे नैं पाटि आणि नैं समझाया छै तहा गजराजानू सार जडीआ जजीरा लोह लगरा लगाडि नैं खभू ठाणासू छोडीआ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति वडा जूह गयदा गजराजानू गडा चरखीआ मारि, पोतारि, नीठ वसाणीआ छै रूमाल फेर माडीनैं छै आमला तेलरो वोह दे नैं काला जूह कीआ छै गजराजारा भाल कपोल सूडाहल घणैं लाल सिंदूरसू चरचिआ छै जाणैं सारयात गुणेराजी प्रसन्न हूआ छै कना इद्र धनुष कानिऔ छै तला जोड पटा मरत कपोलारा नाण छूटि नै रहीआ छै ताह गजराजारा मद छरित बारेह मास ऊतरै नही छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति पाखती सेत चमर विराजिआ छै जाणैं मेरगिरसू गगारी धारा धसी छै ताह गजराजारा ऊजला दातूसल वगडीआसू जडिआ छै जाणैं घटा बीच बगलारी जोडी वडी दीसै छै देवलरी घटावलि जेम घटा ठणक नै रही छै जाणै घणा घूठा पावम डेडरा डहक नैं रहीआ छै गजराजारा डील रेसमी नाडीसू भीड नैं जटा जूट कीआ छै जरजाफ वणावटरी भूलासू ठाकिआ छै सार पाखरसिरी मालरी लोहनी कोठी ऊपरैं सनाह करि नैं गरकाव कीआ छै गजराजा ऊपरा गजढाला ढलकि नैं रही छै जाणैं पहाड़ा ऊपरैं खजूर कल आवारी मजर ढलकि नैं रही छै गजा ऊपरैं धजा, नेजा, चीधा फरकि नै रही छै जाणे हेमाचलरै टूका माथै कसू फूल नै रहीआ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति उआ गजराजा आगैं गड़ा चरली दारू आराधा छूटि नै रहीआ छै जाणै धूंधलै पहाड पाखती रीली लाग रही छै मदि वहता मतवाला ज्यों पग नीठ भरै छै गड़ारा तोडणहार, दरवाजारा फोडणहार, दळारा मोडणहार, दळारा पगार, फोजारा सिणगार, इण भाति गजराज सिणगार पाखरीआ छै पीलवाण फूमायला माथै पगारा आगूठा चलावै छै. गजवागा खैंचे छै धता धता करै छै नाग जो छछोहा जाणै वादलारा लगस पवन जोरसू चालीआ आवै छै इण भातसू गजराज मुहडा आगै ही डुलै छै डोहा करता हमलागाना वहै छै इण भातिरा हाथिआरा दलका साज बाज सहित साजति वणाव नैं राखीआ छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अजमेर थाणैंरो मुकाम किऔ छै सुखासण पालखी चोडाल रथ पाइक वणि नैं रहीआ छै कटकारा खुर पडि नै रहीआ छै हाथी लड़ायीजै छै पाइक सिरम सामै छै फूलहाथा फेरीजै छै भाति भातिरा तमासा लाग नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति चौमासारी छावणी हुई छै. आगम रित आवी छै. आसाढ़ धूधलीओ छै. उतराधरी घटा काली कांठलि ऊपड़ी छै. आडंगरी गुडलि मांहे ऊंडो गाजीओ छै. वगला पावस वैठा छै. पंखीयां मालास मारिया छै. पावस पड़ि नै रहीआ छै. परनाल खाल पहाड़ खड़कीआ छै. चात्रग मोर वोलि नैं रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति आगै कवेसर गंगेव नींवाउतरौ वेपारो वखांणीऔ छै. तिणरी उकति आंणी छै. तिण मांहे कवेसुर कहे छै. वात वणावरो पण भेल कियौ छै. पण उण कवेसररी उकति वरावर नहीं. हमें वरखा रिति मांहे श्रावण नैं भाद्रवैरी सांध वरखा रित मंडी दूंह वीजां झड़ लायो. डाल डाल अंबर चमकिऔ छै. सेहरां पाखर पड़ी. भाखरांरा माल हरीआ. पांणी एकनाल भरिआ. चोटीआली डहकि नै रहीआ छै. परभातरै पहररी गाज आवाज हुइ नैं रही छै. राजा नैं सिकाररी उमंग मनमां आंणी छै. हुसनाकां तरकसांसूं मैण कपड़री खोली उतारि लीधी छै. कवाणां चाक कीजै छै. हजार अैराकीआं आरवीआं उजवकीआं तुरकीआं ताजीआं पलाण मंडीजै छै. तिके किण भांतरा अैराकी, आरवी, तुरकी, उजवकी, ताजो जिके लंकी पारारा उतारिआ आंजणिआं आंखीआंरा मूंडीकाट अैराकी वाउ मूठ पकड़ता डाल भागा मांकड़ ज्यों डांण मांडता आडी आंकुलाटां उभलतां असील विलाती जाहरा सरीर आरीज्यां ऊजला भांखै मुखमली पसमरा, कलीसी कांनरा, भूठमी द्रेठरा, कूकड़ा कंधरा, लोहमे वंधरा, तोछड़ी पूंठरा, चोवड़ी धूवरा, चांमरी पूछरा, निमंसी नलीरा, वाटके नख्वरा, धावणी द्रोड़रा, मूडा म्रिघ ज्यौ कूदता, नट ज्यों नाचता, कुलचता, अकुलणी नेण ज्यौ ऊछाछलां, आपरी छाआंसूं डरपता, वाज पंखी ज्यों ऊड़ाण झांपतां, जांणै सूरजरा रथ असमानरै फैर लागि नैं रहीआ छै. म्रिसण ज्यों मुख वांको कीआ थकां कनाअण मिली, आंजारसूं छिनाल मुख वांको करि रही, कूंभाररा चाक ज्यों कूडे फिरि रहीआ छै. ढाल सरीखा चौड़ा, उर ज्यांरा आंठुआंरा टलासूं हाथी धको खाइ सकै नहीं. माणसरा कमल ज्यो नासा फूल रही छै. नासारा फरड़का वाजि नैं रहीआ छै. वेपख मूध जिके सालहोतरमां वखाणिया तिहड़ा इण भांतिरा तेजी, धरारा खूंदणहार, खुरतालांरा अधखुरांसू धरती धमकि नैं रही छै. तांह अैराकीआं, आरवीआं, उजवकीआं, तुरकीआं, ताजीआं पूठ पलांण मंडीआ छै. सो किण भांतिरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरवी पलाणी, दामण चमकती, पिड़ांमारी लंगामी आरसी आलीआंरी छालीआ पाखरां घातिआं, पलांण लगांण, जींण सार्कात साभ-वाभ-लूव-भूंव करि नैं श्रामणरी त्रीजणी ज्यों पांडवे सिणगार पाखर घाति चोकि आंणि हाजर कीआ छै. राजांन राजावत मारू किसो एक जी जिसो एक खत्री धरमरी चौवीस आखड़ी वहै. कुंण कुंण आखड़ी कहे छै. दातारे दातार, भूझारे भूझार, परभोमि पंचायण, मैदेसहाथी, काछ वाच निकलंक, परनार सहोदर, आवती जावतीरी मूठि पूठि जोअे नहीं.

टपारी वसुत रावै नहीं झलफलीआ झासि मुडीआ मेर, पुलीआ पखत मारा, पाचरा लोहरी गाठि, विरदारी भारो, घाट छराड, थाका सतरो विसराम करडदत, कामरो कोट, नेठाह धरधीर, वहतौ काळ, दहीग्रो काहर, तोरणरा आगा, अगनि फूल, सतीरो नालेर, कालीरी वेहडो, रुलीआरौ जोड, राकारो मालवो, कुआरी घड़ारी वींद, पाचसै भड़ां भाइया भाग्रीजालिआ, हजार असवारारी ढाळ किआ, मूछीमै लोह लिआ, काळै वरछिआरै चूग किआ, चडतै सूररौ सिरार चडिओ छै मेर घाउ वलिओ छै हाकारै होकारो होइ नै रहिओ छै लाल वरछी थकी नै रही छै पगेन वरावर चालता घोड़ारा हाठुआ उपरि अध लोहीमैरा भाग तजारैरी वाडीरी भाति विराज नैं रहिआ छै फौज वरावरं चालता आगास उडै रेहरा डमर हुइ नैं रहिआ छै।

तठा उपरात करि नै राजान सिलामति सिकार पाखती जिनावर चालिआ जाग्रै छै। सेत सूआ, सवज सूआ, सारों, मैना, कोइल, तीतुर, कागा-कउआ, सेत काग, सेत कबूतर, उडण गिरहबाज, जग जातिरा पखी, भाति भातिरी मीणी भाषा बोलता, पन्ता कठपिंजरे घातिआ वहै छै।

तठा उपरात करि नै राजान सिलामति वाज, कुही, सिकरा, सींचाणा, जुररा, तुमती, हुमनाका सारवानारा हाथा उपरासू सगगाट करता छूटै छै वाइ पवरा जोरस नीला घाम धरतीसूं लपट नैं रहिआ छै आसमानरै फेर जितरा जिनावर चिडी, कमेडी, झाट माही आवै छै तितरा झपटामू मारिआ जाग्रै छै।

तठा उपरात करि नै राजान सिलामति वडा सिकारी सिंघळी, मादूल, पटाला, केहरी नरहथा, कठीरीआ, रीछीआ, तेलिआ, तींदला, लकीरिआ, वघेरिआ, चीतरा, भाति भातिरा, जाति जातिरा, नाहर साकले जडिआ राहुम्रे गाडे वैठा, कमता, करणता, घूनाड करता वहै छै।

तठा उपरात करि नै राजान सिलामति कावली कूतरा, लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभरा, वलिमे पूंछरा, लापडै कानरा, गाड़मी गलरा, सिघरा हथरा, केहरी कधरा, मकरै रोमरा, केविना रोमरा, इण भातरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी मुगारा वणाआ, साकळीआ जडिआ, वेहला पालखिआ उपरे वैठा वहै छै।

तठा उपरात करि नै राजान सिलामति सिकारी ठौड पहाडारी पाखती घनारा मगार मिलि नैं रहिआ छै, जाणै घणा ग्निारा विछडी मीन मिलै तिण भातिरा मगर मिलि नै रहिआ छै रू ग्यारा भुड महादेवरी जग ज्यू जुडि नै रहिआ छै, रू खारा जूट जुरान मल जुटै तिण भातिरा जुडि नै रहिआ छै रू खारा जूट रामचन्दरी वारी सेन्या ज्यौं रीछारी जमात सा निनरे आवै छै तिणि भाति दीसै छै इण भातरा वाराहरा

मांहै हरिण, सूअर, सांवर, रोज, खरगोस, गैंडा, खरगोस, गैंडा म्रग, भांति भांतिरा जानवर वनझंगरा मांहै चरै छै. सिकाररी हौक वाजि नैं रही छै।

तठा उपरात करि नैं राजांन सिलामति मांखिरा उकासिआ सूअर भाखरांरा मोढ़ा फाड़ फाड़ नैं निकलिआ छै. सूअरै राते ग्वून किओ छै. सूरे गुलवाड़ि विधांसिया छै. त्यां सूरांरै मोरै अैराकी, आरवी, उजवकी, तुरकी, ताजी लगाड़ीजै छै. सतपुड़ा पहाड़ा माहै दराजा वंदूकांरा ग्वललाट पड़साद पड़ि नै रहिआ छै. ग्रीध पंग्वांरा सरांरी सोक वाजि नै रहिआ छै. सेलांरा धमोड़ा पड़ै छै. सेलांरा फळ सूरांरै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै. सूरांरै मोरै भूखा वाज ज्यों असवार नैं घोड़ो आफलि रहिआ छै. सूअरांरी सिकार मांणीजै छै. एकल ढाहीजै छै. रहड़ मंगाइजै छै. रहड़ घाति घाति नैं चलना कीजै छै. इति फौज वंधी मसलत भारथ जुध सिकाररो तीसरो प्रस्ताव पूरो हुवौ।

दोहा

फौजवंधी मिसलत्त जुध, भारथ हंदो भाव।
दांनस वात वणावरो, ए त्रीजो प्रस्ताव॥

*

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति रातो छाके ते दारू पिआं तासीआ त्रिखावंत हूआ. वेपारहरैरी हांस तरग माणएनूं हजार असवारां तलवारे माथेनूं वागवाळी छै. सो किण भांति तलाव जांणै दूसरो मानसरोवर रातासी एके रडिरै माथै पांडरो नीर पवनरो मारिओ कराड़ै फींण आछटतो ठेपां खाइ नै रहिआ छै. कही आंसमां पेठां पगांरा नख झांखै, दूधरै भौळै विलाव ब्रांसै पालिरै फेर केलिरै गिरदवाइ मांहै सारसांरा टोला झींगोर करि नै रहिआ छै. मांहै सूआ कोइल मोर वपैया वोलि नै रहिआ छै. आडा डहकि नै रहिआ छै. वतकां वकोर करि नै रहिआं छै. डेडरा डहक नै रहिआ छै. हंस कीला करि नैं रहिआ छै. कमल पर फूल नैं रहिआ छै. पोइणी थरकि नै रहिआ छै. भंवर गुंजारव करि नैं रहिआ छै. पालिरै फेर गरदवाइ उपरि वड़ नै पीपल साख मेल हुइ नै रहिआ छै. ऊपरि वड़ा नैं पीपरांरी घटा वंधिजिनें रही छै. नैं तलाव नैं ते छायारी हांस तरस माणएनूं हजार असवारांसूं राज नैं आइ पागड़ा छाडिया छै. होलिमें जिहाजां पाथरीजै छै. पंचरंग वादल होइ तिण भांति राग रंगरी विछाइत चांदणी कीजै छै. भांति भांतिरा दुलीचा गिलमा ढाळीजै छै. फूलवाड़ीरो वणाव वणि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति मुखमली जरवाफ्ती, मखतूल, रेसमरी कलावतू जरकस लपेटिआ लूंवा समेत गादी तकिआ विराजमान कीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति बरछियारो चकारौ उतरिआै छै सो किण भातिरी बरछी जिके पाच पाच, सात सात ताकडिआरा मणगाजा सेल उवा बरिआ मारा हाथारा, सेलारै टेकिया सुतरिआमें सेलारासू उतारि नै उआ हीज वडा नैं पीपलारीआ मासासू नागलिआ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति कमाणारौ चकारौ उतरै छै, सो किण भातिरी कमाण थेट निलाती, सींगरी सिगणीं, तूजी हलका, अठारै टाक चिलैरी तामणहार, मुलताण उतपति, कुरयाण रहति, बारै बारै बरस दरिआवा माहे जेहाजा हेठी चली आयी, चिलैरी ताणी, हुंकार करती, नडे पठाणरी बेटी ज्यू नूहीर करती, इण भातिरी कमाणारौ चकारौ उतरै छै सु उआहीज वडा नैं पीपलारीआ सासासू नागलीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे ढाला अलीनध छूटै छै सु किण भातिरी ढाला सुध गैंडो घणारी मारी वधैं, मुहरतीलौ रग लागै तीर, तरवार, कटारी, बरछीरो दाघो नहीं, मूअररी वातरड़ी लागै तो खडकनै ऊतरै गोली लागै तौ उछल नैं पाछी पडै सोनहीरी फूला नकसी फूला मुखमलरी गाभी घातिया, साथरा हथवासा, वुलगारी हाथा सहित ऊआस राजानारा हाथारी उआहीज वडा नैं पीपलारीआ सासासू नागलिआ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे तरकसारा कुहटाऊ बीड़िया छै सो किण भातिरा तरकस कदील, जिके मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैंण कपडरी गोलीसू फाठी, कलावूत नीसरी साठी, गिरमरी नीपनी, कावड़े गजवलरा भल, कार्कैवर मीध पर पखारै दातरै धडारै घणैं पचरग पाट माहे झिमकिआ थका घणैं मुखमल नैं घणैं दातमा गरकाव कीआ थका, ऱ्या राजावारी कडिआरा उआहीज वडा पीपलारी सासासू नागलीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे तरवारियारा करमसार छूटै छै तरवारियारा माज खुलै छै सु किण भातरी तरवार थेट सिरोहीरी, सातरी, दाणादार, मिआन घातिया निआगुले वाढे मेरिआ मिआनसूं काढि नै घासमे नाखी हुअे तो पाणीरै भाळैं निनावर ठूंक मारै छछोही वाल नागणी चिलकै आणैं कालीरी जीभ हालै, तिण भातिरी आवेर, जेसलमेर, मागानेर, महेवारी त्रीजणी हुवै तिण भातिरी घणैं मुखमल नैं घणी सोनै रूपै माहे गरकाव करी थकी, इण भातरी तरवार, घणै वकडे गोनीअे मानरमा लपटी थकी तहनाळ, मुहनाळ, कड़ी, कुरसी समेत नक्सी मंढि उआ राजानारै हाथरी उआ हीज वडा नैं पीपलारी सासासू नागलीजै छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति कटारी किण भातिरी कुनारचषी, कुनारगामी,

जमदाढ़ सोनहरी नकसी जड़ाव सांतरी, घणैं मुखमल नैं घणैं कनीफैं मांहे गरकाव कीधी थकी, त्र्यां राजानांरी कड़ियांरी इण भांतिरी कटारी वीड़ी वटवै समेत ए जड़ी पगांमूं लपेट नैं उग्रांहीज ढालांरी आंचांमां राखीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अतरा मांहे वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. सो किण भांतिरा वागां श्री साफ, भैरव चौनार हजारी, गंगाजल खासा वामता इण भांति वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. कड़िग्रां लोल लीजै छै, वीजणैं वाउ ढोळीजै छै, घोड़ां वाउा कीजै छै. अैराकी टहलावीजै. चौरंगा सोगठांरी खाट खड़पड़ि नैं रही छै वे पहरां घमहमि नैं रहिग्रो छै. राजेसरां, राइजादां, आलीजां, जुवानां, मलूकां, कुग्ररांरा माथनूं कल्हारीरौ होको फिरै छै. हुकम हुग्रौ छै कल्हारी. हो ठाकुरे कल्हारी. सो किण भांतिरी कल्हारी तेलणरी वाड़ीरो कमल, इकत्रीसमी तारारौ तजारौ, कोपरारै दलिगरीरैं वढ़ हाथां छूटो, पांणीमां पड़ै तौ गलि नैं जावै. घणैं भीमसैनी कपूर वासीग्रा पांणीमूं केहरी कल्हारी खासां दोवड़ां छांणीजै छै. ऊजळा रूपौटा उलटीजै छै. ऊजळा खवास पासेवान हाजिर लीग्रां खड़ा छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति इनरा मांहेरा इतनांरा माथनां अमल कराड़ीजै छै. काळौ कंदलीवाढ़ीजै छै. भूरा मेवाती आरोड़ी अमल आगराई मिसरी अहि फीण अनै वासंग नागरै मुंहड़ैरा झाग हुग्रै तिण भांतिरौ नेस मींबोड़ा भंज किया, आमिरी वढ़ कीग्रां थकां, पांच पांच, दस दस सेर देवगिरिग्रां थालिग्रांमां वानिग्रां थकां फिरीजै छै. जो किणी ठाकुररी हांस तरस हुग्रै छै, तिणनूं अमल आरोगाड़ीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामती धूंधलोतजारौ, वाधलोतजारौ, पांच पांच सेर, दस दस सेर कोरा कूंढामां घातीग्रां थकां सांदरा प्रांचारा जुवान मचकावै छै. पवनरी मारी सिकड़ीगै नहीं. आं लारै अगरि आवै. आंगूठारै अगरि आयां निलाड़रौ तिलक लै. इण भांतिरो धधलोतजारौ, वांधलोतजारौ सो किणनूंजी पाकां पाकां वरीग्रांमां जोधारां करड़दंता, अजराडलां, खीवरां डाणां दूलाडा कीग्रां लोह घरड़ा लोहाना लोली लेनां काटरै ऊगरै हे करतां पचासे बोलीए. आठे आठे वढेरण खेतरैं विषै पड़ि पड़ि ऊपड़िग्रा. जाहरा पांच पांच हजार वाम पाटा बंधे खाधा तांह रजपूतांनूं अमल कराड़ीजै छै. अमलांरी नीमा दूणी दीजै छै. अमलांरौ तंडल रोपीजै छै. अमलांरा जमाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति केसरिये वागे चंदा चंदा जुग्रांन माहिल वाड़िग्रांरो साथ ऊपड़िग्रां वटारा चुवता पटांरा खासीग्रां वांहारा बोलता कहारां राजांन राजावतरै वेपारैरै वासतै वाकरा मगाड़ीजै छै. ओठी ऊंठे चाड़ीजै छै. सो किण भांतिरा ऊंठ, किण भातिरा हांण, किण भांतिरा डांण, किण भांतिरा पलांण नै किण

भातिरा बखाण, जिके पचाली वहीरा, वालमी नहीरा, वाटली तलीरा, घाटमी नळीरा, जाडा गोडारा, छोटा पीडारा, वटवाजटरा, ससा सेरिआ बगलारा, चाकमे ईडररा, भाथरे पूछरा, वलिमे रूअरा, नवहथी भोकरा,नाथिमे कधरा,छत्रधारी माथैरा, कोरिमे कानरा, साइमें वानरा, तनिमा होठारा, कसतूरिआ पटारा, भमण मथा सालीओं सिंह ज्यों सारस करता सींघोडा सा, कूटा काढिआ, भूखे मयद ज्यों हुकार करता, मन वहता, हाथी ज्यों जोहा खाता, भाद्रवैरी गाज ज्यों आवाज करता, साठीकरे भमण ज्यू चसलका करता, भागे गाडे ज्यों यठठाट करता, आगले गलग नासता खोटहडीओंरा गोओंरा भूठे कूओंरा कलसिमा कपोलारा, कमाल धडे चडीआ, कडे नाथमा येट आडेगले सारीरा गिरवरा पहाडारा, भगरा वनसपती सीमरा, पारखडा प्रतनाली मकलातमे उढू लपेटिआ थका, पीतलरा पागडा, फलीभार मोल घालिआ थका, घणी पीतल नैं घणी दात माहे गरकाव हुआ थका, रेममी पटाटा, सानरा डरटा, तगे अग भीडिआ थका, इण भातिरा सो ऊठा ऊपर सो पलाणा मडिआ छै घडिआ ओजनरा जायणहार, धरतीरा करवत जाणे जलरा जेहाज डूबाजमाज छेडिआ छै ऊठीओ चडि वाग ठाई छै ओठी जाए एवडि पहुँता छै वानरा पकडीजै छै सो किण भातिरा वानरा जिके कडकनी साथरा, जडकनी नलीरा,माहरे सादरा, मानलाग पेटरा, माहि थोर काचररा, अरडणहार, घणै कूभट नैं बावलीरी टीसीआरा त्राडणहार, सिरिरिरा मालणहार, फिरणीओंरा वैमणहार, वालखसी बोनडा, निसैं बोकडा, रवारडे खील हरीरा चारीओडा, सो ऊठा निसे बोनडा मसकारी भातिमों लिडाइ नैं घानिआ छै ओठीण चडि नैं वाग उपाडिया छैं ओठिण आणि राजानसूं मुजरा गुदराया छैं राजरू आण हाजर हुआ छै, रायतालान् कहिओ छै ठाकरे राजरूआ नें ठरका करो तिके रावताला घणी केसर नैं घणै क्रसनागर अन्तर माघे मांह गरकाव हुआ थका न्आ सीरोहीआ राजरू वीमोडीने छै नानरा फूलधारा मुहे निरोलीजै छै नानरा उधेडीनै छै ताह राजरूआ उधेडिआरो वासूण्क नवाण ननानरी हाट नास्तेरा थानरूरी बरकी, पाजी ओंरूरा गोटा, गुजराती कागलरा पाठ, इण भातिरा राजरू नीसरिया छैं भीतर नाडिआ दुसनाकान् सूळारा हुकम हुआ छै तिके सूळा कीजै छै।

तठा उपरांत करि नैं राजान सिलामति नाकरा नैं सूअरारे सान्रा मूळा जोळा जोळा हुआे छे सो किण भातिरा मूळा पेटिमारा खालिमार, अतर वेढिआरा ऊपर चेढरा, फालिजैरा, पेटालिनैरा, इण भातिरा सूअरा वाकरारा मूळा रजनरा मारिया नणे सुरहे घीरा भारिआ, आडीआ, पोटलिआ ऊपरि भरराट करि नैं रहिआ छै सातमें पाताल वामग नागरे माथे टपूकडा खाइ नैं रहिआ छै खारी सौरमरी वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरगसूं हेठम नैं उतरे देवासुरारा विवाण हिलोरव खाइ नैं रहिआ छै।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति राजान राजावतरे वेपारह वास्तै भागि

मंगाड़ीजै छै. तिका किण भांतिरी भांग सुखकाकापुरणि वासिंग नाग माथैरी नीपनी, सिघरी गुफा मांहे नीपनी, थोहररै विड़ैरी, भाखररै खुड़ैरी, सूअरी पांख, परड़री आंख, रोज मारि, स्रिघ मारि, भमर मारि, लटिआली, वापरी खाधी वेटैनां आवै, काकैरी खाधी भत्रीजैनां आवै, असवाररी खाधी प्यादौ छकै, इण भांतिरी भांग मंगाड़ीजै छै. मकराणैरै पखाणरै कूंडे घातीआं, माल कांगणीरा गोटासूं वांटीजै छै. सांवरा प्राचारां जुवांन घोटै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. सो किण भांतिरी मेलवणी लंवग, डोडा, जायफल, जावंत्री, नागकेसर, तज, तमाल पत्र, सींगी, मुहरा, धतूरो, भूटटी, एकखांन, इहमदावादी खांन, हाथा छूटो रायागणमैं पड़ै तौ सात सात टुकड़ा होइ जावै इण भांतिरौ वत्रीसौ काढ़ीजै छै. इण भांतिरी मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. कंसूभैरी वास्तै मिसरी कोरा माटा मंगळीजै छै. कसूंवौ खासा पटोळां छांणीजै छै. कसूंवौ ऊजळां रूपोटां उळजै छै. कसूंवौ ऊचीआं विलगिणिआं वारीजै छै. कसूंवौ रातां ओछाड़ां ओछाड़ीजै छै. कसूंवै नैं हुसनाक पवन हांकै छै. कसूंवैरौ पांणिगो मंडिओ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति गोळी, चूरण, आसण, कवळ, कुटी, नागासिणी, विरंच, मुफर, तांवेसर, कामेसर, मदन कामेसर, जिता मारिआ ओखध फेरीजै छै. जांह ठाकुरांरै हांस तरस हुऔ छै ताहनू कपूर वासिऔ पांणी ऊजळा रूपोटां झालिआं उजळा खवास पासेवांन हाजर लिआं ऊभा छै. इण भांतरा ओखद उआं राजांनरा साथनूं आरोगाड़ीजै छै. कितराइक तौ राजांन कपूरतररा लोचन किआं गिड़भागै मेघ ज्यों विराजमान हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति आटा मेदारी फांटां आणीजै छै. सिवपुरीरा देवजीर चोखा, चांवळ, कपूर सारीखा ऊजळा वीणीजै छै. नागरचालरा नीपनां गोहूं, वजर कठकालिआं मूंछारा. आंवारी सिलाक हुऔ तिण भांतिरा, वारां वारां वरसांरा डाउडांरा कान वीधीजै. इण भांतिरा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ आडिआं जाजमां घातिआं रोळीजै छै. काकरा काढीजै छै. धूंए अंवर धूधलिओ छै. तुरीराउत जीहीं जरै छै. जांगडिआंरी जोड़ी आडिआंर वांज झालिआं थकां हूकलिनै रही छै. वडा दांतारा सिरदारांरा खंभाइची मांहे दूहा गाईजै छै. जस जांगड़ा गवाड़ीजै छै. ढाडिआंरी जोड़ी गजराज पटाभर ज्यों झोकड़ी खाड नैं रही छै, डमिरितीरा झोला दे नैं रही छै. जाणै मातम सररी सुहागण हमामरै झरोवै झापां खाइ नै रही नै च्यार टांक चावळ खाऔ तो सरीर अहार - विकार थाए. गीत, संगीत, तालबंध, म्रदंग, वीणा, सारंगी, तंवूरारा साज लागि नैं रहिआ छै. इण भांतिरी आखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणी

सोलै सिणगार किआ थका कानरा भामर वाजि नै रहिआ छै श्रीमडल राग कलावत घमड राग जमावि नै रहिआ छै छै राग नै छत्रीस रागणी आलापीज रहिआ छै ता राजाना मुहवा आगि पडित, मिश्रा, जोतसी, चारण, भाट बैठा छै छमा मडि नै रहिआ छै कवेसुर कवित्त, गीत, छद, दोहा, गाथा, वात कथी नै रहिआ छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति राजान राजावत घणा अमला किआ थका आगै बरवाणिया तिण भातिरो दारू पिआ छकीअै छकिअै साथसू लागीरी पोत किआ मीलणना पेठा छै नरिआव माहे घड नावा जाधी छै उणि होदरी हया उवा घडनावा ऊपरै सूरती तवाडू आरोगीजै छै गुमानरा कुरला कीजै छै घणीं वामावलीरो वाह लागि नै रहिऔ छै भीर वाट घाट नै पाणी छालीजै छै हौमारै होंकारौ हुइ नै रहिऔ छै पाणी माहे वामावळीरो होरो फटि नै रहिओ छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति मन्नरमि खेलि नै वारै पधारिआ छै कपडा पहरीजै छै वणाव कीजै छै हिलमी जेहाज पाथरीजै छै जिडत गादी तकिआ फेर निराजमान कीजै छै वेयडी, त्रेवडी, चौवडी पात्या जुडी छै सूआर, पड़िहार आडा होआ, लाया कुडछा, झालिआ थका कछि नै रहीआ छै चरू रहहण धाति धाति घीसीजै छै आडीआ डागरा धातिआ चरू रठठाविजै छै ताह चरयारा निहा यारसू पहाडे पडि सादानें रहिआ छै देवगरी थाळ सोनै रूपैरा, सिरदारारा मुहवा आगै मेलीजै छै घणा मालवा पुरी काठा घहूदा बटीजै छै घणा केसया मास रखवैरा भीना थका उधमीजै छै घणा जोजरा रोदा, ऊजला देवजीर जादरा फूल हुवे तिण भातिरा चावल परूसीजै छै मसकारै मुहडै घी नामीजै छै अतरा माहे सोहितै नै मासरा चरू ऊतरिया छै सोळा सोहिता धाधुसी पुलाव चकतालो जलचर मास, थळचर मास, उडणा परिआरा मास, भाति भातिरा जुदा जुदा समार समार नै वणाया छै प्याला माहि परूसीजै छै हाजर कीजै छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दारूरी तृगा लागीसू ओछाडिआ घणौं ठढै पाणीस छाटि छाटि नै वडारी सारासू नागली थकी जूलै छै पननरी हवासू टिप्पा खाइ नै रही छै कोरी गागर माहे वाति घाति ठारीजै छै बतका भरीजै छै ऊजला खवास पासेवान करा वीडा झालिया हाजर खडा ऊभा छै अतरा माहे दारू आय हाजर हुऔ छै।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दारूरौ पाणीगो मटिओ छै सो किण भातिरौ दारू पलटैरी पलटै, पलटैरो अैराक, अैराकरो वैराक, वैराकरो सदली, सदलीरो पदली, पदलीरो वहर, वहररौ जहर, जहररो कटाव, कटावरो नेस, नेमरो जेस, जेमरो माद, मोदरो कमोद, कमोदरो हूल धाहि लागै तो नाहि जागै, मुहडैमे मेल्हिया छाती लीह पड़ै चिगनी भाठीरो तेज पज आमप अरोगीजै छै घणा जडाव नै चिणीरा प्याला फिर नै रहिआ छै इण भातिरो दारू पाणिगो मडिओ छै उणि भातिरो मास, उणि भातिरो

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर जयपुर

सुहितौ, उणि भांतिरा भारतां सूळांरो निकुल कीजै छै. साथ आरोगै छै. गोठि वडे रस आई छै. अरोगि नै चळू कीजै छै. ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, ताड़ां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, संजुगम, मुखवास, मुंहछुण दीजै छै. सु कितरो एक साथ तौ गिड़ भागा मेघरी नांई भांख मारिम्रां कबूतर सा लोचनां घूमि नै रहिया छै. सु कितरा एक तौ राजांन उछक छाक छकतां वकतां थड थड़ता घूमता पड़ता घोडा आया छै घोड़ा आइ हाजर हुआ छै।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति अतरा मांहे वधाईदार दौड़िया छै. आगल महलांरा वणाव हुई नै रहिया छै.सु कहे छै.प्रमांणी पाखांणरा महल सात खणां आमास चुणिआ थका, माळिआ, गोख, भरोखा, जाळी, वंगला, कचवडी, अम्रमानसूं लागि रही छै. औ जाळिआं चिगां ढलि नै रही छै कोडी चूनां कलीरो छोह वंध आरीसो भळकै तिण भांतिरी लागै छै, आरीसैरा महल वणि नै रहिया छै. धमलहरे कोरणी वणी छै. कछ पाचमी नै हींगल तवाकां ऊपर सोनैरी कलस ईंडां भलकि नै रहिया छै. सांभ समै रंग रंगरा वादल दीसै छै, तिण भांतिरा महल आधोफेरे लागि नै रहिया छै. केसरी कुम कुमे महल छटावीजै छै. गुलावरा छिड़काव हुवै छै खस खान गुलाव छटावीजै छै. अगर उखेवीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति जिके रायजादी राज कुंआर छै त्यांरी खवास्यां देहीरी आरासि करै छै. घणां अगर, अरगजा, सूंधारी पीठी ऊगट मंजणां कीजै छै. जळ गुलावसूं चिहुर टपकिआ छै. किण भांतिरा. जांणै मखतूलसूं मोतिआंरी लड़ तूटी अंगोछा धूपणां कीजै छै. खावास्यां फूल दे दे नै चोटी गूंथै छै. फूलमांलू पाटी घूटी घूटी पाड़ै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति नख सिख सूधो सिणगार वखाणीजै छै. वासिगां सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआंरो वणाव वणि नै रहिओ छै. पूनिमचन्द सो मुख सोळै कला संपूरण विराजिओ छै तिलक वीच विंदी भिख नै रही छै. कवांण ज्या वांकी भ्रहां भमर विलसी विराज नै रहिआ छै. म्रिव नैणां त्रिखा भलकां ज्यौ जळवालिआं टोए अणिआलोका जळ ठांसियौ छै सू आसी नासिका वीच वेसर वणी, उजळै पांणी नरमदा मोती प्रोया सू लटकि नै रहिआ छै. विचै लाल मणी भलक नै रही छै. वसत कोकिला सारीखी मधुरी वाणी वोलै. कनां जांणै पड़दै वीण वाजै छै. दाड़िम कुली सा दातां मांही सोनांरी मेखां चमक नै रही छै. लाल प्रवालीसा अधरा रंगि लागि नै रहिऔ छै. पाकै अंब भोर चीटला ज्यौ हिडकी ऊपर चिवुक वणि नै रही छै. आरीसा सारीखा कपोलां जाणै सोनारा तवक विराजिआ छै. केसरिआ अलिकावलि काला नाग ज्यौ चिटुला ज्यौ चिलक नै रही छै. चंदर थपेड़ा ज्यौ काने कुंडल भखि नै रही छै.

गावड जाणैं सरादी सराद उतारी छै कमल नालसी वाहा लाल चूडी वणिश्री छै विचै सोव्रन चूडी विराज रही छै वाजूवध भावी मसतूलसू लटक रहिश्रा छै लाल कमलसा हसत कमल जावक मैंहदीरैं रग लागा थका चोला फली भी श्रागुली गोरैं श्राचैं श्राचीश्रा वणि रही छै छाप मूदडी नवग्रही जडाव वणियौ छै उरस्थल कूभाथ सारीखौ गजमोतीरो हार विराजियौ छै जाणैं मेरगिररा टूका वीच गगारी धारा धसी छै नारगी श्रणहार, सोपारी सा कठोर कुच घाटला तीखा काचू वीच विराजिश्रा छै श्रगिश्रा ऊपरैं फूलारा चौसर पहरिश्रा लाधणिश्रा सिंघरी कटी लक घडे चड रहिश्रौ छै पान सारीखौ पेट पातलौ श्रम्रित सी नाभी कुडली माहि पाणी पीता ढलक्तौ दीसैं छै जाणैं काचरी सीसी माहे गुलाव ढलक्तौ दीसैं छै पेटरी त्रवली जाणैं कामरा महलरी पाहुडी वणी छै कर ले मापीजै तिण भातिरैं भमर लक ऊपरि कटि मेखला वणि नैं रही छै सुराही गलारैं घाटि मभासल पींडी भीणैं गिरीश्रे ऊपरि वाजणी पायलरा घूघरा रमभोळ भणकिश्रा जाणैं कनहसरा वच्चा वकोर करि रहिश्रा छै पगरी राती पींडी त्यालिमी कूनरारी जोभ सारिसी, लाल कमल चरण जावक महिदीरगसू विराज रहिश्रा छै पग श्रगुली राइवेलिरी कळी हीरा सा नख श्रारीसा ज्यौं भलक रहिश्रा छै ऊपरैं श्रणोदपोल पावटा विछिश्रारी वणाव वणि नैं रहिश्रौ छै।

तठा उपरात नरि नैं राजान सिलाभत चढावण्नरी देहरी नरमाई गुलाव फूल, तिल फूल सारीखी हस गमणीरी गज गति लाड गति छै इण भात नख सिख सूधा सोळै सिणगार किया बारै श्राभूखण विराजिया छ जाणैं इन्द्र-लोकरी श्रपछरा, रूपरी रभा, श्रासमानरी ऊतर पड़ी चित्रामरी पूतळी, विधाता हाथसू समारी कामरी वेलि, विरहरी वीज, सुरतरी सिळाव, सोनारी ताव हुश्रे तिण भातिरी सखेली, नख मास माहे ऊलाळी, श्राकासि जाश्रे, चावळरो चौथो गाश्रे, साख्यात पदमणी वालि वालि नैं गाठ दीजै इण भातिरी तूजी, हलका ज्यौं लचक्ती, रतनाळा लोचना, श्रणिश्राळा काजळ सारीजै छै जोहर काचू जडिजै छै भमर लक, भीण लक ऊपरा चालहरा घाघरा वाभिजै छै दखणी चीर श्रोढिजै छै पाटवर नीलवर जरकसीरा वणाव कीजै छै श्राडिश्रा फणिश्रा सुरमली खासा विलाविश्रा थका जाळौरी साठै, खुरासाणी भळरैं मातिश्रे ऊठ सौदागररैं घोडैं चालविश्रै पठाण श्ररडै श्रायैं चींवडिश्रे ऊठै, गाम-धणीरा सा लोचना किश्रा, वालि वालि मोती श्राठविश्रा थका, काळरा नेवर पहरिश्रा, केळिगभ चन्दारी छेडो, रतनारी रासि, श्रधारैरो श्राचीत, श्ररसरी श्रमरी, सरगरी भाप, विरहरो समूह, रूपरो निधान, थाका हसरी टोळी, विसायैरी होळी, घणैं हाट नैं चीरमा लपेटी थकी विराजमान होइ नैं रही छै जाणैं श्रासोजरी पूनमरो चद्रमा सोळै कळा सपूरण उन्ति हुश्रो छै इण भात ऊजळै पतिव्रतरी पाळणहार, ऊजळी सखिश्रारी टोळीसू राजहस राइजादी राजकुश्रारी भरोखैं चढी सारै छै वधाईदार दौडिश्रा छै वधाईदारा श्राड खबर दीधी छै।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत घोड़ा दौड़ीजै छै. राजान राजावत मारू घरै पधारिया छै. चौकि कलल फूटि नै रही छै. मायारा उमराव वहोड़ावीजै छै. कवि राजानां विदा कीजै छै. मायारा सवाम पासेवान हाजर तेड़ीजै छै. गौखें दीवा कीजै छै. महलै दीविग्रां अगरदानिआंरी चहकि लागि नै रही छै. हाथी पगा ढोलिग्रा पाथरीजै छै।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत राजान राजावत महलै पधारिया छै. महलै आइ विराजमान हुआ छै. आगै म्रिगानैणी, अम्रित वैणी कामणी सिणगार सझिया छै. इणियाळा काजळ टांसिया छै. वणाव किया छै. राजानरा मन रावै छै।

दूहा

गुण कामणि छंदो वयण, नमि नमि मंधै नेह।
पीरी कहियौ धण करै, धणरी कामणि अेह॥

अमलांरा रंग-तरंग माणीजै छै. तेजपुंज आस्यपरा प्याला आरोगीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति हमै राजान कामरा भूखिया, लांघणिया सीह ज्यों आपाळि नै रहिया छै. जाणै मदन-मयद पछाड़ीजै छै. काछी जिमपुरी करि नै रहिया छै. विरही वाग ऊपड़ी छै. चौरासी आसणरा भेद कीजै छै. अस्टाग मिलण चुंबण १, अधरपान २, नखदान ३, कुच-मर्दन ४, पुड़पुड़ी ५, चुंहटी ६, चसका ७, मसका, हा जी, ना जी इण भांति कामरी कुहक पड़ि नै रही छै।

तठा उपरांत करि राजान सिलामत रग-महलमे प्रेम-झड़ लागि नै रही छै. सुरतांत-समय हुवौ छै. महलांरी हवा माणीजै. काचुआंरी कस छूटी. मोतियांरी माळ तूटी. जाणै सुखरी लंका लूटी. इण भांत सुख-सेजे पौढिया. राति विहाणी. प्रभात हुवौ छै. रातोका काम-उजागर नैण घुळि नै रहिया छै. कपोले काम सुहागरी छाप लागी छै. खुलि नै रही छै. इण भांत सुख-विलास करतां छै रित वारै मास माणीजै छै।

दूहा

खट रित वारै मास फिरि ज्यौं ज्यौ आवत जाइ।
त्यौ त्यौं वात-वणावरा, दान तरंग सुहाइ॥
.. . .,राज लोक सिणगार।
च्यारे प्रस्तावे चतुर, वणियौ भलौ विचार॥
सुर-नर-नाग निघट्टियां, काळै केहरियां।
जळ पुरियां पाखाण ज्यौं, गल्लां उबरियां॥
वेटै वाप विसारिया, भाई वीसारै।
सूरां पूरां गल्हड़ी, मागिण चीतारै॥